बी०एड०/ B. Ed

भाग– II / Part - II

पन्द्रहवाँ पत्र/ Paper - XV

पाठ्यचर्या में भाषा

Language Across the Curriculum

Nalanda Open University

(A State Open University)

Material Preparation Team

Original Text Written by :

(1) **Mr. Deep Kumar**
Assistant Professor
St. Xavier's College of Education
Digha, Patna-11
(Units – 1, 2, 7, 8, 9, 10)

(2) **Mrs. Anamika Rani**
Assistant Professor
Bharti Shikshak Prashikshen Mahavidyalaya
Sadatpur, Near Sudha Dairy, Muzaffarpur
(Units – 3, 6)

(3) **Dr. Harendra Ray**
Assistant Professor
Turkey Teachers Training College
Muzaffarpur
(Units – 4, 5)

Co-ordinator
Prof. (Dr.) Preeti Sinha
School of Education (Nov).

Published in Dec, 2019

© Nalanda Open University (Estd. 1987)

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any forms by mimeography or any other means without permission in writing from the Nalanda Open University.

Further information regarding other courses of the Nalanda Open University may be obtained from the University Office at 3rd Floor, Biscomaun Bhawan, West Gandhi Maidan, Patna - 800 001.

Printed and Published on behalf of Nalanda Open University, Patna by the Registrar (E), N.O.U.

Printed at : INDIAN ARTS OFFSET, Basement of S.B.I., Mahendru, Ashok Rajpath, Patna-6

बी०एड०/ B. Ed. Part II

पाठ्यचर्या में भाषा

Language Across the Curriculum

विषय - सूची

इकाई 1.	अधिगमकर्त्ता के संदर्भ में विभिन्न भाषा (Varied language contexts of learners)	...	5 – 19
इकाई 2.	गृह भाषा बनाम विद्यालयी भाषा (Home language Vs School language)	...	20 – 31
इकाई 3.	बहुभाषी संदर्भ की समझ (Understanding multilingula Context)	...	32 – 53
इकाई 4.	कक्षा संवाद की प्रकृति तथा भाषा (Nature of Classroom discourse and significance of language)	...	55 – 64
इकाई 5.	संप्रेषण कौशल (Communication Skills)	...	65 – 74
इकाई 6.	विभिन्न विषयों में भाषा (Language across Various Disciplines and Subjects)	...	75 – 86
इकाई 7.	विभिन्न विषयों में पठन (Reading in different content area)	...	88 – 102
इकाई 8.	विभिन्न विषयों में पठन लेखन संबंध (Reading Writing Connection in different content area)	...	103 – 116
इकाई 9.	लेखन के विभिन्न प्रयोजन (Writing for various purpose)	...	117 – 126
इकाई 10.	लेखन के प्रक्रिया (Process of Writing)	...	127 – 136

BLOCK — 1

इकाई *1:* अधिगमकर्त्ता के संदर्भ में विभिन्न भाषा
Unit 1 : Varied language in contexts of learners

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objective)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

1.2 भाषा और इसका महत्त्व (Language and its Importance)

1.3 भिन्न भाषा संबंध (Varied Language Context)

1.4 हिंदी की उपभाषा/बोली (Dialects of HIndi)

1.5 सीखने में प्रथम भाषा का महत्त्व (Significance of the First Language in Learning)

1.6 सारांश (Summary)

1.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- भाषा और इसका महत्त्व से अवगत होंगे
- भिन्न भाषा संबंध को समझेंगे
- हिंदी की उपभाषा/बोली (डायलेक्ट्स) की जानकारी प्राप्त करेंगे
- सीखने में प्रथम भाषा के महत्त्व से अवगत होंगे

उपयुक्त तथ्यों से अवगत करना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

1.1 परिचय (Introduction)

भाषाई वैविध्य का अध्ययन, सामाजिक भाषाशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो सामाजिक कारकों के संदर्भ की आवश्यकता है। भाषाएँ एक स्थान से दूसरे में भिन्न होती हैं, एक सामाजिक समूह से दूसरे में, और एक स्थिति से दूसरे में, और ये इस खण्ड का मुख्य विषय है।

1.2 भाषा और इसका महत्व (Language and its Importance)

भाषा मनुष्य को भगवान का असाधारण और अविश्वसनीय उपहार है। शब्द 'भाषा' लैटिन लैंगुआ से आता है, जिसका अर्थ है 'जीभ'। इसका मूल अर्थ है- ''जीभ से जो साथ उत्पन्न होता है ।'' इसे एक सटीक रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो समय की अवधि में परिपक्व हो जाता है। मारियो पेई कहते हैं ''सभी सृष्टि के लिए अकेले मनुष्य भाषण की शक्ति से संपन्न होता है।''

मनुष्य ही एकमात्र सामाजिक पशु है जिसकी भाषा परिभाषित किए जाने वाले पूर्ववर्ती संकेतों का एक अच्छी तरह से परिभाषित सेट है। यह मनुष्य की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि है जब हम भाषा का उपयोग करते हैं, तो सामान्य तौर पर, यह संज्ञानात्मक संकाय को संदर्भित करता है जो जटिल संचार की प्रणाली को सीखने और आकर्षित करने के लिए शक्ति देता है। भाषा के इस असाधारण प्रतिभा का विकास कब और कैसे हुआ, यह बाहरी तौर पर संदेहास्पद है? प्राचीन काल में जब जीवन शुरू हुआ, मनुष्य ने स्पष्ट रूप से ध्यान देने के लिए कई चीजों और संकेतों का इस्तेमाल किया, चीजों का वर्णन किया और जो वह चाहते उसे प्राप्त करने के लिए उन दिनों के दौरान वही संचार का एकमात्र साधन था। जानवरों और पक्षियों के बीच संचार जन्मजात रहता है, लेकिन मनुष्य ने अपनी मौलिक हानि के परिणाम एक छलांग लगा दी है और शानदार प्रभाव के साथ भाषा का उपयोग करने की क्षमता हासिल की है। विभिन्न संस्कृतियों वाले नवपाषाण युग के पुरुषों ने एक दूसरे के साथ बातचीत शुरू कर दी। अब उन्हें दूसरों के लिए उनके विचारों और विचारों की व्याख्या करने के लिए एक आम भाषा की जरूरत है। इसलिए उन्होंने एक आम संकेत भाषा की खोज की लेकिन मनुष्य अपने स्वभाव से मजबूर हो रहे हैं, संकेत भाषा उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका। वे अपने विचारों या साकेतिक भाषा की खोज की लेकिन मनुष्य अपने स्वभाव से मजबूर हो रहे हैं, संकेत भाषा उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका। वे अपने विचारों या साकेतिक भाषा को कान और दिमाग के लिए सुनने योग्य शब्दों में बदलना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उन शब्दों की तलाश करना शुरू कर दिया जो ध्वनि उत्पन्न कर सके। अंत में, संघर्ष ने ध्वनि के साथ भाषा को जन्म दिया। चूँकि लोग असंख्य संस्कृतियों और क्षेत्रों से संबंधित थे, इसलिए इसने विभिन्न भाषाओं को जन्म दिया। इस प्रकार भाषा एक ''अनाम, सामूहिक और अनजान कला है; हजारो पीढ़ियों की रचनात्मकता का नतीजा। ''यह धीरे-धीरे और अनजाने कई चरणों से विकसित किया गया है।

भाषा एक महत्त्वपूर्ण तंत्र है भाषा का महत्व हमारे रोजमर्रा के जीवन में हर पहलू और व्यवहार

के लिए अपरिहार्य है। हम अपनी भावनाओं और आकांक्षाओं के बारे में लोगों को बताने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं, हम शब्दों, इशारों और आवाज के टोन के साथ कुशलता से संचार करते हैं। भाषा में एक दोस्ती, सांस्कृतिक रिश्ते और आर्थिक संबंधों को भी शामिल किया जाता है। बेंजामिन व्हार्फ ने भाषा के महत्त्व पर जोर दिया है कि ''भाषा सोच और भावनाओं को आकार देती है, वास्तविकता की धारणा को निर्धारित करती है'' जॉन स्टुअर्ट ने ठीक कहा है कि ''भाषा मन की रोशनी है'' इस प्रकार भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है जो मानव सभ्यता को सुदृढ़ और निरंतर बना देती है। जबकि अपने आदर्श रूप में भाषा भाषण के व्यापक संकाय के लिए संगठित होती है, इसकी विस्तृत बारीकियों में यह एक सटीक प्रणाली और एक विशिष्ट समूह या लोगों के समुदाय द्वारा साझा सम्मेलनों का एक सेट है, जिससे उन्हें विभिन्न व्यक्तिगत, सामाजिक और विद्वानों के स्तर पर बातचीत की सुविधा मिलती है। इसलिए भाषा, मनमानी मुखर प्रतीकों की एक प्रणाली है यह सामाजिक पहचान के मौखिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले समुदाय के विचारों, धारणाओं, भावनाओं और मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए एक वाहन है। मानवविज्ञानी एक सामाजिक समूह के सदस्यों के बीच एक बातचीत के रूप में सांस्कृतिक व्यवहार, समाजशास्त्रियों के रूप में भाषा को संबोधित करते हैं। साहित्य के छात्र भाषा को मानवीय अनुभवों की व्याख्या के साधन के रूप में रचनात्मक साधनों और दार्शनिकों के रूप में देखते हैं। चोम्स्की, जो कि भाषाविद है उनकी पुस्तक में से एक ''भाषा पर प्रतिबिंब'', ''विचार में जानकार'' की सीमा निर्धारित करने का प्रयास करता है। परिणामस्वरूप, भाषा की अभिव्यक्तियाँ व्यावहारिक रूप से विज्ञान के एक दर्शन में बदल गईं।

पहली भाषा जो हम सीखते हैं वह हमारी मातृभाषा है जो हमारी पहचान के सबसे बुनियादी भागों में सक एक है। यदि हम अपनी मातृभाषा खो देते हैं तो हम अपने आप का एक हिस्सा खो देंगे लेकिन यह आवश्यक है कि हमारी मातृभाषा के अतिरिक्त हम अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करें जो बदले में हमें अन्य लोगों और संस्कृति के बारे में जानने में मदद करेंगे। किसी अन्य भाषा का यह ज्ञान हमें दोस्ती, सांस्कृतिक संबंधों और आर्थिक संबंधों को भी बनाने में मदद करेगा। जैसा कि एडवर्ड सैपिर ने कहा, ''आम भाषण के मात्र तथ्य उन लोगों की सामाजिक एकता का विशेष रूप से शक्तिशाली प्रतीक है जो भाषा बोलते हैं।'' संक्षेप में बोलने वाली भाषा की शिक्षा सांस्कृतिक सहानुभूति और रिश्तेदारी की भावना को बढ़ाती है।

- अब से मैं एक भाषा को वाक्यों के एक सेट (परिमित या अनंत) होने पर विचार करूंगा, प्रत्येक परिधि लंबाई में और एक सीमित तत्वों के सेट से। **नीम चौमस्की**
- भाषा एक ऐसा व्यवहार है जो शरीर के अंगों का उपयोग करती है : मुखर तंत्र और मौखिक भाषा के लिए श्रवण प्रणाली; हाथनुमा उपकरण और साइन भाषा के लिए विजुअल सिस्टम। ऐसे शरीर के अंगों को उनके कार्य के लिए मस्तिष्क के अलावा किसी और के द्वासरा नियंत्रित नहीं किया जाता है।'' **फ्रेड सीसी पेंग**

- ''हम ध्वनि या प्रतीकों का उपयोग करके संचार की एक प्रणाली के रूप में भाषा को परिभाषित कर सकते हैं जो हमें अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने में सक्षम बनाता है।'' **ई. ब्रूस गोल्डस्टीन**

1.3 भिन्न भाषा सम्बन्ध (Varied Language Context)

संदर्भ कुछ भी नहीं बस भाषा का उपयोग है। दुरन्ती और गुडविन परिभाषित करते हैं कि, ''इस घटना के चारों ओर एक फ्रेम और इसके उचित व्याख्या के लिए संसाधन प्रदान करता है। यह इस प्रकार एक सापेक्षिक अवधारणा है, केवल कुछ घटना के संबंध में परिभाषित, स्वतंत्र रूप से नहीं वास्तव में, शब्द का संदर्भ लैटिन शब्द 'संदर्भ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है, 'एक साथ जुड़ना'। इस प्रकार इस शब्द को फोकल घटना और कार्रवाई के क्षेत्र में शामिल होने के रूप में व्याख्या की जा सकती है, जिसके भीतर ईवेंट एम्बेडेड है। भाषा विज्ञान, भाषा विज्ञान, समाजशास्त्र और नृविज्ञान के संदर्भ में उन चीजों या संस्थाओं को संदर्भित करता है जो इन विषयों में किसी तरह का ध्यान केंद्रित करते हैं, आमतौर पर एक मुख्य घटना होती है।

शाब्दिक अर्थ भाषा का एकमात्र उद्देश्य नहीं है, लेकिन सामाजिक संदर्भ में स्थित है और व्याख्या किया है। विभिन्न भाषा संदर्भ सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दुनिया है जिसमें एक भाषण घटना के प्रतिभागियों को एक निश्चित क्षण पर बातचीत होती है। दूसरे शब्दों में, संदर्भ में सेटिंग, प्रतिभागियों, भाषा विचारधारा, गतिविधि प्रकार और अनुक्रमिक संगठन शामिल हैं। भाषाएँ एक स्थान से एक दूसरे से भिन्न होती हैं, एक सामाजिक समूह से दूसरे में, और एक स्थिति से दूसरे में। विभिन्न भाषाई संदर्भों में विभिन्न अर्थों को ले जाने की क्षमता होती है।

1.3.1 प्रसंग (Context)

संदर्भ के मुद्दे को उठाया जाता है, तो आम तौर पर यह तर्क दिया जाता है कि मुख्य घटना ठीक से समझा नहीं जा सकता है, उचित ढंग से व्याख्या की जाती है, या प्रासंगिक ढंग में वर्णित है, जब तक कि घटना को अन्य घटनाओं से परे नहीं दिखलाता (उदाहरण के लिए सांस्कृतिक विन्यास, भाषण स्थिति, साझा पृष्ठभूमि धारणाएँ) जिसमें घटना को अंतर्निहित किया गया है, या वैकल्पिक रूप से बात की विशेषताएँ स्वयं के बाद के अंत:क्रिया के संगठन के लिए प्रासंगिक पृष्ठभूमि को लागू करते हैं। उदाहरण के लिए, भाषाई अभिव्यक्ति यहाँ वक्ता के करीब एक जगह को इंगित करती है, जो कि यहाँ का शाब्दिक अर्थ है। जब यह अर्थ संदर्भ में उपयोग किया जाता है, तो भाषा का अनुक्रमिक कार्य कई सामाजिक अर्थों को पैदा कर सकता है। अगर वक्ता कमरे में मेज से खड़ा है, तो उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जहाँ

तालिका स्थित है। यदि वक्ता दरवाजे से खड़ा है, तो यहाँ उस क्षेत्र को दर्शाता है जहाँ द्वार स्थित है। अगर स्पीकर उसकी तरफ से खिड़की को इंगित करता है और 'यहाँ कहता है, तो यह अभिव्यक्ति खिड़की को संदर्भित करता है। प्रत्येक उदाहरण में, भाषाई अभिव्यक्ति यहाँ तत्काल स्थिति में एक अलग ऑब्जेक्ट अनुक्रमित करती है। भाषा के इस कार्य को हिंदी-संकेतावाचक समारोह के रूप में संदर्भित किया गया है, और दीक्सिस का एक उत्कृष्ट उदाहरण व्यक्ति, स्थान और समय है। इंडेक्सिकल फंक्शन, हालांकि, व्यक्ति, स्थान और समय डेक्सिस तक सीमित नहीं है। उदाहरण के लिए, 'क्या आप इसे मेरे लिए रख सकते हैं? आम तौर पर सामान्य बातचीत में अप्रत्यक्ष अनुरोध के रूप में समझा जाता है लेकिन एक नैदानिक सेटिंग में उसे अपने हाथ का उपयोग करने की क्षमता (विशेष रूप से, अगर मरीज को एक नर्स या डॉक्टर द्वारा यह सवाल पूछा जाता है।) इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भाषाई रूप का अर्थ सामाजिक संदर्भ से संबंधित है।

सामाजिक स्थिति, लिंग, आयु, जातीयता, भौगोलिक स्थान, पेशे और वक्ता की आर्थिक पृष्ठभूमि (होम्स, 2001) जैसे भाषण में संदर्भों की असीम किस्में हो सकती हैं। सामाजिक श्रेणी या/और समूह का उपयोग किस भाषा में किया जाता है इसके संबंध में, लेहमन (1976 : 275) ने लिखा है कि ''युवा वक्ताओं के अपने विशेष भाषण पैटर्न हैं, और कई समाजों में, विभिन्न सामाजिक वर्गों के भाषण पैटर्नों के बीच काफी अंतर हैं।'' तदनुसार, एक स्वर को अलग-अलग तरीकों से उच्चारण किया जा सकता है और इसलिए, कोई भी दो लोग बिल्कुल समान नहीं बोलते (प्रतिकिन एट, 2003)। लेकिन, भाषण के कुछ विशेषताओं को स्पीकर के समूह द्वारा साझा किया जाता है और दूसरे से एक समूह को अलग करने का एक साधन बन जाता है ऐसे मामले में, भाषण सामाजिक समूह सदस्यता का एक स्पष्ट संकेतक है। इस प्रकार, किसी व्यक्ति के भाषण से, एक स्पीकर के लिंग, सामाजिक-आर्थिक, पेशेवर या शैक्षिक पृष्ठभूमि को बता देना संभव है। (टुडगिल, 2001)।

भाषा विज्ञान में, भाषाई संदर्भ या मौखिक संदर्भ अभिव्यक्ति (शब्द, वाक्य या भाषण अधिनियम) के आसपास के पाठ या भाषण के संदर्भ में हैं मौखिक संदर्भ एक अभिव्यक्ति को समझने के तरीके को प्रभावित करता है; इसलिए संदर्भ के बाहर लोगों को उद्धृत न करने का आदर्श। चूँकि बहुत समकालीन भाषा विज्ञान ग्रंथों, प्रवचनों या वार्तालापों को विश्लेषण के उद्देश्य के रूप में लेता है, मौखिक संदर्भों का आधुनिक अध्ययन, प्रवचन ढांचे और उनके पारस्परिक संबंधों के विश्लेषण के संदर्भ में होता है, उदाहरण के लिए, वाक्य के बीच संबंधों का संबंध।

परंपरागत रूप से, समाजशास्त्र में, सामाजिक संदर्भों की परिभाषा को परिभाषित किया गया है जैसे कि सामाजिक, सामाजिक वर्ग, लिंग, आयु या जाति के रूप में। हाल ही में, सामाजिक संदर्भों को परिभाषित किया जाता है कि सामाजिक पहचान के संदर्भ में परिभाषित किया जा सकता है और पाठ में प्रदर्शित किया जाता है और भाषा उपयोगकर्ताओं द्वारा बात की जाती है।

1.3.2 बोली (Dialects)

यदि आप पटना से भागलपुर तक ट्रेन से यात्रा करते हैं, जिसमें लगभग चार घंटे लगते हैं, तो आप जिन चीजों का ध्यान रखेंगे उनमें से एक यह है कि दो शहरों की भाषा अलग दिखती है। वही सच होगा यदि आप लंदन और बर्मिधम के बीच या पेरिस और ल्यों के बीच की ट्रेन लेते हैं। उसी भाषा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों के लोग अलग उच्चारण का उपयोग करते हैं, अक्सर वे अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करते हैं और कभी-कभी अलग-अलग व्याकरण संबंधी संरचना भी करते हैं। कई देशों में ऐसे मतभेदों से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को बोलबाला कहा जाता है।

भाषा मुखर ध्वनियों के माध्यम से विचार की अभिव्यक्ति का तरीका है। दूसरी ओर, एक बोली दुनिया के कुछ हिस्सों में बोली जाने वाली किसी भी भाषा का एक रूप है। एक बोली एक भाषा का एक सबसेट है भाषाविद् अक्सर यह मानते हैं कि बोलियाँ अक्सर मुख्य या सिद्धांत भाषाओं के अशुद्ध रूप हैं।

बच्चों को सामान्य रूप से सामाजिक समूह के भीतर लाया जाता है, जिसमें उनके माता-पिता और तत्काल परिवार का मंडल होता है, और वे उस समूह की बोली और संचार शैली सीखते हैं, साथ ही बाकी सबकल्चर और व्यवहार के गुण और व्यवहार की विशेषता है जो इसके लक्षण हैं। एक बोली एक भाषा का क्षेत्रीय, सामाजिक या जातीय भिन्नता है। यह उस भाषा का एक रूप है जिसे लोगों के किसी विशेष समूह में बोली जाती है। यह भाषा का एक प्रांतीय, ग्रामीण या सामाजिक रूप से अलग किस्म है जो भाषा की मानक विविधता से भिन्न है, विशेषकर जब घटिया मानी जाती है।

1.3.3 बोली की परिभाषा (Definition of Dialects)

एक बोली एक जैसी भाषा का एक रूप है जो किसी विशेष क्षेत्र या समूह के लिए विशिष्ट है।

यह एक भाषा की विविधता है जो एक ऐसी भाषा की अन्य किस्मों से अलग होती है, जो एक भाषण समुदाय द्वारा बोली जाती है, जिसे व्यवस्थित सुविधाओं (उदा,) की विशेषता है जो उस समान भाषा की अन्य किस्मों से भिन्न है। सभी भाषाओं में बोलियाँ शामिल होती हैं इसलिए, हर कोई कम से कम एक बोली बोलती है बोलीभेद आमतौर पर मामूली होती हैं और भाषा की बोलियाँ आम तौर पर पारस्परिक रूप से सुगम होती हैं बोलियों भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक रूप से निर्धारित हैं बोली भिन्नता अंतर की बात है, एक घाटा नहीं। गैर-मानक बोलियाँ ''स्व-निहित'' प्रणालियाँ हैं, उनके नियमित रूप से ध्वनिक और वाक्यविन्यास नियम हैं। अंग्रेजी के गैर-मानक बोलियाँ एसई के करीबी रिश्तेदार हैं, कभी-कभी एसई के पुराने रूपों को दर्शाती हैं।

भाषा बनाम बोली

1. मैं बोली नहीं बोलता हूँ

2. हकीकत में, अंग्रेजी के सभी वक्ताओं अपनी बोली बोलते हैं, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना।

अधिकांश वक्ता विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की बोलियों या शैलियों का उपयोग करते हैं

- लिखना
- संवादात्मक भाषण (दोस्तों, परिवार के साथ)
- औपचारिक भाषण (अजनबियों के साथ, प्राधिकरण के आंकड़े)

बोली के प्रकार

1. क्षेत्रीय बोली
2. सामाजिक बोली

सामाजिक बोलियाँ

व्यवसाय, जैसे निवास स्थान, शिक्षा, आयु, नस्लीय या जातीय मूल, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, जाति, धर्म से जुड़े लोगों के बारे में बात करते हैं। सामाजिक बोली सामाजिक समूहों से उत्पन्न होती है और विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है; सामाजिक वर्ग, धर्म और जातीयता।

सामाजिक बोलियाँ : उदाहरण उदा।

1. भारत में जाति अक्सर निर्धारित करता है कि किस भाषा की एक स्पीकर उपयोग करते हैं।
2. बगदाद में ईसाई, मुस्लिम और यहूदी विभिन्न प्रकार की अरबी भाषा बोलते हैं।
3. अमेरिका में एक जातीय समूह, उदा। NY में Labov का काम
4. यहूदी और इतालवी जातीयता के वक्ताओं मानक किस्म या काले अंग्रेजी से भेदभाव करते हैं।

बहुत विशिष्ट स्थानीय किस्मों → क्षेत्रीय बोली

1. यह उच्चारण में मतभेद, शब्दों के चुनाव और रूपों में, और वाक्य रचना में, परिलक्षित होता है।
2. एक बोली निरंतरता है।
3. विभिन्न दबाव-राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक-कठोर मौजूदा राष्ट्रीय सीमाओं की सेवा करते हैं, जो कि राज्यों के बीच भाषाई मतभेद बनाए।
4. विभिन्न भाषाई सुविधाओं के वितरण को योजनाबद्ध करने के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

सभी भाषाएँ समय के साथ बदलती हैं और जगह और सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अलग-अलग होती हैं। जिस तरह से हम बोलते हैं, वह कई कारकों से प्रभावित होता है-हमारे बुजुर्गों की जड़ें, हमारी

सामाजिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि, हमारे कामकाजी वातावरण, हमारे मित्र और हमारी अपनी पहचान की भावना। जैसा कि हम देश भर में जाते हैं, हम बदलते परिदृश्य और वास्तुकला का अनुभव करते हैं। उसी समय, हम एक धीरे-धीरे बदलाव को देखते हैं-जो सुनाते हैं उपदेशों को तुरंत उस जगह की भावना को समझें जो वे हैं। ये विविधता कहा जाता है।

1.4 हिंदी की उपभाषा/बोली (Dialects of Hindi)

बड़ी संख्या में बोलने वालों ने हिंदी को विश्व में चौथे स्थान पर बना दिया, क्योंकि इसके बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। लगभग पूरे भारत में हिंदी भी कई भारतीयों की दूसरी भाषा के रूप में बोली जाती है और उसने भारत की अन्य भाषाओं को प्रभावित किया है। अपने मूल वक्ताओं की इतनी बड़ी संख्या के कारण, यह सुझाव दिया जाता है कि संयुक्त राष्ट्र की हिंदी आधिकारिक भाषाओं में से एक होना चाहिए। इस संबंध में, भारत सरकार सक्रिय रूप से इस मामले पर काम कर रही है।

हिंदी की कई बोलियाँ हैं जिनमें प्रमुख हिंदी भाषाएँ शामिल हैं जिन्हें उचित हिंदी कहा जाता है। इस पोस्ट में, मैं पोस्ट को सरल समझना चाहता हूँ और आपको केवल हिंदी की प्रमुख बोलियाँ दिखाता हूँ।

हिन्दी की ये प्रमुख बोलियाँ हैं :

1.4.1 ब्रज भाषा (Braj Bhasha)

ब्रज भाषा में दो पद होते हैं ब्रज-एक क्षेत्र और भाषा-भाषा, हिंदी का एक प्रमुख बोली है जो उत्तरप्रदेश राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में, राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग और राज्य के दक्षिणी भाग में बोली जाती है। हरियाणा के इस बोली के बोलने वाले इस क्षेत्र के हैं जो महाभारत के हिंदू महाकाव्यों में ऐतिहासिक रूप से ब्रज (ब्रहज़ को वीराज़ भी कहा जाता है) के रूप में जाना जाता है और हिंदू भगवान, कृष्ण के जन्म स्थान के रूप में माना जाता है। यह बोली भी देहाती ज़बान (देहाती ज़बान, 'देश जीभ') के नाम से भी जाना जाता है और 19वीं शताब्दी से पहले एक प्रमुख बोली थी। साहित्य में योगदान के लिए यह बोली बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि मध्यकालीन काल में भक्ति काल (भक्ति काल 1975 से 1775 तक) के रूप में हिंदी साहित्य के अधिकांश भाग थे। हिंदी के प्रसिद्ध कवियों जैसे सूरदास, भाई गुरदास और अमीर खुसरों ने ब्रज भाषा में लिखा था।

1.4.2 खड़ी बोली (Khari Boli)

खरी बोली में दो शब्द होते हैं खारी-स्थायी, बोली-बोली जाने वाली भाषा, हिंदी की महत्वपूर्ण बोली है जो दिल्ली में बोली जाती हैं, उत्तर प्रदेश राज्य में इसके आस-पास के क्षेत्र के साथ-साथ उत्तराखंड राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में भी बोली जाती है। वर्तमान में, खरी बोली ने अपनी जगह हिंदी के प्रमुख मानक

बोली के रूप में ली है। स्कूलों के अनुसार, यह 900–1200 सीई की अवधि के बीच विकसित होना माना जाता है। 18वीं शताब्दी के बाद हिंदी साहित्य खड़ी बोली में बना है।

1.4.3 हरियाणावी (Haryanvi)

हरियाणवी हिंदी की एक और प्रमुख बोली है जो मानक हिंदी के समान है। यह उत्तर हरियाणा और दिल्ली में व्यापक रूप से बोली जाती है। ऐसा लगता है, इस बोली को राज्य से अपना नाम मिला है और यह शब्द हरियाणा के लोगों के लिए भी उपयोग किया जाता है। इस बोली को हिंदी की दूसरी बोली के साथ कुछ समानता मिलती है जैसे ब्रज भाषा।

1.4.4 बुन्देली (Bundeli)

बुन्देली हिंदी की एक बोली है जो मध्य प्रदेश और साथ ही उत्तर प्रदेश के दक्षिणी हिस्सों में बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है। बुंदेल खंड और ब्रज भाषा को ब्रज भाषा के साथ समानता मिलती है।

1.4.5 अवधी (Awadhi)

अवधी, जो अभिधी, आबादी, अबोही, अंबोड़ी, अवधिन बैसवरी के वैकल्पिक नामों के साथ भी जाना जाता है, हिंदी की एक और बोली है जो उत्तर प्रदेश के अवध (ऐतिहासिक) क्षेत्र में बोली जाती है और इसलिए ये अवधी कहलाता है जब अवध है। यह उत्तरवर्षा में भी बोली जाती है और बिहार, मध्यप्रदेश, दिल्ली और पड़ोसी देश, नेपाल के राज्यों में भी इसे बोलने वाले मिल जाते हैं। फिजी देश में बोली जाने वाली हिंदी में अवधियों से प्रभावित है।

1.4.6 बघेली या बाघेली (Bagheli)

बाघेरी हिंदी की एक बोली है जो मध्य भारत के बाघेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है। बघेली बोलने वाले मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के छह जिलों में विशेष रूप से रीवा, सतना, सिधी, शहडोल, उमरिया और अनुपपुर में पाए जाते हैं।

1.4.7 कनौजी (Kannauji)

कनौजी हिंदी की एक बोली है जो कन्नौज राज्य (कन्नौज) राज्य के उत्तर प्रदेश राज्य के कुछ हिस्सों में तथा उसी राज्य के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है। कुछ लोग कन्नौजी को अपनी ही एक अलग भाषा मानते हैं जो हिंदी से काफी निकटता से संबंधित है। कन्नौजी में भी इसकी दो बोलियाँ हैं जैसे तिरहारी और ट्रांसशिनल कानौजी, जो मानक कानौजी और अवधियों के बीच है। कुल मिलाकर, यह लगभग 6 मिलियन देशी वक्ताओं को बढ़ा देता है।

1.4.8 छत्तीसगढ़ी (Chhattishgarhi)

छत्तीसगढ़ी हिंदी की एक बोली है जो भारतीय राज्य छत्तीसगढ़ में भी आधिकारिक भाषा है और मध्यप्रदेश, उड़ीसा और झारखंड के निकटवर्ती क्षेत्रों में भी बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी के क्षेत्र को प्राचीन काल में दक्सिन कोशल भी कहा जाता है और इसलिए छत्तीसगढ़ी का शास्त्रीय नाम ऐतिहासिक महत्व के साथ कोसाली या दक्षिण कोसजी है। इसमें लगभग 17.5 लाख वक्ता है।

1.4.9 मानक भाषाएँ (Standard Languages)

मानक भाषा तब उत्पन्न होती है जब एक विशिष्ट बोली लिखित रूप में उपयोग की जाती है, सामान्य रूप से बोलचाल की तुलना में अधिक व्यापक क्षेत्र में। जिस तरीके से यह भाषा उपयोग की जाती है-जैसे-प्रशासनिक मामलों, साहित्य और आर्थिक जीवन में भाषाई विविधता के न्यूनतम को आगे बढ़ाता है। समाज के सबसे धनी, सबसे शक्तिशाली और सबसे उच्च शिक्षित सदस्यों के भाषण से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा दूसरों के लिए उनकी भाषा को एक मॉडल में बदल देती है; यह भाषाई रूपों को विचलित करने के उन्मूलन में भी योगदान देता है शब्दकोशों और व्याकरण भाषाई मानकों को स्थिर करने में सहायता करते हैं, जैसे कि विद्वानों की संस्थाओं की गतिविधियाँ और, कभी-कभी, सरकारी हस्तक्षेप। एक देश की मानक भाषा के लिए आधार की बोली अक्सर राजधानी और इसके परिदृश्य की मूल भाषा है-फ्रांस में, पेरिस; इंग्लैंड, लंदन में; रूस में, मास्को या आधार एक मजबूत आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र-इटली में हो सकता है, फ्लोरेंस या भाषा कई क्षेत्रीय बोलियों का एक संयोजन हो सकती है, जैसे कि जर्मन और पोलिश यहाँ तक कि एक मानक भाषा जो मूल रूप से एक स्थानीय बोली के परिवर्तनों पर आधारित थी, हालॉकि, अन्य बोलियों के तत्वों ने वर्षों में इसमें घुसपैठ किया। किसी एक भाषाई क्षेत्र में वास्तविक विकास ऐतिहासिक घटनाओं पर निर्भर करता है। कभी-कभी मानक भाषाओं का वितरण भी बोलियों की स्थिति के अनुरूप नहीं हो सकता है। डच और फ्लेमिश बोलियाँ निम्न जर्मन बोलचाल क्षेत्र का एक हिस्सा हैं, जो सभी उत्तरी जर्मनी, साथ ही नीदरलैंड और बेल्जियम का हिस्सा है। द्वितीयक क्षेत्र के एक भाग में, हालांकि, मानक भाषा हाई जर्मन पर आधारित है, और दूसरे भाग में, मानक भाषा डच या फ्लेमिश है, जो संबंधित आबादी की राष्ट्रीयता पर निर्भर करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहाँ स्पष्ट रूप से कोई प्रभावशाली राजनीतिक या सांस्कृतिक केंद्र नहीं है-जैसे लंदन या पेरिस-और जहाँ क्षेत्र बहुत बड़ा है, तथाकथित मानक भाषा उच्चारण, व्याकरण और शब्दावली में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाली क्षेत्रीय विविधताएँ दिखाती है। सभी मानक भाषाएँ किसी भी तरह की अभिव्यक्ति में बोलती हैं, हालांकि कभी-कभी एक विशेष उच्चारण (उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में प्राप्त उच्चारण) अपने साझा सामाजिक या शैक्षणिक मूल के कारण मानक के साथ सबसे निकट से जुड़ा हो सकता है।

अधिकांश विकसित देशों में, अधिकतर आबादी में एक सक्रिय (बोलना, लेखन) या मानक भाषा

के कम से कम निष्क्रिय (समझ) कमांड है। अक्सर ग्रामीण जनसंख्या और असामान्य रूप से शहरी आबादी के निचले सामाजिक स्तर भी नहीं, वास्तव में बीड़ीयैक्टल हैं वे घर पर और मौखिक संपर्कों में मित्रों और परिचितों के साथ अपनी मातृ बोली बोलते हैं, और वे अधिक औपचारिक स्थितियों में मानक भाषा का उपयोग करते हैं। यहाँ तक कि कुछ क्षेत्रों में शिक्षित शहरी आबादी तथाकथित बोलचाल भाषा अनौपचारिक रूप से उपयोग करती है। उदाहरण के लिए, मध्य यूरोप के जर्मन, चेक और स्लोवेन-बोलने वाले क्षेत्रों में, एक मूल रूप से क्षेत्रीय बोली जिसमें से सबसे महत्त्वपूर्ण स्थानीय सुविधाओं का सफाया हो चुका है, बोली जाती है। इस प्रकार की भाषा का उपयोग मनोवैज्ञानिक कारकों द्वारा समर्थित है, जैसे किसी विशिष्ट क्षेत्र के साथ एकजुटता की भावना और अपनी परंपराओं में गर्व या अनौपचारिक व्यवहार से जुड़े आराम की मनोदशा एक मानक भाषा की विशिष्ट विशेषताओं में निम्न में से कई शामिल हैं :

1.4.10 भारत में मानक भाषाएँ (Standard Languages in India)

भारत भाषाओं में समृद्ध है भारत में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती हैं इनमें से कुछ भाषाओं को राष्ट्रीय रूप से स्वीकार किया जाता है जबकि अन्य को उस विशिष्ट क्षेत्र की बोली के रूप में स्वीकार किया जाता है।

भारतीय भाषाओं में चार भाषा परिवार हैं, अर्थात् इंडो-यूरोपियन, द्रविड़ियन, ऑस्टो-एशियाटिक (ऑस्ट्रिया) और सिनी तिब्बती। भारत की अधिकांश जनसंख्या इंडो-यूरोपियन और द्रविड़ियन भाषाओं का उपयोग कर रही है। पहले उत्तर में और बाद में दक्षिण भारत में मुख्य रूप से बोली जाती है। असम और पूर्वी भारत के अन्य हिस्सों में कुछ जातीय समूह आस्ट्रेटिक भाषा बोलते हैं। उत्तरी हिमालय क्षेत्र में और बर्मी सीमा के पास चीन-तिब्बती भाषा बोलती है भाषा या लिपियों के लिखित रूप एक प्राचीन भारतीय लिपि से आते हैं जिन्हें ब्राह्मी कहते हैं।

भारत में आधिकारिक तौर पर 22 मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं लेकिन भारत में लगभग 33 विभिन्न भाषाओं और 2000 बोलियों की पहचान की गई है। आधिकारिक भारतीय भाषाओं हिंदी (लगभग 420 मिलियन वक्ताओं के साथ) और अंग्रेजी हैं। हिंदी, देवनागरी स्क्रिप्ट में, भारत की संघीय सरकार की आधिकारिक भाषा है। अंग्रेजी एक सहयोगी आधिकारिक भाषा है। संस्कृत, भारत की शास्त्रीय भाषा, इंडो-आर्यन भाषा की सर्वोच्च उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करती है। संस्कृत भाषा की शुरूआत की गणना रिग-वैदिक काल से की जा सकती है। यह भारत की सबसे पुरानी साहित्यिक भाषा है, जो 5000 वर्ष से अधिक पुराना है और कई आधुनिक भारतीय भाषाओं का आधार है जिसमें हिंदी और उर्दू शामिल हैं। इसकी शुरूआती बोली के रूप में, वैदिक आर्यों द्वारा बोली जाती है। सभी शास्त्रीय साहित्य और भारतीय महाकाव्य संस्कृत में लिखे गए हैं।

1.5 सीखने में भाषा का महत्व (Significance of the First Language in Learning)

भारत सरकार ने अंग्रेजी को एक सहयोगी आधिकारिक भाषा बनाया इसके पीछे उनका प्रेरणा अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करना और युवा पीढ़ियों के कैरियर की संभावनाओं में सुधार करना था। इस कदम के साथ-साथ, हम बुनियादी शिक्षा में शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी को लागू करने के लिए एक प्रवृत्ति, खासकर निजी स्कूलों को देख रहे हैं।

हालांकि, शोध निष्कर्ष लगातार दिखाते हैं कि शिक्षार्थियों को शुरूआती वर्षों में शिक्षा में अपनी घरेलू भाषा का उपयोग करने से लाभ मिलता है (देर से एक प्राथमिक संक्रमण चरण)। फिर भी, कई विकासशील देश अपने स्कूलों में पढ़ाने के लिए अन्य भाषाओं का उपयोग करते रहे हैं। लेकिन प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग करने से पाठय सामग्री की बेहतर समझ और स्कूल के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण बन जाता है। इसके कई कारण हैं :

सबसे पहले, स्कूल में सीखना शुरू नहीं होता है; सीखना घर की भाषा में घर से शुरू होता है। हालांकि स्कूल की शुरूआत इस सीखने की निरंतरता है, हालांकि यह शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बदलाव भी प्रस्तुत करती है। स्कूल प्रणाली संरचनाएँ और पूर्व निर्धारित पाठयक्रमों की सामग्री और वितरण को नियंत्रित करती है, जहाँ पहले बच्चे अनुभव (एक अनुभवात्मक शिक्षण मोड़) से सीख रहा था।

स्कूल शुरू करने पर, बच्चों को स्वयं एक नए भौतिक वातावरण में मिलते हैं कक्षा नया है, अधिकांश सहपाठी अजनबी हैं, अधिकार का केंद्र (शिक्षक) भी एक अजनबी है, सीखने का संरचित तरीका भी नया है। अगर, इन बातों के अतिरिक्त, इंटरैक्शन की भाषा में अचानक एक बदलाव आया है, तो स्थिति काफी जटिल हो सकती है। दरअसल, यह एक बच्चे की प्रगति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। हालांकि, शिक्षार्थियों की गृह भाषा का उपयोग करके, विद्यालय बच्चों को नए परिवेश को मार्गदर्शन करने और अपने घर पर लाने के अनुभव के साथ स्कूल में सीखने में मदद कर सकते हैं।

दूसरा, शिक्षार्थियों की घरेलू भाषा का उपयोग करके, शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होने की अधिक संभावना है। इंटरैक्टिव शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण-सभी शिक्षाविदों द्वारा अनुशंसित-एक ऐसे वातावरण में पनपता है जहाँ शिक्षार्थियों की शिक्षा की भाषा में पर्याप्त रूप से कुशल हैं। यह शिक्षार्थियों को सुझाव देने, सवाल पूछने, सवालों के जवाब देने और उत्साह के साथ नए ज्ञान का संचार करने की अनुमति देता है। यह शिक्षार्थियों का आत्मविश्वास देता है और उनकी सांस्कृतिक पहचान की पुष्टि करने में मदद करता है इसके बदले में, शिक्षार्थियों को उनके जीवन के लिए स्कूल की प्रासंगिकता को देखने के तरीके पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

लेकिन जब शिक्षार्थियों ने एक ऐसी भाषा में स्कूल शुरू किया है जो अभी भी उनके लिए नया है, तो यह एक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर जाता है और कक्षाओं में प्रवेश और चुप्पी को मजबूत

करता है। यह बदले में, युवा शिक्षार्थियों की स्वतंत्रता और स्वतंत्रता को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता को दबा देता है। यह युवा मन के उत्साह को धीमा कर देता है। उनकी रचनात्मकता को रोकता है और सीखने का अनुभव अप्रिय करता है। जिनमें से सभी सीखने के परिणामों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण लक्ष्य बुनियादी साक्षरता कौशल का विकास है : पढ़ना, लिखना और अंकगणित मूल से, पढ़ने और लिखने के कौशल लिखित रूप में उपयोग किए गए अक्षरों या प्रतीकों के साथ किसी भाषा की आवाजों को संबद्ध करने की क्षमता को कम करते हैं। ये कौशल बोलने और सुनने के मूलभूत और पारस्परिक कौशल पर आधारित हैं। जब शिक्षार्थियों ने उन्हें निर्देश देने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा को समझाया तो वे तेजी से और अधिक सार्थक तरीके से पढ़ने और लेखन कौशल विकसित करते हैं। एक भाषा में पढ़ने और सीखने वालों को लिखना और समझने पर उन्हें बहुत उत्साह होता है जब उन्हें पता चलता है कि वे लिखित ग्रंथों को समझ सकते हैं और अपने वातावरण में लोगों और चीजों के नाम लिख सकते हैं। प्रारंभिक क्रमबद्ध पढ़ाई में शोध से पता चला है कि पढ़ने वाले कौशल को विकसित करने वाले विद्यार्थियों की शुरूआत में शिक्षा में प्रमुख आगाज होता है।

यह भी दिखाया गया है कि शिक्षार्थियों के घर की भाषा में सिखाया जाने वाले कौशल और अवधारणाओं को फिर से पढ़ा जाने की जरूरत नहीं है जब वे दूसरी भाषा में स्थानांतरित हो जाते हैं। सीखने वाला एक व्यक्ति जो एक भाषा में पढ़ने और लिखने के तरीके को एक नई भाषा में तेजी से पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करेगा सीखने वाला पहले से ही जानता है कि पत्र ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्हें केवल एक ही नई सीखने की जरूरत है कि यह कैसे नई भाषा 'ध्वनियाँ' अपने पत्र उसी तरह, शिक्षार्थियों ने स्वचालित रूप से एक भाषा में किसी भाषा को दूसरे भाषा में अधिगम ज्ञान हस्तांतरित कर दिया है जैसे ही उन्होंने नई भाषा में पर्याप्त शब्दावली सीख ली है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी मातृभाषा में शिक्षार्थियों को सिखाते हैं, तो बीज की आवश्यकता होती है ताकि बीज, नमी और उगने की आवश्यकता हो। आपको यह अंग्रेजी में फिर से पढ़ाने की जरूरत नहीं है जब उन्होंने अंग्रेजी में पर्याप्त शब्दावली विकसित की है, तो वे जानकारी का अनुवाद करेंगे। इस प्रकार, ज्ञान और कौशल एक भाषा से दूसरी भाषा में हस्तांतरणीय हैं। शिक्षार्थियों की मातृभाषा में विद्यालय शुरू करने से शिक्षा में देरी नहीं होती है लेकिन औपचारिक शिक्षा में सफलता के लिए आवश्यक कौशल और व्यवहार के तेजी से अधिग्रहण होता है।

विद्यालय की शुरूआत में शिक्षार्थियों की घरेलू भाषा के प्रयोग से शिक्षकों पर बोझ भी कम हो जाती है, विशेषकर जहाँ शिक्षक स्थानीय भाषा को अच्छी तरह से बोलता है (जो बहुभाषी सेटिंग्स में अधिकांश ग्रामीण विद्यालय में मामला है)। अनुसंधान ने यह दिखाया है कि सीखने की स्थिति में जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही शिक्षा की भाषा के गैर-मूल उपयोगकर्ता हैं, शिक्षक शिक्षा के शुरूआती दौर में जितना सीखते हैं, लेकिन जब अध्यापकों और शिक्षार्थियों की गृह भाषा में अध्यापन शुरू होता

है, अनुभव सभी के लिए अधिक स्वाभाविक और कम तनावपूर्ण होता है नतीजतन, शिक्षक अध्ययन/सीखने की सामग्रियों और दृष्टिकोणों को डिजाइन करने में और अधिक रचनात्मक और अभिनव हो सकता है, जिससे बेहतर शिक्षा के परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

संक्षेप में, कक्षा में शिक्षार्थियों की घरेलू भाषा के उपयोग से घर और स्कूल के बीच एक चिकनी संक्रमण को बढ़ावा देता है इसका मतलब है कि शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में और अधिक शामिल किया गया है और बुनियादी साक्षरता कौशल के विकास में तेजी आई है। यह शिक्षक की तैयारी में अधिक लचीलापन, नवाचार और रचनात्मकता को भी सक्षम बनाता है। शिक्षार्थियों की घरेलू भाषा का उपयोग करना शिक्षण/सीखने की प्रण्घ्या में सामान्य समुदाय का समर्थन प्राप्त करने की अधिक संभावना है और भावनात्मक स्थिरता पैदा करता है जो संज्ञानात्मक स्थिरता का अनुवाद करता है। संक्षेप में, यह ऐक बेहतर शैक्षिक परिणाम की ओर जाता है।

1.6 सारांश (Summary)

इस पाठ में आपने भाषा और इसके महत्व को जाना। अधिगम के दौरान भिन्न-भिन्न भाषा के संबंध को जाना। जिसमें खरी बोली के अलावा, हिन्दी भाषा की उपबोली जैसे-ब्रज भाषा, हरियाणवी, बुंदेली, अवधी, बाघेली, कनौजी, छतीसगढ़ी आदि को जाना। सीखने के अंतर्गत भाषा के महत्व को भी जाना।

1.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।
   What do you think of Reading and the process of Reading ? Explain your thoughts through proper examples.

2. प्रभावी पढ़ने के कौन-कौन से निर्देशन हैं? अपने विचारों को उदाहरण के द्वारा समझाए।
   Which are the directives of effective reading ? Elucidate your thoughts with examples.

3. पढ़ने और सीखने की किन-किन नीतियों को आप जानते हैं उदाहरण सहित समझाए।
   Explain with some examples of reading and learning policies, including examples.

4. स्कैनिंग और स्किमिंग क्या है, उदाहरण सहित समझाएँ।
   Explain the scanning and skimming with examples.

5. नोट लेने की विधि कैसे विकसित होगी ? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   How will the method of taking notes be developed ? Make clear your thoughts with proper example.

6. नोट लेने और नोट बनाने के क्या अंतर है उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What is the difference between taking notes and making notes ? Make clear your thoughts with a proper example.

1.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- The medium of education (The selected works of Gandh-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publ.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.
- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and world peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.0 Krishnamurthi, Foundation.
- National curriculum frameword – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- RTE Act, 2009 Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda0 Ananda and Crystal Clarity Publishers.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●

इकाई 2: गृह भाषा बनाम विद्यालयी भाषा
Unit 2 : Home language Vs School language

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

2.2 गृह भाषा और विद्यालयी भाषा की समझ (Understanding of Home Language and School Language)

2.3 भाषा 1 अधिग्रहण की प्रक्रिया (Proccess of Language 1 Acquisition)

2.4 दूसरी भाषा/स्कूल भाषा (SecondLanguage/School Language)

2.5 भाषा २ का शिक्षार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार रणनीतियाँ (Communication strategies used by Language 2 learners)

2.6 सीखने में प्रथम भाषा का महत्त्व (Significance of the First Lanauge in Learning)

2.7 सारांश (Summary)

2.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

2.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- भाषा और इसके महत्त्व से अवगत होंगे

- गृह भाषा और विद्यालयी भाषा में अंतर को समझेंगे
- पहली भाषा/गृह भाषा की जानकारी प्राप्त करेंगे
- भाषा 1 अधिग्रहण की प्रक्रिया को समझेंगे
- दूसरी भाषा/स्कूल भाषा की जानकारी प्राप्त करेंगे
- भाषा 2 का शिक्षार्थियों द्वारा उपयोग की जानेवाली संचार रणनीतियाँ से अवगत होंगे

उपयुक्त तथ्यों से अवगत करना ही इस पाठ का उद्देश्य है ।

2.1 परिचय (Introduction)

भाषा मुख्य रूप से समाज के सदस्यों के बीच संचार का साधन है। संस्कृति की अभिव्यक्ति में, भाषा एक मौलिक पहलू है। भाषा वह माध्यम है जो समूह पहचान से संबंधित परंपराओं और मूल्यों को व्यक्त करता है। भाषा एक समुदाय की आवश्यक विशेषताओं में से एक है और उसी भाषा का निरंतर उपयोग लोगों के समुदाय की ऐतिहासिक निरंतरता का सबसे निश्चित प्रमाण है। भाषा सामाजिक प्रकृति और दृढ़ता से संबंधित है, भाषा के संबंध उसमें हो रही घटना और समाज के बीच परस्पर निर्भरता और पारस्परिक सशर्तता से अंतर्निहित संस्कृति के साथ हैं।

भाषा सामाजिक व्यवहार के सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में से एक है। भाषा के माध्यम से जानकारी के सामान्य हस्तांतरण में और महत्त्वपूर्ण सामाजिक संदेश भेजने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। भाषा से ही हमारी पहचान होती है कि हम कौन हैं, हम कहाँ से आते हैं, और किसके साथ हम सहयोग करते हैं। अक्सर यह जानकर चौंकाने वाला होता है कि हम किसी व्यक्ति की भाषा, चरित्र और इरादों पर किसी व्यक्ति की भाषा, बोली या कुछ मामलों में, यहाँ तक कि एक शब्द की पसंद के आधार पर बड़े पैमाने पर उस व्यक्ति पर अपना निर्णय ले लेते हैं।

भाषा सबसे चिह्नित, विशिष्ट साथ ही मूल रूप से मनुष्य के संकाय की विशेषता है। मनुष्य और समाज के लिए भाषा का महत्व कम नहीं किया जा सकता है। व्यक्तिगत बात के रूप में, भाषा न केवल व्यक्तियों के बीच संचार का एक माध्यम है बल्कि उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का एक तरीका भी है। सामाजिक रूप से, भाषा व्यक्ति को बचपन से ढाला जाता है। बच्चा भाषा के माध्यम से दुनिया की अधिकांश चीजों को जानना आता है। यह इकाई भाषा, गृह भाषा, स्कूल भाषा, मौखिक भाषा और लिखित भाषा के अर्थ, अवधारणा और अधिग्रहण से संबंधित है। इसके अलावा, यह भाषा और संसकृति के बीच भाषा और संबंधों के कार्यों से संबंधित है।

परिभाषा

गृह भाषा वह एक भाषा (या एक भाषा की विविधता है) जिसे आम तौर पर घर पर रोजमर्रा

की बातचीत के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा बोली जाती है। इसी को परिवार की भाषा या घर की भाषा भी कहा जाता है।

2.2 गृह भाषा और विद्यालयी भाषा की समझ(Home language and School language)

पहली भाषा/गृह भाषा

पहली भाषा को अन्यथा मातृभाषा, धमनी भाषा, गृह भाषा, मूल भाषा, स्थानीय भाषा, स्वदेशी या स्वाभाविक भाषा जैसे कई नामों में बुलाया जाता है। ज्यादातर मामलों में, पहली भाषा शब्द उस भाषा को संदर्भित करता है जिसे एक व्यक्ति बचपन से सीखता है क्योंकि यह भाषा परिवार में बोली जाती है और यह उस क्षेत्र की भाषा है जहाँ पर वह बच्चा रहता है। मातृभाषा, मूल भाषा, या धमनी भाषा के रूप में भी जाना जाता है। एक व्यक्ति जिसके पास एक से अधिक मूल भाषा है, को द्विभाषी या बहुभाषी माना जाता है। समकालीन भाषाविद् और शिक्षक आमतौर पर पहली या मूल भाषा के संदर्भ में भाषा 1 शब्द का उपयोग करते हैं, और भाषा 2 शब्द को दूसरी भाषा या विदेशी भाषा का संदर्भ देने के लिए कहा जाता है।

ब्लूमफील्ड (1933) मूल भाषा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं जैसा कि कोई भी अपनी माँ के द्वारा उस भाषा को सीखता है, और दावा करता है कि बाद में हासिल की जाने वाली भाषा में कोई भी पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं है। पहली भाषा जो मनुष्य बोलना सीखती है वह उसकी मूल भाषा है; वह इस भाषा का मूल निवासी है।' यह परिभाषा एक मातृभाषा के साथ एक देशी भाषा के बराबर होती है। गृह भाषा, एक भाषा या ऐसी भाषा की विविधता है जो घर पर रोजमर्रा की बातचीत के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा सबसे अधिक बोली जाती है। परिवार की भाषा या घर की भाषा भी कहा जाता है।

कभी-कभी मातृभाषा या मातृभाषा शब्द का उपयोग उस भाषा के लिए किया जाता है जिसे एक व्यक्ति घर पर बच्चे के रूप में सीखा। द्विभाषी घरों में बढ़ रहे बच्चे, इस परिभाषा के अनुसार, एक से अधिक मातृभाषा या मूल भाषा हो सकती है। एक प्राकृतिक या स्थानीय भाषा एक विशिष्ट आबादी की मूल भाषा या मूल बोली है, मुख्य रूप से भाषा की एक साहित्यिक, राष्ट्रीय या मानक विविधता, या उस जनसंख्या द्वारा निवास क्षेत्र या राज्य में उपयोग किए जाने वाले लिंगुआ फ्रैंका से अलग है। कुछ भाषाविद समानार्थक के रूप में ''स्थानीय भाषा' और ''गैर मानक बोली'' का उपयोग करते हैं। विरासत भाषा को सीखना विरासत भाषायी सीखने का कार्य है जो किसी नृवंशविज्ञान समूह से पारंपरिक रूप से भाषा बोलता है, या जिसका परिवार ऐतिहासिक रूप से उस भाषा को बोलता है। विरासत भाषा सीखने का उद्देश्य अलग-अलग द्विभाषीता और निरक्षरता को बढ़ावा दिया जाता है।

भाषा अधिग्रहण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य भाषा को समझने और समझने की क्षमता प्राप्त

करते हैं, साथ ही शब्दों और वाक्यों को संवाद करने और उपयोग करने के लिए उपयोग करते हैं। भाषा अधिग्रहण अत्यंत मानवीय गुणों में से एक है क्योंकि गैर-मनुष्य भाषा का उपयोग करके संवाद नहीं करते हैं। भाषा अधिग्रहण आमतौर पर प्रथम भाषा अधिग्रहण को संदर्भित करता है, जो शिशुओं को अपनी मूल भाषा का अधिग्रहण पढ़ता है। यह दूसरी भाषा अधिग्रहण से अलग है, जो अतिरिक्त भाषाओं के अधि ग्रहण (बच्चों और वयस्कों दोनों में) से संबंधित है।

सफलतापूर्वक भाषा का उपयोग करने की क्षमता में एक व्यक्ति की फोनोलॉजी, मॉर्फोलॉजी, सिंटैक्स, अर्थशास्त्र और एक व्यापक शब्दावली सहित कई प्रकार के टूल प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। भाषण या पुस्तिका के रूप में भाषा को साइन-इन के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। मस्तिष्क में मानव भाषा क्षमता का प्रतिनिधित्व किया जाता है। भले ही मानव भाषा क्षमता सीमित है, कोई भी वाक्यों की अनंत संख्या को कह सकता है और समझ सकता है, जो पुनरावृत्ति नामक वाक्य रचनात्मक सिद्धांत पर आधारित है। साक्ष्य बताते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के पास तीन पुनरावर्ती तंत्र होते हैं जो वाक्य को अनिश्चित रूप से जाने की अनुमति देते हैं। ये तीन तंत्र हैं : सापेक्षता, पूरक और समन्वय। इसके अलावा, वास्तव में प्रथम भाषा अधिग्रहण में दो मुख्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, अर्थात्, भाषण धारणा हमेशा भाषण उत्पादन से पहले होती है और धीरे-धीरे विकसित प्रणाली जिसके द्वारा एक बच्चा एक भाषा सीखता है, एक समय में एक कदम बढ़ाया जाता है, जिसमें अंतर के बीच पहचान की शुरूआत होती है। शब्द पहली भाषा अधिग्रहण से बच्चों के जन्म से सुनने वाली भाषा या भाषाओं के प्राकृतिक अधिग्रहण को संदर्भित किया जाता है। यह दूसरी भाषा अधिग्रहण से अलग है, जो बाद में शुरू होता है, और विदेशी भाषा सीखने से, जिसमें आम तौर पर औपचारिक निर्देश शामिल होता है।

2.3 भाषा 1 अधिग्रहण की प्रक्रिया (Process of Language 1 Acquisition)

पहली भाषा अधिग्रहण में आमतौर पर निम्न चरणों का समावेश होता है :

- कोओइंग (3-6 महीने) - हर भाषा से मिलावटी उपयोग
- बड़बड़ा (6-8 महीने) - चुनिंदा और निरंतर कम बुदबुदाना की ध्वनि में बात करते हुए चुनिंदा रूप से अपने मूल भाषा से असंगति का उपयोग करें।
- होलोफ्रास्टिक चरण या एक शब्द का मंच (9-18 महीने)-सिंगल ओपन क्लास शब्द या शब्द उपजी।
- अर्थशास्त्र संबंधों के साथ दो शब्द चरण (18-24 महीने) मिनी-वाक्यों।
- टेलीग्राफिक भाषण (24-30 महीने) कार्यात्मक या व्याकरण संबंधी के बजाय व्याख्यात्मक की प्रारंभिक बहु शब्द वाक्य संरचनाओं।
- प्रवाह (30 + महीने) - लगभग सामान्य विकसित भाषण और व्याकरणिक या कार्यात्मक संरचनाएँ उभरती हैं।

2.3.1 पहली भाषा अधिग्रहण की विशेषताएँ (Characteristics of First Language Acquisition)

(1) यह एक वृत्ति है। यह तकनीकी अर्थ में सच है, यानी, यह जन्म से ट्रिगर होता है और अपना कोर्स लेता है, हालांकि निश्चित रूप से बच्चे को एक विशिष्ट भाषा प्राप्त करने के लिए पर्यावरण से भाषाई इनपुट की आवश्यकता होती है। एक वृत्ति के रूप में, भाषा अधिग्रहण की तुलना दूरबीन दृष्टि या बिनौरल सुनवाई के अधिग्रहण से की जा सकती है।

(2) यह बहुत तेज है। किसी की मूल भाषा प्राप्त करने के लिए आवश्यक समय की मात्रा काफी कम है, जीवन की सफलतापूर्वक दूसरी भाषा सीखने के लिए आवश्यक की तुलना में बहुत कम है।

(3) यह बहुत पूरा है। पहली भाषा अधिग्रहण की गुणवत्ता दूसरी भाषा की तुलना में कहीं बेहतर है। कोई अपनी मूल भाषा को नहीं भूलता है।

(4) इसे निर्देश की आवश्यकता नहीं है। इस तथ्य के बावजूद कि कई गैर भाषाविदों का मानना है कि बच्चों के लिए माँ के ध्यान के मनोवैज्ञानिक लाभों के बावजूद माता-पिता अपने मूल भाषा सीखने के लिए माता-पिता महत्वपूर्ण हैं, माता-पिता या देखभाल करने वालों द्वारा निर्देश अनावश्यक हैं।

2.3.2 पहली भाषा का महत्त्व (Significance of First Language)

किसी की भी व्यक्ति की पहली व्यक्तिगत भाषा, उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का एक हिस्सा है। पहली भाषा का अन्य भाषाओं पर प्रभाव यह है यह अभिनय और बोलने के सफल सामाजिक पैटर्न के प्रतिबिंब और सीखने के बारे में बताता है। यह अभिनय की भाषाई क्षमता को अलग करने के लिए मूल रूप से जिम्मेदार है। जबकि कुछ तर्क देते हैं कि ''मूल वक्ता'' या ''मातृभाषा'' जैसी कोई चीज नहीं है, इसलिए महत्वपूर्ण शर्तों को समझना और साथ ही यह समझना महत्वपूर्ण है कि इसका अर्थ ''गैर-मूल'' स्पीकर और इसका प्रभाव क्या है किसी के जीवन पर है। शोध से पता चलता है कि एक गैर-मूल निवासी लगभग दो साल के विसर्जन के बाद एक लक्षित भाषा (भाषा 2) में प्रवाह विकसित कर सकता है, लेकिन उस बच्चे के लिए अपने मूल बोलने वाले समकक्षों के समान कार्य स्तर पर पाँच से सात साल लग सकते हैं। इसका गैर-देशी वक्ताओं की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

देशी वक्ता का विषय भी इस बारे में चर्चा करने का एक तरीका है कि हम वास्तव में द्विभाषीवाद क्या है इसको भी समझे। एक परिभाषा यह है कि एक व्यक्ति भाषा 1 और भाषा 2 में से भाषाओं दोनों में समान रूप से कुशल होने के कारण द्विभाषी है। एक व्यक्ति जो तमिल बोलता है और चार साल तक अंग्रेजी सीखना शुरू करता है, वह द्विभाषी नहीं है जब तक कि वह दो भाषाओं को बराबर प्रवाह के साथ नहीं बोलने में निपुर्ण हो जाये। पर्ल और लैम्बर्ट ने सबसे पहले द्विभाषी परीक्षण किया जिसको ''संतुलित''

माना गया। कुछ बच्चे दो भाषाओं में पूरी तरह से धाराप्रवाह में बात करते हैं और महसूस करते हैं कि वह भाषा उनकी ''मूल'' भाषा है क्योंकि वे दोनों को पूरी तरह से समझते हैं। इस अध्ययन में निम्नलिखित पाया गया : संतुलित द्विभाषी उन कार्यों में काफी बेहतर प्रदर्शन करते हैं जिनके लिए भाषा की मनमानी प्रकृति के बारे में अधिक लचीलापन की आवश्यकता होती है और यह भी संतुलित द्विभाषी फोनोटिक वरीयताओं के बजाय तार्किक के आधार पर शब्द संघों का चयन करते हैं।

2.4 दूसरी भाषा/स्कूल भाषा (Second Language/School Language)

व्यक्ति की दूसरी भाषा या भाषा 2 ऐसी भाषा है जो बोलने वाले की मूल भाषा नहीं है, लेकिन इसका उपयोग उस व्यक्ति के स्थानीय भाषा में किया जाता है। इसके विपरीत, एक विदेशी भाषा एक ऐसी भाषा है जो उस क्षेत्र में सीखी जाती है जहाँ उस भाषा को आमतौर पर बोली नहीं दी जाती है। कुछ भाषाओं जिन्हें अक्सर सहायक भाषा कहा जाता है, मुख्य रूप से दूसरी भाषाओं या सह भाषा के रूप में उपयोग किया जाता है। अधिक अनौपचारिक रूप से, दूसरी भाषा को किसी भी मूल भाषा के अलावा विशेष रूप से, एक नई विदेशी भाषा सीखने के संदर्भ में सीखे जाने वाले कोई भी भाषा को कहा जा सकता है। दूसरी भाषा किसी व्यक्ति की पहली भाषा के अलावा सीखा हुआ किसी भी भाषा को संदर्भित करती है; हालॉकि अवधारणा को दूसरी भाषा अधिग्रहण नाम दिया गया है, यह तीसरी, चौथी, या बाद की भाषाओं के सीखने को भी शामिल कर सकता है।

द्वितीय भाषा अधिग्रहण से पता चलता है कि शिक्षार्थियों क्या करते हैं; यह भाषा शिक्षण में प्रथाओं का उल्लेख नहीं करता है, हालांकि शिक्षण अधिग्रहण को प्रभावित कर सकते हैं। दूसरी भाषा अधिग्रहण विरासत भाषा सीखने को शामिल कर सकता है, लेकिन यह आमतौर पर द्विभाषीवाद को शामिल नहीं करता है। अधिकांश अंग्रेजी शोधकर्ता द्विभाषीवाद को एक भाषा सीखने के अंतिम परिणाम के रूप में देखते हैं, न कि प्रक्रिया स्वयं, और शब्द को मूल जैसी प्रवाहशीलता के संदर्भ में देखते हैं। शिक्षा और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में लेखकों की प्रस्तुतिकरण बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। हालांकि, बहुभाषीवाद के सभी रूपों को संदर्भित करने के लिए अक्सर द्विभाषीवाद का उपयोग करते हैं। अंग्रेजी को विदेशी भाषा के अधिग्रहण से भी अलग नहीं किया जाना चाहिए; बल्कि दूसरी भाषाओं के सीखने और विदेशी भाषाओं के सीखने में विभिन्न स्थितियों में समान मौलिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं।

2.5 भाषा 2 का शिक्षार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार रणनीतियाँ (Communication strategies used by Language 2 learners)

दूसरी भाषा सीखने के दौरान, भाषार्थियों को भाषाई संसाधनों की कमी के कारण संचार समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संचार रणनीतियाँ ऐसी रणनीतियाँ हैं, जो शिक्षार्थियों को अपने इच्छित अर्थ

व्यक्त करने के लिए इन समस्याओं को दूर करने के लिए उपयोग करते हैं। उपयोग की जाने वाली रणनीतियों में पेराग्राफ का सही प्रस्तुतीकरण, प्रतिस्थापन, नए शब्दों को जोड़ना, पहली भाषा में स्थानातार्ण करना और स्पष्टीकरण मांगना शामिल हो सकता है। भाषाओं को बदलने के अपवाद के साथ इन रणनीतियों का भी देशी वक्ताओं द्वारा उपयोग किया जाता है।

दूसरी भाषा अधिग्रहण में शोधकर्ताओं द्वारा रणनीतियों की कोई व्यापक सूची पर सहमति नहीं मिली है, लेकिन कुछ सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली रणनीतियों को देखा गया है।

2.5.1 शब्द-बाहुल्य (Circumlocution)

यह सीखने वालों को उनके इच्छित अर्थ व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों या वाक्यांशों का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षार्थियों को दादा शब्द नहीं पता है तो वे ''मेरे पिता के पिता'' कहकर इसे समझा सकते हैं।

अर्थपूर्ण बचाव

सीखने वाले एक अलग शब्द का उपयोग करके एक समस्याग्रस्त शब्द से बच सकते हैं, उदाहरण के लिए नियमित क्रिया के साथ अनियमित क्रिया को प्रतिस्थापित करना। ''पूछने'' की नियमितता सही ढंग से उपयोग करना आसान बनाता है।

2.5.2 शब्द सिक्का (Semantic Avoidance)

यह उन शब्दों के लिए नए शब्द या वाक्यांश बनाने वाले शिक्षार्थियों को संदर्भित करता है जिन्हें वे नहीं जानते हैं। उदाहरण के लिए, एक छात्र एक कला गैलरी को ''चित्र स्थान'' के रूप में संदर्भित कर सकता है।

2.5.3. भाषा का बदलाव (Language Switch)

शिक्षार्थियों को अपनी पहली भाषा से एक वाक्य में एक शब्द बोल सकता है और उम्मीद है कि उनके संवाददाता उस पहली भाषा वाले शब्द को समझेंगे।

2.5.4 स्पष्टीकरण के लिए पूछना (Asking for Clarification)

कई बार यदि बोली गयी बात समझ नहीं आती है तो ऐसी दशा में सही शब्द या अन्य सहायता के लिए एक संवाददाता से स्पष्टीकरण के रूप में पूछने की रणनीति एक संचार रणनीति है।

2.5.5 गैर मौखिक रणनीतियाँ (Non-Verbal Strategies)

यह मौखिक संचार को बढ़ाने या बदलने के लिए इशारा के प्रयोग का उपयोग जैसी रणनीतियों का उल्लेख कर सकता है।

2.5.6 परिहार (टाल-मटोल) (Avoidance)

एक ऐसी अव्यवस्था, जो कई रूप लेती है, जिसको संचार रणनीति के रूप में पहचाना गया है। दूसरी भाषा के शिक्षार्थियों को उन विषयों के बारे में बात करने में बचना सीख सकता है जिनके लिए उन्हें दूसरी भाषा में आवश्यक शब्दावली या अन्य भाषा कौशल की कमी है। साथ ही, भाषा सीखने वाले कभी-कभी किसी विषय के बारे में बात करने की कोशिश करना शुरू करते हैं, लेकिन यह पता लगाने के बाद कि वे अपने संदेश को पूरा करने के लिए आवश्यक भाषा संसाधनों की कमी के बाद मध्य-उच्चारण में प्रयास छोड़ देते हैं।

2.6 भाषा 2 अधिग्रहण की प्रक्रिया (Process of L2 Acquisition)

शोधकर्ता भाषा अधिग्रहण को दो श्रेणियों में परिभाषित करते हैं : प्रथम भाषा अधिग्रहण और दूसरी भाषा अधिग्रहण। घर में बोली जाने वाली भाषा के बावजूद पहली भाषा अधिग्रहण एक सार्वभौमिक क्रिया है। बच्चे उनके चारों ओर की आवाजें सुनते हैं, उनका अनुकरण करना शुरू करते हैं, और अंत में शब्दों का उत्पादन शुरू करते हैं। द्वितीय भाषा अधिग्रहण ज्ञान को पहली भाषा में मानता है और उस प्रक्रिया को अपनी हर दिन की बोल चाल की भाषा में शामिल करता है। द्वितीय भाषा व्यक्ति के माध्यम की समझ के अनुसार जाता है क्योंकि वह शब्दावली, ध्वन्यात्मक घटकों, व्याकरण संरचनाओं और लेखन प्रणालियों जैसे नए भाषा के तत्वों को सीखता है।

हेनेस ने दूसरे चरण के अधिग्रहण की प्रक्रिया को पाँच चरणों में विभाजित किया : प्रजनन, प्रारंभिक उत्पादन, भाषण उभरना, मध्यवर्ती प्रवाह और उन्नत प्रवाह।

2.6.1 पूर्व-उत्पादन (Pre-Production)

इसे ''मूक अवधि'' भी कहा जाता है, जब छात्र नई भाषा समझता और सीखता है लेकिन बात नहीं करता है। व्यक्ति के आधार पर यह अवधि अक्सर छह सप्ताह या उससे अधिक समय तक चलती है।

2.6.2 प्रारंभिक उत्पादन (Early Production)

प्रारंभिक अवस्था में व्यक्ति छोटे शब्दों और वाक्यों का उपयोग करके बात करना शुरू कर देता

है, लेकिन नई भाषा सुनने और उसका प्रयोग पर जोर भी जरूरी है। शुरूआती समय में इस चरण में कई त्रुटियाँ होंगी लेकिन व्यक्ति उसी त्रुटि से सीखते हैं।

2.6.3 भाषण इमर्जेंट (Speech Emergent)

भाषण अधिक बार बोली जाने पर उसका प्रभाव अधिक हो जाता है, इस दशा में शब्द और वाक्य लंबे होते हैं, लेकिन व्यक्ति अभी भी संदर्भ और परिचित विषयों पर भारी निर्भर करता है। शब्दावली में वृद्धि जारी है और त्रुटियाँ घटने लगती हैं, खासकर जब हम सीखी हुई भाषा का बार-बार प्रयोग करते हैं और उसको अपने आम जीवन में दोहराते हैं।

2.6.4 शुरुआत फ्लुएंसी (Beginning Fluency)

कम से कम त्रुटियों के साथ हम सामाजिक परिस्थितियों में जिस प्रकार इस्तेमाल करते हैं, वह इस अवस्था में काफी स्पष्ट हो जाता है। नए संदर्भ और अकादमिक भाषा हमेशा ही चुनौतीपूर्ण रहती हैं और व्यक्ति शब्दावली और उचित वाक्यांशों में अंतराल के कारण स्वयं को व्यक्त करने के लिए संघर्ष करते हैं।

2.6.5. इंटरमीडिएट फ्लुएंसी (Intermediate Fluency)

दूसरी भाषा में संचार करना विशेष रूप से सामाजिक भाषा स्थितियों में धारा प्रवाह के साथ संचार करना महत्त्वपूर्ण होता है। इस समय तक व्यक्ति नई परिस्थितियों में या शैक्षिक क्षेत्रों में लगभग स्पष्ट रूप से बात करने में सक्षम है, लेकिन शब्दावली ज्ञान और कुछ अज्ञात अभिव्यक्तियों में अंतराल होगा। इस अवस्था में त्रुटियां अपने आप कम होने लगती हैं, और व्यक्ति दूसरी भाषा में निपुण होने लगता है और उसकी सोच कौशल का प्रदर्शन करने में सक्षम हो जाता है जैसे अपने राय को प्रस्तुत करना या समस्या का विश्लेषण करना।

2.6.6 उन्नत प्रवाह (Advanced Fluency)

व्यक्ति सभी संदर्भों में स्पष्ट रूप से संचार करता है और नए संदर्भों में सफलतापूर्वक अपनी बात को प्रस्तुत कर सकता है और जब नई शैक्षणिक जानकारी के संपर्क में आता है तो वो उसका सही इस्तेमाल करता है। इस स्तर पर, व्यक्ति के पास अभी भी एक उच्चारण हो सकता है और कभी-कभी मूर्खतापूर्ण अभिव्यक्तियों का गलत इस्तेमाल होता है, लेकिन व्यक्ति दूसरी भाषा में अनिवार्य रूप से धाराप्रवाह और सहज संचार कर रहा है। सिद्धांत जो दूसरी भाषा सीखने, या अधिग्रहण के लिए विकसित किए गए हैं, सामान्य शिक्षण सिद्धांतों से निकटता से संबंधित हैं।

दूसरी भाषा सीखने के लिए एक व्यवहारवादी दृष्टिकोण का होना जरूरी है और सीखने की यही जिज्ञासा हमको दूसरी भाषा सीखने में मदद करता है। बार-बार अभ्यास, प्रोत्साहन और आदत रखने से हम सीखने पर केंद्रित हो सकते हैं। दूसरी हर व्यक्ति को किसी भी भाषा की सीखना जरूरी है और सीखने की पहली भाषा के साथ तुलना करने पर ही वो दूसरी भाषा को समझता है। लेकिन बाद में इसे अतिरिक्त व्यक्तियों के सीखने में 'हस्तक्षेप' के रूप में माना जाता है। यह दृष्टिकोण अब भाषा सीखने की जटिलता की अपर्याप्त व्याख्या प्रदान करने के लिए देखा जाता है।

भाषाविद् नोएम चॉम्स्की (1957) ने व्यवहारवाद की एक प्रमुख आलोचना और अनुकरण और आदत के गठन के रूप में दूसरी भाषा सीखने के अपने दृष्टिकोण को प्रदान किया। उन्होंने पहली भाषा सीखने का एक सिद्धांत विकसित किया जो बताता है कि भाषा सीखना एक सहज क्षमता है-बच्चों को सार्वभौमिक व्याकरण के उनके अंतर्निहित ज्ञान के लिए भाषा सीखने में मदद करता है। किसी विशेष अवसर पर वास्तव में क्या कहा जा सकता है उससे अलग करने के लिए कहा जाता है। चॉम्स्की के अनुसार, ''भाषा के इस अमूर्त ज्ञान में नियमों का सीमित संग्रह होता है जो वाक्यों की अनंत संख्या का निर्माण करने में सक्षम होते हैं।'' उन्होंने विशेष रूप से दूसरी भाषा सीखने को संबोधित नहीं किया, जो उनके सिद्धांत पर लागू किया गया है। शिक्षण पद्धति के संबंध में, व्यवहारवाद को व्याकरण/अनुवाद विधियों से जोड़ा जा सकता है जो व्याकरण संबंधी ज्ञान के हिस्सों पर ध्यान केंद्रित करता हैं, इस बात पर कम ध्यान दिया जाता है कि इन हिस्सों को संचार में कैसे लाया जा सकता है। ऑडियोविजुअल और ऑडियो-लैंगुअल दृष्टिकोण उत्तेजना-प्रतिक्रिया मनोविज्ञान पर आधारित है-यानी 'आदतों' बनाने के लिए पैटर्न का अभ्यास करके छात्रों को प्रशिक्षण देना।

भाषा सीखने के सिद्धांतों में प्रतिभाशाली सांस्कृतिक और भाषायी रूप से विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले शिक्षक उन शिक्षार्थियों पर अधिक प्रभाव डालते हैं।

2.6.7 भाषा सीखने में कुछ बुनियादी सिद्धांत शामिल हैं (The language learning involves certain basic principles)

- यह दर्शाता है कि विधियों और रणनीतियों की पसंद लचीला होना चाहिए।
- अंग्रेजी सीखने और अंग्रेजी सीखने के लिए सर्वोत्तम तकनीक दृष्टिकोण और रणनीतियों के लिए कई विधियों पर आकर्षित करने वाली पद्धति के लिए एक उदार दृष्टिकोण का समर्थन करता है।
- यह दर्शाता है कि प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली सीएएलडी छात्र सर्वश्रेष्ठ सीखते हैं जब कई अलग-अलग संवादात्मक स्थितियों में अंग्रेजी का स्वतंत्र रूप से और रचनात्मक रूप से उपयोग करने का अवसर दिया जाता है।
- शिक्षार्थियों को जोखिम लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विश्वास का वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

- प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली सीएएलडी शिक्षार्थियों के लिए अपने स्वयं के प्रश्नों के उत्तर खोजने और अपनी रूचियों का पीछा करने के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।
- कभी-कभी, अंग्रेजी के विशिष्ट पहलुओं पर रणनीतियों, कौशल, संरचनाओं और शब्दावली जैसे छात्रों को सक्रिय रूप से ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- प्रतिभा, जाँच, प्रतिबिंबित करने, संचार करने और आत्म-खोज में प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली सीएएलडी शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता दर्शाती है।
- वैचारिक विकास का समर्थन करने के लिए वकील संबंधित और पुनर्नवीनीकरण अनुभव
- कक्षा में शिक्षण/सीखने की स्थितियों के संतुलन की आवश्यकता होती है।
- मॉडलिंग और मचान उद्देश्यों के लिए सहकर्मी सहयोग के उपयोग की वकालत करते हैं।

2.7 सारांश (Summary)

इस पाठ के दौरान गृह भाषा एवं विद्यालयी भाषा को गहनता से जाना। गृह भाषा किसी भी व्यक्ति की पहली या मातृभाषा होती है। जबकि विद्यालयी भाषा वह होती है जो पूरे प्रदेश अथवा राज्य में मान्य हो। भाषा वास्तव में संचार प्रणाली की रणनीतियों का मुख्य अस्त्र है। इसका विस्तृत ज्ञान आपने जाना व समझा।

2.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. गृह भाषा और स्कूल भाषा से क्या समझते हैं? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।
   What do you understand by Home Language and School language ? What do you think of the process of reading and reading ? Explain your thoughts through proper examples.
2. भाषा 1 अधिग्रहण की प्रक्रिया को समझने में अपनी विचारों को उदाहरण के द्वारा समझाए।
   Explain the Process of Language 1 Acquisition with suitable example of your thoughts.
3. दूसरी भाषा/स्कूल भाषा को आप जानते हैं उदाहरण सहित समझाएँ।
   Explain with some examples of Second Language/School Language including examples.

4. भाषा 2 अधिग्रहण की विभिन्न प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाएँ
   Explain with examples the different process of L2 Acquistion.

5. भाषा सीखने में कौन-कौन से बुनियादी सिद्धांत शामिल हैं, उदाहरण सहित समझाएँ।
   The language learning involves certain basic principles. Explain it with examples.

2.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- The medium of education (The selected works of Gandh-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publ.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.
- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and world peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.0 Krishnamurthi, Foundation.
- National curriculum frameword – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- RTE Act, 2009.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●

इकाई 3: बहुभाषी सन्दर्भ की समझ

Unit 3: Understanding Multilingual Context

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

3.0 उद्देश्य (Objective)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

3.2 बहुभाषावाद का अर्थ (Meaning of Multilingualism)

3.3 बहुभाषावाद के विभिन्न सन्दर्भ (Different contexts of Multilingualism)

3.4 भारत में बहुभाषावाद (Multilingualism in India)

3.5 बहुभाषी कक्षा-कक्ष की चुनौतियाँ (Challenges of Multilingual Class-room)

3.6 बहुभाषी कक्षा हेतु रणनीतियाँ (Strategies for Multilingual Classes)

3.7 सारांश (Summary)

3.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

3.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

3.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थीगण :

- बहुभाषावाद के अर्थ को समझ सकेंगे।
- बहुभाषावाद के विभिन्न सन्दर्भों की व्याख्या कर सकेंगे।
- भारत में बहुभाषावाद की स्थिति को समझ सकेंगे।
- बहुभाषी कक्षा-कक्ष की चुनौतियों एवं इस हेतु रणनीतियों को समझ सकेंगे।

उपर्युक्त तथ्यों से अवगत कराना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

'बहुभाषी सन्दर्भ की समझ' नामक इस इकाई में विद्यार्थियों को बहुभाषावाद के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी दी गयी है। इस इकाई में बताया गया है कि एक से अधिक भाषा का प्रयोग ही बहुभाषिता हैं यह पाठ बताता है कि एक से अधिक भाषा का प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा समाज के लिए समस्या है और न ही उसका पिछड़ापन; बल्कि एक से अधिक भाषा के प्रयोग से अभिव्यक्ति में पूर्णता आती है। इतना ही नहीं विभिन्न भाषाओं के संरक्षण हेतु भी बहुभाषिता का बहुत महत्त्व है। दुनिया में ज्यादातर लोग बहुभाषी हैं। भारत के सन्दर्भ में तो सच्चाई यह है कि यहाँ के सभी लोग एक से अधिक भाषा का प्रयोग करते हैं। इससे देश की सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता को बल मिलता है। एक वैसी कक्षा जिसमें एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करने वाले विद्यार्थी हों, कुछ चुनौतियाँ भी होती हैं, परंतु एक कुशल अध्यापक कुछ उपयुक्त रणनीतियाँ अपनाकर वहाँ भी अधिगम को सरल एवं सुगम बना सकता है। अत: इस इकाई में इन्हीं बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

3.2 बहुभाषावाद का अर्थ (Meaning of Multilingualism)

बहुभाषावाद या बहुभाषिता से तात्पर्य एक से अधिक भाषाओं के प्रयोग से है। किसी व्यक्ति अथवा समुदाय द्वारा दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग बहुभाषिता कहलाता है। यह बहुभाषिता विभिन्न स्तर पर हो सकती है। कुछ लोग लिखने, बोलने या पढ़ने में दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग कर लेते हैं, भले ही भाषाओं के दक्षता में बहुत अन्तर हो। इसी प्रकार कुछ लोग अंग्रेजी या कोई अन्य भाषा बोले जाने पर उसका अर्थ तो समझ लेते हैं, परंतु वे स्वयं बोल नहीं पाते। यह सभी बहुभाषिता के अन्तर्गत आता है। ऐसे सभी लोग बहुभाषिक हैं जो एक से अधिक भाषाओं को सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने या लिखने में से किसी भी स्तर पर अपनी दक्षता रखते हैं। बहुभाषी लोग कई भाषाओं के शब्दों या वाक्यों का व्यवहार अपनी अभिव्यक्ति में करते हैं। वे परिस्थिति के अनुसार अपनी भाषा बदल लेते हैं। सामान्यत: दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करने वाले लोग उनमें समान दक्षता नहीं रखते। कुछ लोग दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग बड़ी दक्षता से करते हैं।

आँकड़े बताते हैं कि दुनिया में एक भाषी लोगों की तुलना में बहुभाषियों की संख्या अधिक है। दुनिया भर में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करनेवाली जनसंख्या साठ प्रतिशत या उससे भी अधिक है। वर्तमान में दुनिया में कुल कितनी भाषाओं और बोलियों का प्रचलन है, यह ठीक-ठीक कह पाना थोड़ा मुश्किल है। संयुक्त राष्ट्र संघ की पहली 'स्टेट ऑफ इंडीजीनस पीपुल्स रिपोर्ट-2001' (State of Indigenous Peoples Report-2001) के अनुसार विश्व भर में लगभग 6,900 भाषाएँ हैं, जिनमें से करीब 2500 भाषाएँ या तो लुप्त हो चुकी हैं अथवा ये विलोपन के कगार पर पहुँच चुकी हैं। कुछ लोगों के द्वारा यह

भी सवाल उठाया जाता है कि आखिर इतनी सारी भाषाओं और बोलियों की आवश्यकता क्या है–सबकी भाषा एक ही हो तो क्या परेशानी है? सबकी भाषा एक होने से लोगों को एक–दूसरे को समझना आसान होगा और ज्ञान का प्रसार भी तीव्र गति से हो सकेगा, लेकिन यह धारणा सिर्फ कल्पना ही हो सकती है, यथार्थ नहीं। दुनिया में एक भाषा का होना वर्तमान में संभव प्रतीत नहीं होता है, भाषा में विविधता का होना स्वाभाविक है। संसार के विभिन्न हिस्से में रहनेवाले लोगों के रूप–रंग और रीति–रिवाज में विभिन्नता है। उनकी जीवनशैली और नीति–विश्वास भी अलग हैं। ऐसे में भाषाओं और संस्कृति की विविधता भी मानव जीवन का सौन्दर्य है, जिसे सहेजने का प्रयास किया जाना चाहिए। बहुभाषिता उस भाषायी विविधता को सहेजने और समृद्ध करने का माध्यम है।

भारत की पहचान इसकी विविधता को लेकर है। भाषाओं की विविधता के मामले में भी भारत का अव्वल स्थान है। बहुभाषिता भारतीय जीवनशैली का हिस्सा है। यहाँ के अधिकांश लोग बहुभाषी हैं। वे जीवन के अलग–अलग परिस्थितियों में एक ही समय में अलग–अलग भाषाओं का प्रयोग करते हैं। बिहार का स्कूली बालक अपने बूढ़े दादाजी से भोजपुरी, मैथिली, बज्जिका या अंगिका जैसी स्थानीय बोली में बात करके घर से निकलता है। उसी समय वह अपनी माँ के सवाल का जवाब खड़ी हिन्दी में देता है जबकि सड़क पर आते ही उसका सामना किसी सहपाठी से होता है तो वह उसे 'गुड मॉर्निंग' कहकर भी बातचीत की शुरूआत सरलता से करता है। इस बहुभाषिक परिस्थिति में कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती; बल्कि यह सब बड़ी सहजता से हो जाता है। इतना ही नहीं जब वह विद्यालय पहुँचता है और उसे कोई बंगाली दोस्त मिल जाता है तो उससे दो शब्द बंगला भाषा में भी बोल लेता है। यही बहुभाषिता है। भारतीय समाज की इसी व्यापकता को प्रख्यात भाषाविद् प्रोफेसर डी.पी. पटनायक (1990) ने 'बिना टकराव प्रकार' (Non-conflicting type) कहा है जिसमें भिन्न–भिन्न भाषाओं का उपयोग विभिन्न अवसरों पर अलग–अलग लोगों के साथ किया जाता है।

इसी प्रकार एक इतिहास का शिक्षक कक्षा का आरंभ यह बोलते हुए करता है–"Good morning all of you. आज हमलोग द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा करेंगे।'' वहीं शिक्षक समझाने के क्रम में बच्चों को हँसाने या आत्मीयता के प्रदर्शन हेतु एक–दो वाक्य स्थानीय बोली में बोल जाता है तो इससे अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण में पूर्णता आती है न कि इससे भाषायी पिछड़ेपन का पता चलता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाषा का कार्य अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण में पूर्णता लाना है और बहुभाषिता इस प्रक्रिया में सहायक होती है न कि समस्या।

3.3 बहुभाषावाद के विभिन्न सन्दर्भ (Different Contexts of Multilingualism)

किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग बहुभाषिता है। यह समय, परिस्थिति, समाज या संस्कृति की माँग पर आधारित होती है। इसके भिन्न कारण या आयाम हो सकते हैं। इस उप-इकाई में हम बहुभाषिता के विभिन्न सन्दर्भों की चर्चा अलग-अलग बिन्दुओं में विस्तार से कर रहे हैं।

3.3.1 ऐतिहासिक सन्दर्भ (Historical Contexts)

भाषा का इतिहास लगभग 70,000 साल पुराना है; जबकि आधुनिक तरीके से लिखी जानेवाली लिपि वाली भाषाओं का इतिहास सिर्फ 4 से 6 साल पुराना है। भाषा विकास के इस क्रम में दुनिया में जिस प्रकार विभिन्न सभ्यता-संस्कृति का विकास हुआ, उसी प्रकार अनेक भाषाओं का भी कालक्रम में विकास हुआ। भारत भी वैसे देशों में अग्रणी माना जाता है जहाँ सभ्यता-संस्कृति का विकास अति प्राचीन काल में ही आरंभ हो गया था। साथ ही विभिन्न भाषाओं ने भी यहाँ जन्म लेना शुरू किया। अति प्राचीन काल में भारत में पालि एवं प्राकृत भाषाओं का प्रयोग होता था। उस काल में हिंदू धर्म-ग्रंथों में संस्कृत का प्रयोग किया गया तथा संस्कृत भाषा को 'देववाणी' कहकर उस समय के विद्वानों ने उसका महिमामंडन किया। ईसापूर्व छठी सदी में जैन व बौद्ध धर्म ने पालि व प्राकृत भाषा को अपनाया। साथ ही राजकीय संरक्षण मिलने के कारण पालि व प्राकृत भाषाओं का प्रचार-प्रसार सुदूर तक फैला। पुनः गुप्तकाल में हिन्दू राजाओं के समर्थन एवं कालिदास जैसे विद्वान लेखकों के कारण संस्कृत भाषा की प्रतिष्ठा बढ़ गयी। पुनः मध्यकाल में मुसलमान शासकों ने उर्दू, अरबी और फारसी भाषाओं का बढ़ावा दिया। अंग्रेज शासकों ने अंग्रेजी को राजकाज की भाषा बनाया और उच्च शिक्षा एवं परीक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी को बनाया। इससे अंग्रेजी लिखने-बोलने वाले को उच्च पद और प्रतिष्ठा मिली, जिससे वे सामाजिक-आर्थिक रूप से सबल और सम्पन्न बनकर उभरे। इस क्रम में पुरानी प्रमुख भाषाएँ विलुप्त नहीं हुई; बल्कि नई-नई भाषाओं और उनके बोलनेवाले की तादाद भी बढ़ती चली गयी। आजादी के आंदोलन के दौरान सम्पर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी और हिन्दी का उपयोग सफलता के साथ किया गया और देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत की राष्ट्रीयता घोषित की गयी। इस क्रम में लोगों की शब्दावली में विभिन्न भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होने लगे तथा एक व्यक्ति या समुदाय एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करने लगा, भले ही उनकी दक्षता में अतर हो। अतः बहुभाषिता को इस सन्दर्भ में समझा जा सकता है।

इसी प्रकार दुनिया के अन्य हिस्से में भी भाषाओं का विकास होता चला गया। आज सबसे अधिक इंडो-यूरोपियन परिवार की भाषाएँ दुनिया की लगभग आधी आबादी के द्वारा बोली जाती है, जिसमें हिन्दी, संस्कृत से लेकर पर्सियन, अंग्रेजी तक शामिल हैं। इन भाषाओं का विकास लगभग 30000 ईसा पूर्व में पूर्वी यूरोप एवं पश्चिमी एशिया के क्षेत्र में हुआ। भाषाविदों का मानना है कि विभिन्न कारणों से अलग-अलग भाषा बोलनेवाले लोगों का सम्पर्क एक-दूसरे से हुआ और वे एक-दूसरे की भाषा को अपनाते चले गये। इस प्रकार बहुभाषिता का उदय हुआ और आज बहुभाषी लोगों की संख्या पूरी दुनिया में एक भाषा का

उपयोग करनेवाले लोगों की तुलना में कहीं अधिक है।

3.3.2 भौगोलिक सन्दर्भ (Geographical Contexts)

बहुभाषिता जिन सन्दर्भों से प्रभावित होती है उसमें भौगोलिक सन्दर्भ भी प्रमुख है। प्राचीनकाल से ही भौगोलिक विभाजन जैसे-नदी, पहाड़, जंगल, समुद्र आदि जनसम्पर्क में सबसे बड़ी बाधा रहे हैं। जनसम्पर्क में बाधा होती है तो लोग एक-दूसरे की संस्कृति या भाषा से अपरिचित रह जाते हैं। ऐसे में वे एक-दूसरे से भाषा का आदान-प्रदान नहीं कर पाते।

संसार के सभी भाषाओं का विकास एक खास भौगोलिक क्षेत्र में हुआ है तथा एक-दूसरे के सम्पर्क में आने से लोग विभिन्न भाषाओं से परिचित होकर उसका उपयोग करने लगे। जिस देश या समाज में विभिन्न संस्कृति या भाषा-भाषियों को सम्पर्क में आने का अवसर मिलता है, वहाँ के लोग सहजता से एक-दूसरे की भाषा को अपनाकर बहुभाषी हो जाते हैं। भारत भी इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र या उपक्षेत्र की अपनी एक भाषा या बोली है।

एक बालक अपने परिवार के सदस्यों द्वारा उपयोग किये जानेवाली भाषा को स्वत: उपयोग में लाने लगता है। इसके बाद सबसे ज्यादा वह पास-पड़ोस में उपयोग होनेवाली भाषा को अपनाना आरंभ करता है। इस प्रकार ऐसा देखा जाता है कि एक ही भौगोलिक क्षेत्र या परिवेश में बसे लोग एक-दूसरे की भाषा को साझा कर बहुभाषिक हो जाते हैं।

3.3.3 सामाजिक और राजनीतिक सन्दर्भ (Social and Political Contexts)

बहुभाषिता सामाजिक तानेबाने से भी प्रभावित होती है क्योंकि भाषा समाज में लोगों के बीच अंत:क्रिया का माध्यम है। भाषा बालक का समाजीकरण करती है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं या भावनाओं की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा करता है। एक ही भाषा का प्रयोग करनेवाले लोग आपस में एकता के सूत्र में बँध जाते हैं। कालक्रम में जब सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाता है तो परिस्थिति विशेष के कारण उसमें अलग भाषा का प्रयोग करने वाले लोग भी आ जाते हैं। ऐसे में उस समाज में नये लोग स्थानीय लोगों की भाषा को अपनाने लगते हैं। साथ ही पहले से बसे लोग भी नये लोगों की भाषा को अपनाने लगते हैं। इतना ही नहीं समाज में हैसियत बढ़ाने के लिए और राजनीतिक लाभ के लिए भी लोग शासन-सत्ता वर्ग की भाषा को अपनाने लगते हैं। उदाहरण के लिए जब मध्यकाल में राजनीतिक सत्ता पर मुसलमान काबिज हुए तो भाषा एवं संस्कृति में भी परिवर्तन आने लगा और अरबी, फारसी, उर्दू जैसी भाषाओं को लोग अपनाने लगे। इसी प्रकार जब अंग्रेज शासकों ने अंग्रेजी को राजकाज की भाषा बनाया, तब अंग्रेजी का प्रचार-प्रसार बढ़ा। पुन: देश को स्वतंत्रता मिली, तब हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला।

इन तमाम परिस्थितियों में न तो प्राचीन भाषा संस्कृत समाप्त हुई, न ही उर्दू-फारसी पढ़ना हुआ।

आज भी बिहार जैसे प्रान्त में शादी-विवाह या अन्य धार्मिक अवसर पर हिन्दू समाज में संस्कृत में मंत्र पढ़े जाते हैं, उस परिवार के सदस्य खड़ी हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा या बोली में आपस में बात करते हैं और उसी परिवार के बच्चे-बच्चियाँ अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय से पढ़-लिख कर देश-विदेश में नौकरी या व्यापार के लिए भी हैं। यहाँ के मुस्लिम लोग भी अपने धार्मिक अवसरों पर अरबी भाषा का प्रयोग करते हैं, उनके घर में उर्दू बोली जाती है और उनके बच्चों के पढ़ाई का माध्यम उर्दू, हिन्दी या अंग्रेजी हो जाता है। बॉलीवुड के हिन्दी सिनेमा से मनोरंजन करते समय और गुलाम अली के उर्दू में गजल सुनते समय हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद नहीं रह जाता है। मुनव्वर राना को सुनते समय भी हिन्दी भाषियों को ध्यान नहीं रहता कि ये तो उर्दू में शायरी सुना रहे हैं। भाषा की यही स्थिति कमो-बेश अपने देश में हर जगह दिखायी देगी। इस प्रकार भारतीय समाज परम्परागत रूप से बहुभाषी समाज रहा है। आजादी के बाद हिन्दी को जहाँ राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया, वहीं साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी संविधान में स्थान दिया गया। इतना ही नहीं आजादी के बाद भी राजकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी का चलन जारी रहा। किसी भी भाषा को न तो प्रतिबन्धित किया गया और न ही जबर्दस्ती किसी पर थोपा गया। परिणामस्वरूप लोग शिक्षा, रोजगार एवं व्यापार में प्रगति हेतु एक भाषाई क्षेत्र को छोड़कर दूसरे भाषाई क्षेत्र में जाने एवं बसने लगे। इससे लोगों को अपनी मूल भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को सीखने का अवसर मिला और सामाजिक संरचना बहुभाषिक होती चली गयी। वर्तमान स्थिति यह है कि अत्यन्त पिछड़े या दूरवर्ती क्षेत्र में बसे आदिवासियों की बात छोड़ दें तो कमोबेश हर समाज (खासकर आर्थिक और शैक्षिक रूप से विकसित समाज) बहुभाषिक हो चुका है।

दुनिया के हर क्षेत्र में कमोबेश राजनीतिक परिस्थितियों ने भाषा के प्रचार-प्रसार को हमेशा प्रभावित किया है। जिस भाषा को जब और जहाँ शासन सत्ता का समर्थन और संरक्षण मिला है, वह भाषा फली-फूली है अर्थात् उसका प्रचार-प्रसार बढ़ा है। भारत में भी प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक और अंग्रेजी काल से लेकर वर्तमान तक यही स्थिति है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाषा को लेकर भारत में कभी गंभीर विवाद या संघर्ष नहीं हुआ और न बड़े पैमाने पर किसी का विरोध। परिणाम यह हुआ कि यहाँ की बोलचाल में नये-नये भाषाओं का समावेश होता चला गया, जिससे कि बहुभाषिक परिस्थिति पैदा हुई। स्वतंत्र भारत में गठित कोठारी आयोग (1964-66) ने जो त्रिभाषा सूत्र (Trilingual Formula) दिया और उसका समर्थन अन्य शिक्षा आयोगों ने किया, इससे बहुभाषा को प्रोत्साहिन मिलता है।

हालाँकि भाषा को लेकर हमारे देश में वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में काफी विरोधाभास भी दिखता है। भारत में ऐसे कई नेता या सांसद हैं जो जनता से वोट तो हिन्दी या किसी प्रान्तीय भाषा में माँगते हैं, परन्तु संसद में भाषण वे अंग्रेजी में देते हैं। यहाँ ऐसे भी नेता हैं जो संसद में अंग्रेजी बोलने पर प्रतिबन्ध लगाने की वकालत करते हैं, परन्तु अपने सुपुत्र को लंदन पढ़ने भेजते हैं। तमिलनाडु के करूणानिधि एवं जयललिता जैसे नेताओं ने अब जोर पकड़ने लगी है और मामला मद्रास उच्च न्यायालय तक पहुँच गया

है। तमिलनाडु के ही वरिष्ठ नेता पी० चिदम्बरम ने 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान खुद स्वीकार किया कि ''काश ! मुझे भी हिन्दी आती, तो मैं भी नरेन्द्र मोदी को बनारस में चुनावी टक्कर दे पाता''। गुजराती मूल का होकर भी यदि श्री नरेन्द्र मोदी फर्राटेदार हिन्दी नहीं बोल पाते तो आज उनकी इतनी लोकप्रियता और जनस्वीकार्यता नहीं होती और न ही वे शायद भारत के इतने कद्दावर प्रधानमंत्री बन पाते। ये तमाम तथ्य बहुभाषिक स्थिति को प्रोत्साहित करते हैं।

3.3.4 शैक्षिक एवं आर्थिक सन्दर्भ (Educational and Economic Contexts)

आधुनिक युग में किसी भी समाज या राष्ट्र या उसके व्यक्ति के विकास का पैमाना उसका शैक्षिक एवं आर्थिक स्तर माना जाता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने एवं तीव्र आर्थिक विकास की आकांक्षा के कारण भी लोग नवीन भाषाओं या अन्य भाषाओं को सीखते और अपनाते हैं। स्वयं की भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को सीखने से नयी संभावनाओं एवं अवसरों के द्वार खुल जाते हैं और इससे उनके जीवन स्तर में परिवर्तन आता है।

शिक्षा आज मनुष्य की मूल आवश्यकताओं में गिना जाता है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाने के लिये व्यक्ति हर संभव प्रयास करता है। इस क्रम में वह उस भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपना लेता है जिसमें अच्छी शिक्षा सुलभ हो। उल्लेखनीय है कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं या बोलियों में प्रारंभिक स्तर की औपचारिक शिक्षा भी उपलब्ध नहीं होती। ऐसे में बालक को विद्यालय में विद्यालयी भाषा को अपनाना पड़ता है। पुनः उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी को उस भाषा को अपनाना पड़ता है जिसमें उस विषय का ज्ञान एवं अनुसंधान उपलब्ध होता है। इस क्रम में वह विदेशी भाषा भी सीख लेता है, परंतु अपनी भाषा का व्यवहार करना भूल नहीं जाता। इससे वह बहुभाषिक बन जाता है।

आज के भौतिकवादी युग में लगभग हर व्यक्ति अधिक से अधिक पैसे कमाकर अपना जीवन स्तर उन्नत करना चाहता है। ऐसे में वह किसी एक भौगोलिक क्षेत्र या भाषा में सिमट कर नहीं रहना चाहता; बल्कि रोजगार के बेहतर अवसर की तलाश में वह दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर नौकरी करने या बस जाने को तैयार रहता है। इस प्रक्रिया में भाषा का ज्ञान एक प्रमुख मुद्दा बनकर उभरता है और व्यक्ति उस भाषा को अपनाने एवं उसमें दक्षता हासिल करने में खुद की क्षमता लगा देता है जिसमें आर्थिक विकास की अधिकाधिक संभावनाएँ हैं। यह ट्रेंड भी बहुभाषिता को प्रोत्साहित करता है।

3.3.5 भाषाओं की हैसियत में अंतर (Difference in status of Languages)

दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा किया जाना सहज है। नॉम चॉमस्की (Noam Chomsky) के अनुसार कुछ सीमित वाक्य सुनकर असीमित वाक्यों को बोल पाना 'भाषा अर्जन क्षमता' (Language Acquisition Device, LAD) का परिणाम है। यह मस्तिष्क की जन्मजात

क्षमता है जिसके सहारे बच्चे रोज नए-नए भाषिक प्रयोग करते हैं। जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में लोग अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करते देखे जा सकते हैं। परन्तु एक ही व्यक्ति या समुदाय द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं की हैसियत में भारी फासला दिखाई पड़ता है। भारतीय समाज में भी जहाँ एक ओर अंग्रेजी, हिन्दी या कई प्रान्तीय भाषाओं को बेहद सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है वहीं दूसरी ओर अनेक भाषाओं को बहुत हेय दृष्टि से देखा जाता है। कई भाषाएँ तो ऐसी हैं जिन्हें बोलने वाले की तादाद लाखों में है, परन्तु इनकी हैसियत निम्न दर्जे की है और औपचारिक तौर पर काम या शिक्षा की भाषा के रूप में उनका प्रयोग ही नहीं किया जाता। मेवाड़ी, भीली, निमाड़ी, सदरी आदि ऐसे ही भाषा है। कुछ भाषाओं की हैसियत तो ऐसी है कि लोग उसका नाम तक लेने में कतराते और शर्माते हैं, यद्यपि वह उनकी मातृभाषा है। जबकि अंग्रेजी में कुछ पंक्तियाँ बोल लेना पढ़े-लिखे होने का प्रमाण माना जाता है। इसलिए भारतीय बहुभाषिता को अक्सर 'असमानों की बहुभाषिता' भी कहा जाता है (मोहंती, 2004)

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि किसी भाषा की हैसियत चिरस्थायी नहीं होती और वह कालक्रम में बदल जाती है। उदाहरण के लिए अति प्राचीन काल या वैदिक युग में भारत में संस्कृत की प्रतिष्ठा सर्वाधिक थी, जबकि आमजन पालि, प्राकृत आदि भाषाओं का प्रयोग करते थे। जैनधर्म और बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार ने जब आन्दोलन का रूप लिया और उसे राजसत्ता का समर्थन मिलना आरंभ हुआ तो इन भाषाओं को प्रतिष्ठा मिली। पुनः गुप्तकाल में राजसत्ता के समर्थन एवं कालिदास जैसे विद्वानों ने संस्कृत को पुनः प्रतिष्ठित किया। इसी प्रकार मध्यकाल में मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ अरबी, फारसी, उर्दू आदि भाषाओं की हैसियत बढ़ गयी। जब अंग्रेजों ने अंग्रेजी को राजभाषा घोषित किया तो अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ भाषा का दर्जा दिया जाने लगा। यह स्थिति आजादी के बाद भी कायम रही। परन्तु हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किये जाने के साथ-साथ सम्पर्क भाषा एवं राजकाज की भाषा के रूप में इसकी हैसियत भी बढ़ती चली गयी। आज वोट की राजनीति में, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में तथा मुम्बई के सिनेमा में हिन्दी के छा जाने के कारण हिन्दी का महत्त्व सभी स्वीकारने लगे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषाओं की हैसियत भी परिवर्तनशील होती है।

3.3.6 विज्ञान एवं तकनीकी का प्रभाव (Influence of Science and Technology)

आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। यातायात एवं संचार के विकसित साधनों ने आज पूरी दुनिया को एक-दूसरे के बहुत करीब ला दिया है। नित्य नये-नये खोज एवं आविष्कार का लाभ दुनिया के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक पहुँचाने में भाषा की भूमिका भी प्रमुख होती है। ज्ञान-विज्ञान के आधुनिक युग में अंतरिक्ष विज्ञान (Space Science), कम्प्यूटर या इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में ज्यादातर खोज एवं आविष्कार अंग्रेजी की पृष्ठभूमि रखनेवाले वैज्ञानिकों ने किया। ऐसे में अंग्रेजी के प्रति झुकाव स्वाभाविक हो जाता है। आज भी भारत में IIT, AIIMS, IIM या इसरो जैसे श्रेष्ठ संस्थानों में अंग्रेजी के बिना काम करना

असंभव प्रतीत होता है। संचार क्रांति के इस युग में इंटरनेट की भाषा में अंग्रेजी की प्रमुखता है, नवीन अनुसंधाान अंग्रेजी में हो रहे हैं। इस प्रकार अंग्रेजी जिनकी अपनी भाषा नहीं है, वे भी ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में इसे सीखकर बहुभाषी बन जाते हैं।

3.3.7 बहुभाषिता के लाभ (Advantages of Multilingualism)

मनुष्य के सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक या भावात्मक विकास में भाषा की भूमिका अहम होती है। एकाधिक भाषाएँ सीखने से व्यक्ति के ज्ञान-क्षेत्र का विकास हो जाता है। इससे उसके कार्य-क्षेत्र का भी विस्तार हो जाता है। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति के सम्पर्क का दायरा बढ़ जाता है। वह उस भाषा के जानकार लाखों लोगों से अंत:क्रिया कर सकता है जो उस भाषा का प्रयोग करते हैं। जब व्यक्ति दूसरी भाषाओं का उपयोग करने वाले व्यक्ति के सम्पर्क में आता है तो उससे भावात्मक रूप से जुड़ने लगता है और उसके प्रति उसमें उदारता तथा सहनशीलता की मात्रा बढ़ जाती है। ऐसे व्यक्ति की सोच में व्यापकता आने लगती है। चार्लीमैग्ने (Charlemagne) के अनुसार-''एक अन्य भाषा का होना दूसरी आत्मा को रखना है।'' (To have another language is to possess a second soul.)

मानव में बहुभाषिता कोई दुर्लभ या अपवाद वाली चीज नहीं है, बल्कि एक से अधिक भाषाओं को जानने-समझने की योग्यता मनुष्य की जन्मजात क्षमता है। विवियन कुक के अनुसार-''उपयुक्त वातावरण मिलने पर दो भाषाओं का होना उतना ही सामान्य है जितना कि दो फेफड़ा होना।'' (Given the appropriate environment, two languages are as normal as two lungs.)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी अनगिनत आवश्यकताएँ हैं। अपनी आवश्यकताओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु वह अपने घर-परिवार या गाँव-नगर-जिला तक ही सीमित नहीं होता; बल्कि दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक भी धर्म, संस्कृति, भाषा एवं देश की सीमाओं को लाँघकर आता-जाता है। विज्ञान और तकनीकी के विकास एवं सूचना-संचार के साधनों में क्रांति आने के बाद जो वैश्वीकरण या भौगोलिकरण की स्थिति पैदा हुई है, इसने अनेक प्रकार रोजगार, व्यापार एवं नौकरियों के अवसर पैदा किया है। ऐसे में एक-दूसरे के भाषा का ज्ञान न सिर्फ सम्पर्क का साधन बनता है बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संभावनाओं का द्वार भी खोलता है।

भाषाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों के अनुसार द्विभाषी या बहुभाषी व्यक्ति एक ही समय में दो या दो से अधिक भाषाओं में काम लेते हैं। यह उनके मस्तिष्क को और सोचने-विचारने की क्षमता को और अधिक लचीला बना देता है। ऐसे व्यक्ति एक ही भाषा बोलने वालों की तुलना में एक काम से दूसरे काम में जाने में अथवा 'मल्टीटास्किंग' में ज्यादा बेहतर होते हैं। बहुभाषी लोगों में सृजनात्मक प्रवृत्ति भी अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है।

भारत में किए गए एक शोध (मोहंती, 1994) में पाया गया कि द्विभाषी कोंड आदिवासी बच्चे

जो स्कूल में दाखिले के बाद अपनी मातृभाषा 'कुई' के साथ-साथ कुछ उड़िया भी बोलने लगे थे, उनका प्रदर्शन संज्ञानात्मक गतिविधियों में दूसरे बच्चों से बेहतर रहा और उनके पास ऐसे कोंड बच्चों के मुकाबले बेहतर पराभाषायी क्षमता भी थी जो स्कूल में दाखिले के समय केवल उड़िया जानते थे।

ज्ञान एवं साहित्य की बात करें तो हरेक भाषा की अपनी खास विशेषताएँ हैं, उसके साहित्य की अपनी सुन्दरता होती है। संस्कृत में रचित वेद, उपनिषद्, महाभारत या कालिदास की रचनाओं की जो सुन्दरता संस्कृत में है उसे हुबहू अन्य किसी भाषा में उतारा नहीं जा सकता। इसी प्रकार शेक्सपीअर या मिल्टन की रचनाओं को अनुवाद करके पढ़ने में वह मजा नहीं है, जो उसे अंग्रेजी के मूल रूप में पढ़ने में मजा है। रामचरितमानस या मधुशाला को पढ़ने का आनन्द एवं रस भी किसी अनुवादित भाषा में नहीं मिल सकती। इसलिए बहुभाषी लोग ही एक से अधिक भाषा के ज्ञान या साहित्य से पूरा-पूरा लाभ ले पाते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि अनुवाद करने के लिए भी द्विभाषी या बहुभाषी होना अनिवार्य हो जाता है।

बहुभाषित से होने वाले विभिन्न लाभों को हम निम्नलिखित चार्ट से समझ सकते हैं :-

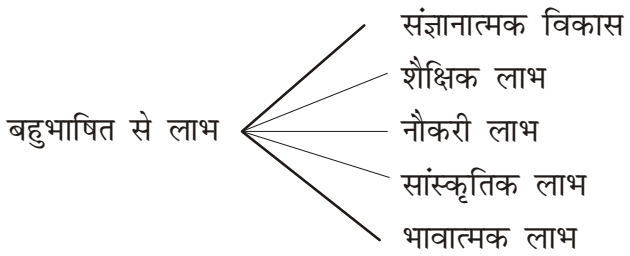

इस प्रकार हम पाते हैं कि बहुभाषिता से सामाजिक सम्पर्क को बढ़ावा मिलता है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान सुलभ हो जाता है, ज्ञान-विज्ञान के विकास में सहायता मिलती है, रोजगार का सृजन होता है, व्यापार की प्रगति होती है तथा विभिन्न साहित्य के रसास्वादन का आनन्द मिलता है। इससे भाषायी विविधता को संरक्षण मिलता है तथा भाषा को लेकर उत्पन्न होने वाले तनाव या संघर्ष से भी बचा जा सकता है।

3.3.8 बहुभाषिता: ताकत या कमजोरी (Multilingualism : Strength or Weakness)

बहुभाषिता आज दुनिया के ज्यादातर देश एवं समाज की सच्चाई है और यह वर्तमान की जरूरत भी है। वैश्वीकरण एवं भौगोलीकरण के युग में कोई भी देश या समाज पूरी तरह से पृथक होकर नहीं रह सकता। अगर कोई देश या समाज पृथक या अकेला रह जाएगा तो उसका विकास कतई संभव नहीं होगा और वह एक तरह से आदिम मानव का समूह बनकर रह जाएगा। ऐसे में बहुभाषिता को ताकत मानना ही समझदारी है। ऐसा इसलिए भी कि दुनिया की कोई ताकत चाहकर भी पूरी दुनिया में एक भाषा को स्थापित

नहीं कर सकती। कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि एक ही भाष्साा हो तो सबलोग एक-दूसरे को समझ सकेंगे, एक-दूसरे के साथ काम करना आसान हो जाएगा, लेकिन यह धारणा केवल कल्पनाओं में सत्य हो सकती है यथार्थ में नहीं। भारत तो हमेशा से विविधताओं से भरा देश रहा है। भाषायी विविधता के मामले में भी भारत की स्थिति सर्वाधिक समृद्ध है। भारत की पहचान विविधता में एकता को लेकर है। विभिन्न भाषा भाषी लोगों में जो भावात्मक एकता है, वही इस देश की ताकत है।

भाषा कोई भी हो, अगर उसके अस्तित्व व स्वरूप पर चिंतन किया जाए तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि भाषा केवल सम्पर्क का साधन नहीं है, अपितु यह पूरे समुदाय के इतिहास और उसकी संस्कृति का स्रोत भी है। एक भाषा के मरने या लुप्त होने के साथ ही उस समाज की संरचना के बारे में मुकम्मिल समझ, धारणा और अनगिनत मौलिक एहसास भी मर जाते हैं। इस तरह का नुकसान ऐसा नुकसान है, जिसकी भरपाई कभी संभव नहीं है; क्योंकि इसके साथ ही उस समाज की सम्पूर्ण स्मृति, उसकी रीति-नीति आदि सबका लोप हो जाता है। जिस प्रकार दुनिया के विभिन्न अंचल में विविध प्रकार की जलवायु, प्राकृतिक दृश्य, जीव-जन्तु एवं वनस्पतियाँ धरती को सुन्दर और संतुलित बनाते हैं, उसी प्रकार भाषाओं और संस्कृति की विविधता में मानव जीवन का सौन्दर्य निहित हैं। इसलिए बहुभाषिता को एक ताकत के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है, न कि कमजोरी के रूप में।

बहुभाषिकता में निहित इस सन्दर्भ को जब भी और जहाँ भी नकारने की कोशिश की गयी है, वहाँ विनाशकारी तनाव एवं संघर्ष उत्पन्न हुआ है और वहाँ के लिए बहुभाषिकता कमजोरी साबित हुई है। जिस समय 1947 में भारत की आजादी मिली, उसी समय धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर एक नवीन देश पाकिस्तान का जन्म हुआ। पाकिस्तान अपनी आजादी का 25वाँ वर्षगाँठ भी नहीं मना पाया कि 1971 में भाषाई मतभेद के कारण यह दो भागों में बँट गया और पूर्वी पाकिस्तान उससे अलग होकर बांग्लादेश बन गया। इसके पीछे भाषायी अस्मिता का सवाल एक बड़ा कारण था। पश्चिमी पाकिस्तान जो अब पाकिस्तान के रूप में जाना जाता है, वे बहुसंख्यक थे और उर्दू भाषा का प्रयोग करते थे जबकि पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान में बांग्लादेश) के लोग बंगला भाषा बोलते थे और उनका मानना था कि वे भाषाई भेदभाव का शिकार हो रहे थे। भारत के लिए बहुभाषिता कभी भी कमजोरी साबित नहीं हुई और भाषा को लेकर बड़े तनाव या संघर्ष का बात सामने नहीं आयी।

स्वतंत्र भारत की सरकार एवं यहाँ के संविधान ने भाषायी विविधता की स्थिति को कभी यहाँ के लिए कमजोर नहीं बनने दिया; बल्कि सांस्कृतिक एवं भाषाई साझेदारी के बदौलत यह देश न सिर्फ दक्षिण एशिया में, बल्कि पूरी दुनिया में विविधता में एकता के लिए जाना गया। प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए 1956 में भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ और यह बिना किसी विद्वेष या संघर्ष के द्वारा हुआ। हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी को राजकाज की भाषा घोषित करना भी भारत में भाषा

संबंधी आशंकाओं को दूर करने की दिशा में एक कदम था। हिन्दी या किसी भाषा को किसी क्षेत्र/प्रान्त या व्यक्ति पर थोपने का प्रयास कभी नहीं किया गया, बल्कि सभी को उसके धर्म, भाषा एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार का अधिकार दिया गया। इसलिए प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रो० रमाकान्त अग्निहोत्री कहते हैं कि -''बहुभाषिता भारत के लिए कोई समस्या न होकर एक सम्पदा है।''

1956 में भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया जा रहा था, उसी समय श्रीलंका की संसद ने एक कानून पारित कर सिंहला भाषा को देश की राजभाषा का दर्जा दे दिया और अल्पसंख्यक तमिल भाषा बोलने के हित के साथ कुठाराघात किया। फलतः पूरा देश गृहयुद्ध की आग में दशकों तक जलता रहा। इस मामले में बेल्जियम (यूरोपीय देश) का उदाहरण पूरी दुनिया के लिए अनुकरणीय है। इसकी राजधानी नगर ब्रुसेल्स में 80 प्रतिशत फ्रेंच बोलने वाले लोग हैं जबकि 20 प्रतिशत डच भाषा बोलने वाले। राजधानी क्षेत्र के बाहर 59 प्रतिशत लोग डच बोलते हैं, 39 प्रतिशत फ्रेंच और शेष 1 प्रतिशत जर्मन भाषा का उपयोग करते हैं। आर्थिक रूप में फ्रेंच बोलने वाले पहले से विकसित थे जबकि डच बोलने वालों का विकास बीसवीं सदी के मध्य में हुआ। कुछ वर्ष तो सत्ता और शक्ति को लेकर दोनों में तनाव हुए मगर 1970 से 1993 के बीच चार बार संविधान में संशोधन कर इन्होंने ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा दिया, जिससे उस देश में सभी को तरक्की करने और निर्णय की प्रक्रिया में भागीदारी का मौका मिले, दादागीरी किसी की नहीं चले। इससे वहाँ शांतिपूर्ण माहौल में सबको आगे सम्मानजनक महत्व दिया गया। इससे तनाव स्थायी रूप से समाप्त हो गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि बहुभाषिता या भाषायी विविधता अपने आपमें कोई ताकत या कमजोरी नहीं होती, यह उस देश की नीतियों एवं कार्यक्रमों पर निर्भर करता है।

3.3.9 भारत में बहुभाषावाद (Multilingualism in India)

भारत प्राचीनकाल से ही बहुभाषायी राष्ट्र रहा है और यहाँ विभिन्न क्षेत्र में निवास कर रही विभिन्न आदिम जनजातियाँ भिन्न-भिन्न भाषाओं का उपयोग करती रही। आर्यों के संबंध में एक मजबूत धारणा यह भी है कि ये पश्चिमी एशिया (कैस्पियन सागर के आसपास के क्षेत्र) से आकर सिन्धु नदी और उसके आसपास के क्षेत्र (आधुनिक भारत एवं पाकिस्तान का पंजाब प्रान्त) में आकर बसे। बाद में ये गंगा के मैदान वाले क्षेत्र में अपना प्रभुत्व कायम कर लिये। आर्यों ने प्राचीन काल में संस्कृत भाषा को प्रतिष्ठित कर ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाया और इस भाषा में अनेक ग्रंथों (वेद, पुराण, उपनिषद्, महाभारत आदि) की रचना की।

उस समय पालि, प्राकृत जैसी भाषाएँ जनभाषा के रूप में प्रचलित थी, जिसका जैन एवं बौद्ध धर्मावलम्बियों ने प्रचार-प्रसार किया। पुनः मध्यकालीन भारत में विदेशी आक्रमणकारियों तथा धर्म-प्रचारकों का जब हस्तक्षेप बढ़ा तो वे भी अपनी भाषा को यहाँ लाने एवं प्रतिष्ठित करने में सफल रहे। अंग्रेजों के

आगमन के साथ ही भारतीयों ने तेजी से अंग्रेजी सीख ली। अंग्रेजी सीखक इन लोगों को न सिर्फ सरकारी पद और पैसा मिलना शुरू हुआ, बल्कि समाज में भी ये उच्च प्रतिष्ठा की नजर से देखे जाने लगे। अंगेजी सीखे ऐसे लोग आजादी के बाद तक भी अपनी अगली पीढ़ियों को अंग्रेजी सिखाते रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी का राजकाज की भाषा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान या उच्च शिक्षा (खासकर विज्ञान विषयों) की भाषा के रूप में प्रभुत्व कायम रहा।

स्वतंत्र भारत में जब पहली बार भाषा आधारित जनगणना हुई तो देश में कुल 1652 मातृभाषाओं का पता चला था, लेकिन सन् 1971 में एक नई परिभाषा के साथ भाषाओं का सर्वेक्षण किया गया, जिसके अनुसार 10,000 से ज्यादा लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा को 'कट ऑफ प्वाइंट' के रूप में स्वीकारा गया था। इसके चलते भाषाएँ सिमटकर 182 रह गईं, बाद में सन् 2001 में भाषाओं की यह संख्या सिमटकर 122 ही रह गई। इससे अर्थ निकलता है कि पिछले एक सौ साल या कुछ दशकों में ही सैंकड़ों की तादाद में भाषाएँ हमेशा-हमेशा के लिए विलुप्त हो गई। दो तरह की भाषाएँ भारत में सबसे ज्यादा लुप्त हुई हैं। एक तो वो, जो तटीय क्षेत्रों में बोली थीं, लेकिन सी-फार्मिंग में बदलती हुई तकनीक के कारण ये बड़ी संख्या में लुप्त हो गयी। इसके अलावा वो भाषाएँ भी इन कुछ वर्षों में बहुत तेजी से लुप्त हुई हैं जो अनधिसूचित कोटि के समुदाय, जैसे-बंजारा समुदाय द्वारा बोली जाती थी। असल में ये तमाम लोग अब शहरों में आकर अपना पहचान के समुदाय, जैसे-बंजारा समुदाय द्वारा बोली जाती थी। असल में ये तमाम लोग अब शहरों में आकर अपनी पहचान छिपाने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए ये सभी अन्य लोगों से अपनी भाषाओं में बात नहीं करते और धीरे-धीरे इनकी भाषाएँ हमेशा-हमेशा के लिए समाप्तप्राय हो जाती हैं।

उपरोक्त तथ्यों के बावजूद भाषाओं को विविधता के मामले में भारत की गिनती सबसे समृद्ध राष्ट्रों में होती है। भारत के संबंध में यह समझ लेना आवश्यक है कि भारत उस तरह का यूरोपीय राष्ट्र-राज्य नहीं है, जिसे एक पहचान में बाँधा जा सके। भारत को किसी यूनीफॉर्म राष्ट्रभाषा की आवश्यकता नहीं है। विविधता भारत को संस्कृति रही है और बहुभाषिता यहाँ के लोगों की जीवनशैली। ऐसे में किसी एक ही भाषा के विकास की बात करना यहाँ बेमानी होगी।

सन् 1918 में महात्मा गाँधी ने हिन्दी को जनमानस की भाषा कहा और इसे देश की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु भाषायी विविधता से पूर्ण इस देश में इस बात पर सहमति बनाना बहुत मुश्किल था कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित की जाए। 13 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा की बैठक में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि किसी विदेशी भाषा के माध्यम से कोई देश महान नहीं बन सकता, क्योंकि कोई भी विदेशी भाषा आम लोगों की भाषा नहीं बन सकती है। अगले ही दिन 14 सितम्बर को लंबी बहस के बाद संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी भारत की

राजभाषा (राष्ट्रभाषा नहीं) होगी। भारतीय संविधान के अध्याय 17 के अनुच्छेद 343 के अनुसार-''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।'' हिन्दीतर भाषी राज्यों के लोगों ने इसका विरोध किया, क्योंकि हिन्दी के व्यवहार में वे सक्षम नहीं थे। इसलिए संविधान के अनुच्छेद 343(2) के तहत केवल 15 वर्षों के लिए (अर्थात् 1965 तक) यह व्यवस्था की गयी कि हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भी राजकाज की भाषा रहेगी, ताकि इस दौरान हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो सके। लेकिन 1965 में संसद में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि सभी सरकारी कार्यों में हिन्दी का व्यवहार होगा, पर साथ ही अंग्रेजी का भी सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग होता रहेगा। पुनः 1967 में संसद में पारित 'भाषा संशोधन विधेयक' के द्वारा राजकाज में अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया गया। इस फैसले का असर यह हुआ कि आजादी के बाद भी अंग्रेजी न सिर्फ सत्ता की भाषा बनी रही है बल्कि उच्च शिक्षा और रोजगार के माध्यम के रूप में भी अंग्रेजी को प्रतिष्ठा मिली। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोलने एवं उसमें अपने बच्चों को दाखिला दिलाने की होड़ लग गयी।

भारत की भाषायी स्थिति को देखते हुए संविधान के अनुच्छेद 29(1) के तहत भारत में हर व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के अध्ययन व संरक्षण का मौलिक अधिकार प्राप्त है। वर्तमान समय में भारतीय संविधान (8वीं अनुसूची) द्वारा मान्यता प्रापत भाषाओं की कुल संख्या 22 है, जिसमें और भी भाषाओं को शामिल करने की माँग होती रही है। हालांकि अनुच्छेद 350ए के अनुसार राज्य व स्थानीय निकायों को स्थानीय भाषा में भाषाई अल्पसंख्यकों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में उपलब्ध कराने का जिम्मा सौंपा गया है।

भारत की इस भाषायी स्थिति के कारण भी बहुभाषिता को बढ़ावा मिला; क्योंकि अधिकतर व्यक्ति के जीवन में एक प्राचीन भाषा (जैसे-संस्कृत), एक राष्ट्रभाषा, एक अंग्रेजी, एक प्रान्तीय भाषा, एक मातृभाषा या अन्य बोली ने स्थान लिया है। भारत की भाषाई संरचना एवं विविधता को ध्यान रखते हुए अनेक विद्वानों ने यहाँ की सभी भाषाओं को तीन मुख्य श्रेणियों अथवा 'भाषा परिवारों' में विभाजित किया गया है, ये हैं- 1. इण्डो-आर्यन भाषाएँ, 2. द्रविड़ियन भाषाएँ तथा 3. ऑस्ट्रिक भाषाएँ। इसके अतिरिक्त दो अन्य भाषा परिवारों का भी उल्लेख किया जाता है, जिन्हें 'तिब्बती-बर्मी' भाषाएँ और छोटी भाषाएँ कहा गया है।

1. **इण्डो-आर्यन भाषाएँ**–इसके अतिरिक्त 12 भाषाएँ आती हैं, जिनमें सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है। ये वैसी भाषाएँ हैं जिनका विकास भारत में आर्यों के प्रभाव से हुआ। ये भाषाएँ भारत के सर्वाधिक क्षेत्रों में बोली जानेवाली भाषाएँ हैं। इसके अन्तर्गत हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, असमिया, ओड़िया, सिन्धी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी, हिमाली आदि भाषाएँ आती हैं।

2. **द्रविड़ भाषाएँ**–इनका प्रभाव मुख्य रूप से दक्षिण भारत में है। भारतीय संविधान में चार द्रविड़ भाषाओं-तेलुगू, तमिल, मलयालम एवं कन्नड़ को मान्यता प्राप्त है। गोण्डी भी द्रविड़ भाषा है।

3. **ऑस्ट्रिक भाषाएँ**–भारत में ऑस्ट्रिक भाषाएँ कई समूहों में विभाजित है। मध्य और पूर्वी भारत जैसे छोटानागपुर, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और बंगाल में मुण्डा या कोल भाषा बोली जाती है। इस क्षेत्र में अनेक बोलियाँ भी बोली जाती हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी जैसे-खासी और जयन्तिया पहाड़ियों में रहनेवाली जनजातियाँ भी इसी परिवार की भाषा बोलती हैं।

4. **तिब्बती-बर्मी भाषाएँ**–इसके अन्तर्गत तीन मुख्य भाषाएँ आती हैं। मणिपुरी भाषा मणिपुर में बोली जाती है। 'नेवाड़ी' भाषा को नेपाल से आकर भारत में बसे हजारों लोग बोलत हैं तथा 'लेपचा' भाषा सिक्किम, दार्जिलिंग तथा नेपाल से लगे कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

5. **छोटी भाषाएँ**–ये अनेक भाषाओं के समावेश से बनी भाषाएँ हैं जो अण्डमान, निकोबार, दमन, गोआ तथा समुद्रतटीय क्षेत्रों में बोली जाती है, जैसे-निकोबारी, चीनी, पुर्तगाली, फ्रेंच, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी आदि। अंग्रेजी तो भारत में शिक्षित अभिजात वर्ग की भाषा हो चुकी है, जबकि अन्य भाषाओं का प्रभाव बहुत सीमित हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत एक बहुभाषाई राष्ट्र है और यहाँ के अधिकतर नोरिक बहुभाषी हैं। भाषाओं पर आाधारित जनगणना का अवलोकन करें तो हिन्दी के बाद क्रमशः बंगला तथा तेलुगू भाषा बोलनेवालों की संख्या सर्वाधिक है। हिन्दी या उसकी बोलियों का प्रयोग 40 प्रतिशत से भी अधिक लोग करते हैं। विभिन्न भाषाओं का आधार यहाँ इतना मजबूत है कि आजादी से पूर्व ही भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की माँग होने लगी थी। अक्टूबर, 1953 में भाषा के आधार पर ही सर्वप्रथम आन्ध्रप्रदेश राज्य का गठन किया गया। पुनः राज्य पुनर्गठन कानून, 1956 (States Reorganisation Act, 1956) के पारित होने से राज्यों या केन्द्रशासित प्रदेश की सीमाओं को तय करने वाला सबसे बड़ा कारक भाषा बन गयी। इसके पीछे सबसे बड़ा तर्क यह था कि एक भाषा बोलने वालों को एक प्रशासनिक इकाई के तहत रखा जाएगा तो राजकाज में सुविधा होगी। हालांकि भाषा संबंधी दुविधा इस हद तक कायम रही कि खुद केन्द्र सरकार कभी 'द्विभाषा फार्मूला' तो कभी 'त्रिभाषा फार्मूला को अमल में लाने की बात करती रही। फिर भी कोठारी आयोग (1964-66) या नई शिक्षा नीति (NPE) 1986 की बात करें तो शिक्षा-आयोगों ने भारत के बहुभाषिक संरचना को मजबूत करने की अनुशंसा करते हुए 'त्रिभाषा सूत्र' का समर्थन किया। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2005 (NCF, 2005) में भी भाषा पाठ्यचर्या की चर्चा करते हुए स्वीकार किया गया है कि द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होते हैं। 'त्रिभाषा-फार्मूला' भारत की भाषागत स्थिति की चुनौतियो और अवसरों को संबोधित करने का एक प्रयास है।

भारत में जहाँ इतनी भाषायी विविधता है, वहाँ भाषा या भावात्मक एकता को लेकर कुछ तनाव या समस्याएँ स्वाभाविक हैं। बहुत लोग भाषायी विभिन्नता को भी एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मानते रहे हैं तथा इसे पृथकतावाद या अलगाववाद के लिए उत्तरदायी मानते हैं। फिर भी भाषाई भिन्नता के कारण भारत में कोई बड़े संघर्ष लेना शुरू कर देती है जब कोई राजनैतिक दल और खासकर क्षेत्रीय राजनैतिक दल अपनी राजनीति को चमकाने के लिए वोट की राजनीति के तहत अलगाव एवं संघर्ष की बात करने

लगते हैं। वे भारत के विविधतापूर्ण स्वरूप को नकारकर अपनी ही राजनीति की रोटी सेंकने लग जाते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता खण्डित होती है। अत: भाषा समस्या के समाधान हेतु आवश्यक है कि इस देश के बहुभाषी स्वरूप का आदर किया जाए। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को देश के अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी बढ़ावा दिया जाए, प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम प्रान्तीय मातृभाषा हो, अल्पसंख्यकों की भाषा को भी संरक्षण मिले तथा अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी फलने-फूलने का पर्याप्त अवसर मिले।

3.5 बहुभाषी कक्षा-कक्ष की चुनौतियाँ (Challenges of Multilingual Class-room)

बहुभाषी कक्षा-कक्ष से तात्पर्य वैसी कक्षा से है जिसके शिक्षार्थी या अध्येता पहली भाषा के रूप में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रयोग करते हैं। ऐसी कक्षा में अध्येताओं की पहली भाषा या मातृभाषा एक नहीं होती। उदाहरण के लिए भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई की एक कक्षा का प्रसंग लेते हैं। यहाँ शिक्षित अभिजात वर्ग या एंग्लो-इंडियन परिवार के कुछ बच्चे हैं जिनके परिवार में अंग्रेजी बोली जाती है, मराठी परिवार के बच्चे सबसे ज्यादा हैं जिनकी प्रथम भाषा मराठी है तथा रोजी-रोटी की तलाश में या नौकरी-पेशा हेतु या व्यापार हेतु आये उत्तर भारत के प्रान्तों के भी बच्चे हैं जिनकी मातृभाषा हिन्दी या उससे मिलती-जुलती कोई बोली है। इक्के-दुक्के बच्चे ऐसे भी हैं जिनकी प्रथम भाषा तेलुगु, तमिल, कन्नड़ या बंगाली है। महाराष्ट्र के समुद्री तट पर बसे अनेक परिवार में पारसी बोली जाती है तो गोवा या दमन से आये कुछ परिवारों में पुर्तगाली का प्रचलन है। इस कक्षा में एक बालक ऐसा भी है जिसके पूर्वज ईराक या ईरान से आकर यहाँ बस गये और उनके बीच अरबी भाषा प्रचलित है। इतना ही नहीं इसी कक्षा में एक-दो बच्चे उस परिवार से भी आते हैं जिसके पूर्वज किसी आदिवासी समाज के अंग थे और आर्थिक रूप से सबल होने के उपरांत वे शहर में आकर बस गये और अपनी पहचान छुपाने हेतु वे अपनी मातृभाषा का नाम तक नहीं लेना चाहते। ऐसे बहुभाषी कक्षा-कक्ष में शिक्षण या अधिगम की समस्याएँ बड़ी जटिल हैं।

शैक्षिक, व्यापारिक एवं तकनीकी उन्नति के साथ ही भूमंडलीकरण के इस युग में भाषाओं की सीमाएँ बेमानी पर हो गई हैं। ऐसे में उच्च शिक्षा या उत्तम शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्र अब प्रान्त, राष्ट्र एवं भाषा-संस्कृति की सीमा को लाँघकर दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक जाने में भी संकोच नहीं करते। यूरोप, अमेरिका जैसे विकसित देशों के विश्व प्रसिद्ध शिक्षा-संस्थानों में तो एक ही कक्षा में दर्जनों देश के विद्यार्थी बैठे होते हैं। ऐसे में बहुभाषी कक्षा यहाँ आम बात हो जाती है। इसी प्रकार भारत के आई०आई०टी० या एम्स या आई०आई०एम० जैसे संस्थानों में भी पूरे भारत से छात्र पहुँचते हैं, जिनकी मातृभाषा अलग-अलग होती है। ये भी बहुभाषी कक्षा के उदाहरण हैं जहाँ भाषा को लेकर भी कई समस्याएँ आती हैं।

धीर झिंगरन (2009) ने भारत की इस बहुभाषी स्थिति में प्रारंभिक शिक्षा में आनेवाली समस्याओं पर लम्बे समय तक अध्ययन कर अनेक ऐसा केस स्टडी प्रस्तुत किया जहाँ एक ही कक्षा में विभिन्न भाषाओं को बोलने-समझने वाले बच्चे बैठ होते हैं तो कितनी समस्याओं से एक छात्र और शिक्षक को जूझना पड़ता है। इसी प्रकार लैंग्वेज और लैंग्वेज टीचिंग, जुलाई 2015 में निवेदिता विजय बहादुर ने भी ऐसे केस स्टडी प्रस्तुत किए हैं जिनमें एक ही कक्षा में कुछ बच्चे थारू बोलते हैं तो कुछ पंजाबी, कुछ की बोलचाल की भाषा हिन्दी है, जबकि अध्यापक सिर्फ हिन्दी ही बोलते हैं।

जब रोजी-रोजगार या व्यापार के स्थान में बदलाव होता है या युद्ध के माहौल में माइग्रेशन के कारण जो कठिनाई आती है, उससे सबसे ज्यादा बच्चे जूझते हैं और उसका व्यापक और दूरगामी प्रभाव वैसे बालक की शिक्षा में महसूस किया जाता है। जब किसी बालक के घर की भाषा अलग हो, उसके सहपाठी उससे अलग भाषाएँ बोलते हों, शिक्षक की भाषा अलग और शिक्षा, परीक्षा आदि की भाषा अलग हो, उसके सहपाठी उससे अलग भाषाएँ बोलते हों, शिक्षक की भाषा अलग और शिक्षा, परीक्षा आदि की भाषा अलग हो तो ऐसे में शिक्षा और कक्षा में जटिल समस्याएँ आती हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं में समझा जा सकता है :-

- जब ऐसी बहुभाषी कक्षा में किसी छात्र की भाषा उसके सहपाठी नहीं जानते-समझते हैं, शिक्षक भी उसकी भाषा से अपरिचित होते हैं तब वैसा छात्र अपनी कक्षा में स्वयं को अलग-थलग महसूस करने लगता है और उसके साथी-सहपाठी भी उससे कटने लगते हैं। स्थिति उस बालक के लिए और भी दु:खद हो जाती है, जब शिक्षक या विद्यालय प्रबन्ध न उस बालक को मन्द बुद्धि का बालक मान लेता है और उसकी समस्याओं को समझने का प्रयास भी छोड़ देता है।
- बच्चों में स्कूली भाषा की समझ का स्तर सीमित या औसत तक होता है तो उसका बड़ा समय एवं ऊर्जा का अपव्यय उस भाषा को ही समझने में लग जाता है, जिसके कारण उसके ज्ञान-विज्ञान या गणित का स्तर कमजोर हो जाता है।
- यदि शिक्षक की भाषा को विद्यार्थी नहीं समझता है तो अनुदेशन का परिणाम शून्य हो जाता है। कभी-कभी वैसी स्थिति में शिक्षक विद्यार्थी को डाँट-फटकार भी देते हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी पर नकारात्मक असर पड़ता है और वह विद्यालय और शिक्षक से दूर भागने लगता है। कभी-कभी तो ऐसी स्थिति में बालक हमेशा-हमेशा के लिए पढ़ाई छोड़ देता है।
- यदि विद्यार्थी की भाषा को शिक्षक नहीं समझते हैं तो इस स्थिति में वे विद्यार्थी को होने वाली समस्याओं से अंजान रह जाते हैं और विद्यार्थी के साथ उनका भावनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाता।

- भाषा को नहीं समझने से उत्पन्न हुई कठिनाई के कारण विद्यार्थी पढ़ाई में पिछड़ने लगता है जो अंततः छीजन का कारण बनता है।
- भाषायी विविधता के साथ यह भी सत्य है कि अपने यहाँ भाषाओं की हैसियत को लेकर भी काफी भेद है। ऐसे में बहुभाषी कक्षा में कुछ बच्चे तो ऐसे होते हैं जो अपनी पहली भाषा या मातृभाषा में कुछ भी बोलने या पूछने से भी कतराते हैं, परिणामस्वरूप उनकी अंतःक्रिया अन्य छात्र या शिक्षकों से नहीं हो पाती और वे हीन भावना का शिकार होकर रह जाते हैं।
- विद्यालयी पाठ्यक्रम या उससे भी अधिक पाठ्यपुस्तक की संरचना ऐसी होती है जैसे वह समान भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए तैयार की गई हो, ऐसे में बहुभाषिक कक्षा में सभी छात्र उस पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक के साथ खुद को सहज महसूस नहीं करते। इससे उनके अधिगम का स्तर प्रभावित होता है।
- भारत के अधिकतर शहर और अब तो नगर या उपनगर में भी ऐसे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुल गए हैं, जो 'इंटरनेशनल लेवल मेनटेन' करने के नाम पर अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त अपने विद्यालय में किसी और भाषा का उपयोग छात्र, शिक्षक या शिक्षकेतर कर्मचारी को करने ही नहीं देते। यहाँ भी खासकर छोटे बच्चों को अधिगम में कठिनाई होती है क्योंकि उनमें से ज्यादातर बच्चों की समझ की भाषा हिन्दी या कोई क्षेत्रीय/प्रान्तीय भाषा होती है। लिखने या बोलने के समय छात्र पहले उसके बारे में अपनी भाषा में सोचता है, फिर उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर व्यवहार करता है। अर्थात् शिक्षा में या परीक्षा में लिखने की भाषा और साक्षात्कार में बोलने की भाषा अंग्रेजी भले ही हो गयी हो, आज भी बच्चों के सोचने, समझने या विचार करने की भाषा अंग्रेजी नहीं है बल्कि हिन्दी या कोई अन्य स्थानीय भाषा ही है। इसी कठिनाई को समझकर जो निदान करने का प्रयास हुआ है, आप इन्टरनेट या यू-ट्यूब पर ऐसी ढ़ेर सारी वीडियो-कक्षाएँ पाएँगे, जहाँ विभिन्न विषयों में ज्ञान-विज्ञान की बातें शिक्षकों द्वारा अंग्रेजी में लिखी जाती है; परन्तु उसको बोलकर हिन्दी में समझाया जाता है। जो अभिभावक इन बातों को समझते हैं, उनके समक्ष भी बच्चों के लिए कोई बेहतर विकल्प नहीं दिखता, इसलिए वे भी 'एक विद्यालय-एक माध्यम' (अंग्रेजी) को अपनाने को बाध्य होते हैं।

बिहार के सन्दर्भ में देखें तो किसी बालक की मातृभाषा मैथिली/बज्जिका/भोजपुरी/अंगिका/मगही है तो सामान्यतः दूसरी भाषा हिन्दी है। जब ऐसे बच्चों का शिक्षण अंग्रेजी माध्यम में शुरू होता है तो उसे दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ता है। एक तरफ तो उसे एक अपरिचित भाषा सीखना पड़ता है और दूसरी ओर उस अपरिचित भाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की जानकारी ग्रहण करना पड़ता है।

घर की भाषा और विद्यालयी भाषा में फर्क की वजह से सबसे ज्यादा कठिनाईयों से जूझने वाले

दो समूह निम्नलिखित हैं :-

(i) दुर्गम क्षेत्रों में बसे अनुसूचित जन जातियों के बच्चे, तथा

(ii) प्रवासियों और अन्तर्राज्यीय सीमा पर रहने वाले परिवारों के बच्चे।

भाषाविद् अक्सर यह तर्क देते हैं कि एक से अधिक भाषाओं को ग्रहण करने की क्षमता बालक में जन्मजात होती है, इसलिए लगभग सभी बच्चे दो या अधिक भाषाओं को समझ या बोल सकते हैं। परन्तु छोटे बच्चे खासकर पाँच वर्ष तक की उम्र के बच्चों के मामले में यह बात हमेशा सही नहीं होती। सुदूर आदिवासी इलाके में ऐसे भी बच्चे होते हैं जिन्हें दूसरी किसी भाषा से कोई परिचय नहीं होता। ऐसे में इस बात का कोई विश्वसनीय अनुमान लगाना मुश्किल है कि शुरूआती प्राथमिक कक्षाओं में कितने बच्चे किस-किस स्तर की अधिगम संबंधी कठिनाईयों से गुजरते हैं। इसपर लगभग सभी एकमत हैं कि बहुभाषी कक्षाओं (खासकर प्रारंभिक स्तर पर) में शिक्षण एक कठिन चुनौती है जिसपर उपयुक्त रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है।

3.6 बहुभाषी कक्षा हेतु रणनीतियाँ (Strategies for Multilingual Classes)

एक सामाजिक प्राणी के रूप में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने और शिक्षा की उन्नति में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। भाषा पर अच्छी पकड़ जीवन के हर क्षेत्र में या किसी भी विषय के अध्ययन में बहुत सहायक होता है। बहुभाषिता अब अपवाद नहीं रह गयी है, बल्कि ज्यादातर समाज की यह रीति बन गयी है। इसलिए बहुभाषिक कक्षाएँ भी अब सामान्य बात हो गयी है। परन्तु बहुभाषिक कक्षाओं की कतिपय कठिनाईयाँ होती हैं जिन्हें समझकर उपयुक्त रणनीति अपनाना आवश्यक हो जाता है ताकि ऐसी कक्षाओं में भी अधिगम प्रक्रिया सरल, सर्वसुलभ और फलदायी बन सके। इसके लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं-

(i) बहुभाषी कक्षाओं हेतु दो या अधिक भाषाओं को जाननेवाले विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की बहाली हो जो कि ऐसी कक्षाओं के संचालन में सक्षम हों तथा नित्य नवीन प्रयोग एवं अनुसंधान के द्वारा सभी विद्यार्थियों की प्रगति का ध्यान रखें।

(ii) ऐसी कक्षाओं में विद्यार्थियों को अन्य विषयों की शिक्षा देने से पूर्व किसी एक भाषा का चुनाव शिक्षण का अधिकृत माध्यम (Medium of Instruction) के रूप में किया जाए तथा उस भाषा की शिक्षा बालक की मातृभाषा/गृहभाषा में देकर चयनित भाषा में उसे निपुण बना दिया जाए। ऐसे विद्यालय के लिए पुस्तकें भी उसी प्रकार से तैयार किया जाए जो कि भिन्न-भिन्न भाषाओं का समावेश करे। जैसे-अंग्रेजी सिखाने के लिए देश की दर्जनों भाषाओं में रैपिडेक्स इंगलिश स्पोकेन बुक तैयार किया गया है।

(iii) बहुभाषी कक्षा के शिक्षक को चाहिए कि वह सभी भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित

करें तथा छात्रों को भी यह समझाएँ कि हर बालक को उसकी अपनी मातृभाषा/गृहभाषा प्यारी होती है, इसलिए उसका सम्मान करें। बच्चों को यह बताया जाना चाहिए कि माताएँ अलग-अलग होती हैं परन्तु सभी को उनके बच्चे एक समान प्रिय होते हैं, उसी प्रकार मातृभाषाएँ अलग-अलग हैं परन्तु उसको बोलनेवाले सभी इंसान महत्त्वपूर्ण हैं। भाषा के आधार पर किसी का उपहास करना इंसानियत के खिलाफ है, इसलिए ऐसा कभी नहीं करना चाहिए।

(iv) ऐसी कक्षाओं में एक ही भाषा या मिलती-जुलती भाषा का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का एक समूह बना दिया जाना चाहिए और विद्यार्थियों के उन समूहों को पहले आपस में पर्याप्त अंत:क्रिया का अवसर दिया जाना चाहिए। बाद में एक समूह को दूसरे समूह के साथ भी अंत:क्रिया का अवसर दिया जाना चाहिए।

(v) जिस क्षेत्र में बहुभाषी बच्चों की संख्या या प्रवासियों की संख्या अधिक हो, उस क्षेत्र में वैसे मॉडल स्कूल की स्थापना बहुत कारगर हो सकती है जो कि बहुभाषिक कक्षा को ध्यान में रखकर ही खोला जाए और उस अनुरूप समूची व्यवस्था को ढाला जाए।

(vi) ऐसे बहुभाषी विद्यालयों में शिक्षण अवधि को और विशेष रूप से भाषा-शिक्षण अवधि को अन्य विद्यालयों की तुलना में अधिक लम्बी रखी जाए ताकि विद्यालय में बच्चों को अपेक्षाकृत अधिक समय तक रहने और सीखने का अवसर मिले।

(vii) भाषा सीखने की प्रक्रिया कक्षा के बाहर भी चलती रहती है, इसलिए ऐसे खेल एवं आउटडोर गतिविधियों का आयोजन भी नियमित होते रहना चाहिए जहाँ कुशल प्रेरक की देखरेख में बच्चे भाषा सीख सकें। इस काम के लिए वैसे प्रवासियों को भी प्रेरक या स्वयंसेवी के रूप में तैयार किया जा सकता है, जिन्होंने भाषा-संबंधी ऐसी कठिनाई को स्वयं अपने जीवन में झेला हो।

(viii) विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के इस युग में भाषा-प्रयोगशाला भी बहुभाषी पृष्ठभूमि वाले बालकों के अध्ययन में बहुत सहायक हो सकता है, इसलिए इसकी उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए बहुभाषी कक्षाओं हेतु इस प्रकार के आधुनिक साधन तथा शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु सरकार को भी अतिरिक्त एवं पर्याप्त राशि मुहैया करना चाहिए।

(ix) बहुभाषी कक्षा में आनेवाली समस्याओं से छात्रों के अभिभावक भी परिचित हों एवं अपने बच्चे को घर में भी सीखने को प्रोत्साहित करते रहें, इसके लिए विद्यालय में अभिभावकों की मीटिंग होनी चाहिए तथा वे अपने बच्चों का कैसे सहयोग कर सकते हैं, बताया जाना चाहिए।

(x) बहुभाषी कक्षा में परीक्षा के आयोजन में लोच के सिद्धांत (Principle of Flexibility) को अपनाना चाहिए तथा आरंभिक कक्षाओं में भिन्न भाषाओं में प्रश्न-पत्र एवं उत्तर देने की छूट बालकों को मिलनी चाहिए। उच्च शिक्षा के दौरान भी परीक्षा में प्रश्न पत्र कम-से-कम दो भाषा में सेट किया जाना

चाहिए और विद्यार्थियों को सुविधाजनक माध्यम में लिखने की छूट मिलनी चाहिए।

(xi) भारत में बहुभाषी कक्षा की समस्या के समाधान में ''त्रिभाषा-सूत्र'' (Trilingual formula) पर मुस्तैदी से अमल करना भी सार्थक परिणाम दे सकता है। इस सूत्र के तहत तीन निम्नलिखित भाषा के शिक्षण का प्रस्ताव है :-एक-राष्ट्रभाषा या मातृभाषा हिन्दी, दो-प्रान्तीय भाषा (हिन्दी के अतिरिक्त) तथा अंग्रेजी।

उपरोक्त रणनीतियों या युक्तियों का उपयोग कर बहुभाषी कक्षा-कक्ष की समस्या का बहुत हद तक निदान संभव है।

3.7 सारांश (Summary)

इस इकाई को पढ़ने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा एक से अधिक भाषा का उपयोग करना अथवा बहुभाषिक होना सामान्य बात है। तेज यातायात एवं विकसित संचार साधनों के बदौलत दुनिया के लोग एक-दूसरे के इतने करीब आ गये हैं कि भाषा की सीमा अब बेमानी हो गयी है। ऐसे में एक-दूसरे की भाषा को अपनाकर वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यापारिक प्रगति के पथ पर अग्रसर होना अब आम बात हो गयी है। भारत तो प्राचीन काल से ही भाषाई विविधता वाला राष्ट्र रहा है और यहाँ के लोग एक से अधिक भाषा का उपयोग कर सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हमेशा से करते आये हैं। अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भाषा एवं संस्कृति का आदान-प्रदान बहुत तेजी से होने लगा है। फिर भी वैसी कक्षा में खासकर प्राथमिक स्तर की कक्षा में जहाँ दो या अधिक भाषाई पृष्ठभूमि वाले बालक शिक्षा हेतु आते हैं, कतिपय कठिनाइयाँ होती हैं। इस स्थिति में छात्र शिक्षक को समझ नहीं पाते और शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता है। ऐसे में भाषा से संबंधित उपयुक्त रणनीतियों को तैयार कर उसे विद्यालयी पाठ्यक्रम में लागू करना आवश्यक हो जाता है। वैसी कक्षा-कक्ष में ऐसा वातावरण होना चाहिए जहाँ सभी भाषाओं के प्रति बराबर का सम्मान हो और सभी विद्यार्थी को उसकी ही भाषा में सीखकर आगे बढ़ने को शिक्षक प्रोत्साहित करें।

3.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. बहुभाषावाद से आप क्या समझते हैं ? इसके विभिन्न सन्दर्भों की व्याख्या करें।
   What do you mean by multilingualism ? Explain its various contexts.
2. भारत के बहुभाषी परिदृश्य की विवेचना करें।
   Discuss the multilingual scenario in India.
3. एक बहुभाषी कक्षा-कक्ष की चुनौतियों का वर्णन करें।

Describe the challenges of a multilingual class.

4. एक बहुभाषी कक्षा की समस्याओं का सामना करने हेतु क्या-क्या रणनीतियाँ हैं?
   What are the strategies to tackle the problems of a multilingual class?

3.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. Bhatia, Tej K. Ritchie, William C. : The Handbood of Bilingulaism and Multilingualism (Second Edition), Wiley-Backwell, New Jersey (USA)
2. Edwards, John (1994) : Multilingualism, Routlede, London.
3. चतुर्वेदी, स्नेहलता (2016717) : पाठ्यक्रम में भाषा, आर्यन प्रिन्टर्स, आगरा।
4. NCERT (2006) : Democratic Politics-II, Text Book in Political Science for class X.

●●●

BLOCK — 2

इकाई 4: कक्षा-संवाद की प्रकृति तथा भाषा

Unit 4 : Nature of classroom discourse and significance of language

पाठ-संरचना(Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

4.2 कक्षा संवाद का अर्थ (Meaning of Classroom Dialogue)

4.3 भाषा और संज्ञानात्मक विकास(Language and Knowledge Development)

4.4 कक्षा-संवाद और सीखना (Class Dialogue and Learning)

4.5 कक्षा-संवाद की प्रकृति (Nature of Classroom Dialogue)

4.6 कक्षा-संवाद में भाषा के महत्व (Significance of Language in Classroom Dialogue)

4.7 सारांश (Summary)

4.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

4.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

4.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रगण (पाठकगण) :

- कक्षा-संवाद के अर्थ को बता सकेंगे।
- बच्चों की भाषायी क्षमता के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- विद्यालय पूर्व बच्चों की भाषायी पूँजी/क्षमता का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अपनी कक्षा के बच्चों की भाषायी क्षमताओं का विश्लेषण करते हुए उनका शिक्षाशास्त्रीय उपयोग कर सकेंगे।
- कक्षा-संवाद की प्रकृति एवं भाषा के महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी देना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

4.1 परिचय (Introduction)

हम सभी यह जानते हैं कि बच्चे अपने स्कूलों में दाखिला लेने के पहले अपनी विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी मातृभाषा का प्रयोग बखूबी करते हैं। इस इकाई में बच्चों की बातचीत अर्थात् कक्षा में भाषा-प्रयोग के संबंध में उनकी भाषायी क्षमताओं का विश्लेषण किया गया है। यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बच्चों के पास भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है और वे विद्यालय जाने से पहले ही भाषायी पूँजी से लैस होते हैं। बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? भाषा सीखने में समाज की क्या भूमिका होती है? क्या बड़ों का अनुकरण करते हुए भाषा सीखी जाती है अथवा शिक्षक के द्वारा? साथ ही यह देखने-समझने का भी प्रयास किया गया है कि भाषा अर्जित करना तथा भाषा सीखने की प्रक्रिया क्या होती है?

साथ ही यह भी प्रयास किया गया है कि विद्यालय में कक्षा-संवाद की प्रकृति तथा भाषा के महत्व को भी समझने का प्रयास किया गया है। बच्चों की कल्पनाशीलता, संप्रेषण कौशल, अवधारणा निर्माण की प्रक्रिया में उनकी अपनी अर्जित भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। विद्यालयों में भाषा की स्थिति एक विषय के रूप में भी होती है और समझ के माध्यम के रूप में भी होती है यह समझने का प्रयास किया गया है।

4.2 कक्षा-संवाद का अर्थ (Meaning of classroom dialogue)

शब्द 'कक्षा-संवाद' का तात्पर्य है कि वह भाषा जिसका इस्तेमाल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दरम्यान शिक्षक एवं छात्र एक-दूसरे के बीच अपनी कक्षा में संप्रेषण के लिए करते हैं।

Kramch, 1985 तथा Mehan, 1979 के अनुसार, ''शिक्षक अपनी कक्षा में शिक्षण-शास्त्रीय संवाद स्थापित करते हैं जहाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्र तथा छात्र एवं छात्र के मध्य संवाद स्थापित होता है। कक्षा-कक्ष में विषय को समझने-समझाने का माध्यम भाषा होती है, जहाँ मुख्य रूप से बच्चों की अपनी अर्जित भाषा अर्थात् मातृभाषा की भूमिका अहम होती है।''

कक्षा-संवाद की प्रक्रिया केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं होता है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की भी कक्षा होती है। जब बच्चे इन विषयों को पढ़ते हैं तो वहाँ भी भाषा सीख रहे होते हैं। इस प्रकार यहाँ देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में 'भाषा एवं अधिगम' किस प्रकार महत्वपूर्ण होता है। कक्षा-संवाद की प्रक्रिया जब चल रही होती है तो भाषा किस प्रकार कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता तथा अवधारणा विकास में सहायक होता है।

4.3 भाषा और संज्ञानात्मक विकास (Language and Knowledge Development)

इस प्रकार क्या कभी हमने यह जानने की कोशिश की है कि बच्चे कैसे सोचते हैं? कैसे संसार का वह अनुभव करते हैं? किस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों में उनके मन में विचार जन्म लेते हैं? क्या चिंतन भाषा के वगैर हो सकता है? हमने अनुभव किया होगा कि जो हम सोचते हैं उसकी अभिव्यक्ति के लिए शब्द अर्थात भाषा आवश्यक है। भाषा विचार को निर्धारित करती है और विचार भाषा को। बेंजामिन जी व्होर्फ (Benjamin Lee Whorf) के अनुसार, ''भाषा विचार की अन्तर्वस्तु का निर्धारण करती है।''

सामान्य अर्थ में संज्ञानात्मक विकास तार्किक व नवीन विचारों के अर्थ समझना एवं समस्या समाधान जैसे मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया का क्रमिक विकास है। बच्चों के सोचने और समझने तथा अपने विचारों को व्यक्त करने की अपनी अलग-अलग प्रक्रिया होती है जो उनके संज्ञानात्मक प्रक्रिया को प्रभावित करता है। ख्याति प्राप्त स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियोजे (Jean Piaget) का मानना है कि जिसके कारण वह साधारण मानसिक प्रक्रियाएँ पहले से बेहतर ढंग से करने लगता है। परन्तु इन मानसिक प्रक्रियाओं के पीछे उनकी अपनी अर्जित भाषायी क्षमता होती है। वही कक्षा-संवाद की प्रभाविकता को आगे बढ़ाने में भाषा की अहम भूमिका होती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कक्षा में कक्षा-संवाद की प्रक्रिया आमने-सामने होती है। शिक्षक 'सरल से कठिन की ओर' शिक्षण-सूत्र के आलोक में सरल प्रश्नों के द्वारा छात्रों से संवाद प्रारम्भ करते हैं। धीरे-धीरे छात्रों के समक्ष चुनौतियाँ आने लगती हैं जहाँ चिंतन की प्रक्रिया प्रारम्भ होने लगता है। छात्र अपने पूर्व ज्ञान की बुनियाद पर अपने बौद्धिक क्षमता का उपयोग करते हुए अपनी अवधारणा विकसित करते हैं। जहाँ भाषा की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अतएव कक्षा-संवाद की प्रक्रिया जहाँ बच्चें अपने भाषायी क्षमताओं का सर्जनात्मक चिंतन करते हुए अन्त:क्रियात्मक ढंग से सीखते हैं। कल्पनाशीलता, तर्कचिंतन, अवधारणा के विकास में भाषा की अहम भूमिका होती है।

4.4 कक्षा-संवाद और सीखना (Class Dialogue and Learning)

कक्षा-संवाद की प्रक्रिया की प्रभाविकता बातचीत पर आधारित होती है। रूसी मनोवैज्ञानिक वायगोत्सकी ने कहा है कि, ''संज्ञानात्मक विकास में बच्चों की भाषा एवं चिंतन एक महत्वपूर्ण साधन होता है।'' बच्चे भाषा का उपयोग केवल सामाजिक संचार के लिए ही नहीं करते बल्कि अपने संज्ञानात्मक विकास के लिए भी करते हैं। उन्होंने सीखने के बारे में 'सामाजिक अधिगम सिद्धांत' दिया है जो अन्त:क्रिया पर आधारित

होता है। उनका मानना है कि बच्चे एकाकीपन में उतना नहीं सीख सकते जितना कि आपस में बातचीत, चर्चा-परिचर्या इत्यादि के क्रम में अन्त:क्रिया द्वारा। वायगोत्सकी के सिद्धांत का मानना है कि सीखना एक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे दूसरों से अन्त:क्रिया करके सीखते हैं। परिवार में बच्चे स्वाभाविक रूप से बातचीत कर पाते हैं। इसलिए वहाँ सीखने का एक अच्छा वातावरण बनता है। इस प्रकार यह सिद्धांत विद्यालय और घर के बीच एक सार्थक संबंध बनाने पर जोर दिया जाता है।

इस प्रकार यह प्रश्न उठता है कि विद्यालय में सीखने-सीखाने की प्रक्रिया में कक्षा-संवाद और अन्त:क्रिया का स्वरूप कैसी होनी चाहिए?

अत: इसे निम्नांकित रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है–

कक्षा-संवाद की प्रक्रिया जहाँ शिक्षक प्रश्न करते हैं तथा छात्र अपनी प्रतिक्रिया देते हैं जिसका मुख्य आधार पारस्परिक क्रिया/अंत:क्रिया (Interaction) होता है।

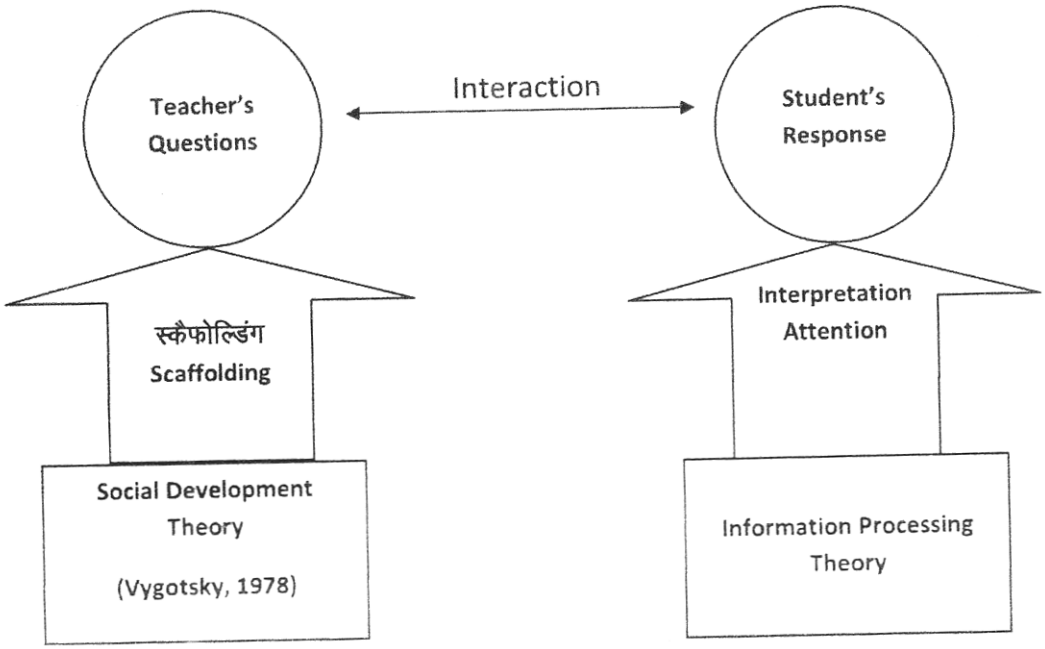

वायगोत्सकी के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अन्तर्गत समीपस्थ विकास का क्षेत्र जिसे ZDP (Zone of Proximal Development) कहा जाता है जहाँ ऐसे काम जो बच्चों की क्षमता के अनुरूप में न हो तब भी किसी का अर्थात् शिक्षक की मदद से वे ऐसे काम कर लेते हैं। आवश्यकता इस बात की होती है कि कक्षा-संवाद की प्रक्रिया के अन्तर्गत भी छात्र अन्त:क्रिया करते हैं तथा प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वायगोत्सकी के अनुसार वयस्कों के साथ की गई अन्त:क्रिया से बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को मदद मिलती है। कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दरम्यान शिक्षक आवश्यकतानुसार एक सहारा प्रदान

(Scaffosding) करते हैं जिसे बच्चे नए प्रकार के चिंतन करते समय उपयोग करते हैं। इतना ही नहीं कक्षा का वातावरण एक सामाजिक वातावरण होता है जहाँ सबों के बीच आवश्यकतानुसार अन्त:क्रिया का होना अपेक्षित होता है। जब बच्चे भाषा द्वारा विचार व्यक्त करते हैं तो उनकी सोच का विस्तार होता है। वयस्क द्वारा दिए गए सहयोग से बच्चों का चिंतन का विकास करते हैं जहाँ बच्चे अपनी भाषा का उपयोग सहजता से करते हैं।

कक्षा–संवाद की आदर्श स्थिति तब होती है जब पूछे गए सवाल बच्चों के पूर्व ज्ञान से जुड़ा हुआ हो। परन्तु अक्सर कक्षा में हम ऐसे सवाल पूछते हैं जो बच्चों के ज्ञान के अभाव को उजागर करता है जहाँ बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। एक शिक्षक को चाहिए कि वह हर बच्चे की स्थिति को पहचान कर उपयुक्त प्रतिक्रिया दे सकें। इसका एक तरीका है सहपाठियों से सीखना इसमें शिक्षक ऐसे काम करवाते हैं। बच्चे ऐसे सहयोगी प्रतिक्रियाओं में हुई चर्चा और संवाद को आत्मसात करते हैं और सीखना संभव हो पाता है।

इसके लिए यह आवश्यक है कि :–

- कोई समस्या या विषय को आपस में मिलकर हल करने या खोज करने का मौका दिया जाए।
- समूह कार्य हो सके।
- संवाद का माध्यम बच्चों की अपनी भाषा हो।
- वे तर्कपूर्ण ढंग से सोच सकें।
- मस्तिष्क उद्वेलन की संभावना बनी रहे।
- विचारों का विश्लेषण कर सकें तथा अपना विचार प्रस्तुत कर सकें।
- शिक्षक बच्चे की सोच में विस्तार लाने में सहयोग प्रदान करें।
- बच्चों के संज्ञानात्मक कुशलताओं का विकास हो।
- आवश्यकतानुसार बहुभाषिकता को बढ़ाव दी जाए।
- बच्चों की घर की भाषा का सम्मान दिया जाए।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि संज्ञानात्मक कुशलताओं के विकास में शब्द, भाषा व संवाद मनोवैज्ञानिक उपकरणों के रूप में कार्य करते हुए अपना कार्य करते हैं।

4.5 कक्षा–संवाद की प्रकृति (Nature of Classroom Dialogue)

कक्षा–संवाद की प्रक्रिया प्रभावी हो इसके लिए आवश्यक है कि कक्षा–संवाद की भाषा सहज हो।

जब बच्चे विभिन्न विषयों को पढ़ रहे होते हैं। अभी तक हमने जाना है कि विभिन्न अवधारणाओं के विकास में भाषा व संवाद एक मनोवैज्ञानिक उपकरण के रूप में कार्य करता है। भाषा किस प्रकार कल्पनाशीलता, चिंतन, तर्क, संवेदनशीलता, सृजनशीलता, अवधारणात्मक विकास इत्यादि में सहायक होता है। भाषा संप्रेषण का माध्यम होता है, यह सही है लेकिन भाषा तब महत्वपूर्ण है जब वह समझ का माध्यम भी हो।

विद्यालयों में एक विषय के रूप में एक से अधिक भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं जिसका सीधा-सा मकसद होता है बच्चों में इन भाषाओं के प्रायोगिक कुशलताओं को विकसित करना। कक्षा-संवाद में इन भाषायी कुशलताओं का अधिक महत्त्व होता है। कक्षा-संवाद के कार्य एवं प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए इसके निम्नांकित प्रकृति देखने को मिलता है :-

परंपरागत कक्षा-संवाद : (Traditional Classroom Dialogue)

कक्षागत संवाद जहाँ शिक्षक ज्यादा क्रियाशील होते हैं तथा छात्रगण एक अच्छा स्रोता के रूप में होते हें। एक तरफा संप्रेषण होता है। कक्षा-संवाद की यह प्रकृति एक परंपरागत रूप में होती है, जिसे शांत कक्षा-संवाद (Silent class room dialogue) की उपमा दी जा सकती है। यहाँ छात्रों को कक्षा-संवाद में भाग लेने का अवसर गौण हो जाते हैं। ऐसी कक्षा-संवाद की प्रकृति यह भी होती है कि यह बिलकुल नियंत्रित होती है जहाँ शिक्षक एक विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे होते हैं।

कक्षा-संवाद की यह प्रकृति की मूल समस्या यह होती है कि विषय-वस्तु को यदि कोई छात्र भाषायी समस्या के कारण नहीं समझ पा रहा हो तो वहाँ अधिगम बाधित होता नजर आता है। शिक्षक द्वारा दिए गए प्रश्नों का यदि छात्र उत्तर देने में असमर्थ हो, तो यह भी हो सकता है कि उसे भाषायी समस्या (समझ की समस्या) तो नहीं है।

इस प्रकार यहाँ एक अहम सवाल उठ खड़ा होता है कि विषय चाहे जो भी हो, यदि कक्षा-संवाद के लिए अपनी सहज रूप से उपयोग किए जाने वाली भाषा अर्थात् मातृभाषा का उपयोग कितना महत्वपूर्ण होता है। कक्षा-संवाद की प्रक्रिया में 'भाषा और अधिगम' की बात सामने आती है। सुनने, समझने, तर्क करने, चिंतन करने, कल्पना करने, समझ विकसित करने तथा अपनी बातों व विचारों को रखने का अवसर छात्रों को नहीं मिल पाता है जिसके कारण उसे एक प्रभावी कक्षा-संवाद नहीं कहा जा सकता है।

क्रियाशील कक्षा-संवाद : (Active Classroom Dialogue)

कक्षा-संवाद की यह प्रकृति रचनात्मकता लिए हुए होता है। शिक्षक छात्रों के समक्ष समस्या को सरल तरीके से प्रस्तुत करते हैं। प्रश्न की प्रकृति मस्तिष्क उद्वेलक होती है। क्रियाशील कक्षा-संवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ अथवा लक्षण होते हैं :-

- **मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming)**

विचारों की ऐसी आंधी लाना जिसमें किसी वस्तु, व्यक्ति प्रक्रिया संप्रत्यय के बारे में अनगिनत विचार या सोच एक साथ अनायास ही मस्तिष्क पटल पर उभर जाएँ। ए० एफ० ऑसबोर्न (A.F. Osborn) के अनुसार किसी समस्या समाधान के जो भी विचार हो या समाधान हो जा उनके मस्तिष्क में आ रहे जो, उन्हें व्यक्त करने की पूरी स्वतंत्रता होती है। ऐसी स्थिति में भाषा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होता है। जैसे 'बढ़ता हुआ प्रदूषण' पर अपना-अपना विचार प्रस्तुत करने को प्रेरित करना।

- **संवेदनशीलता या सूक्ष्मग्राहिता (Sensitivity)**

संवेदनशीलता या सूक्ष्मग्राहिता या शब्दकोशीय अर्थ है व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें यह संवेदनशील हो तथा उसमें अर्थात छात्रों में सूक्ष्म विचारों एवं भावनाओं को ग्रहण करने की क्षमता हो। प्रकृति ने जन्म से ही इस तरह के कुछ-न-कुछ गुण अवश्य वरदान स्वरूप दिए हैं। कक्षा-संवाद की परिस्थितियों में अध्यापक की महती भूमिका जिम्मेवारी होती है कि वे कक्षागत भाषागत में आवश्यकतानुसार बहुभाषिकता का सम्मान करें ताकि छात्र अपने समझ को विकसित कर सके। छात्र अपने अधिगम अनुभवों पर अपनी प्रतिक्रिया अपने ही शब्दों में दे सकें। शंका समाधान अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने का हरसंभव प्रयास किया जाए।

भाषा, हमारी संवेदनाओं का विकास करने में महती भूमिका निभाती है।

4.6 कक्षा-संवाद में भाषा के महत्त्व (Significance of Language in Classroom Dialogue)

आप सभी जानते हैं कि भाषा एक संप्रेषण का माध्यम होता है। विद्यालयों में भाषा के अतिरिक्त बच्चे अन्य विषयों यानी गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि को किस भाषा में पढ़ते हैं? बिहार जैसे राज्य में संभवत: अधिकांश विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें तो हिन्दी भाषा में होती हैं लेकिन कक्षा के भीतर विषय को समझने-समझाने का माध्यम बच्चों की अपनी भाषा या क्षेत्रीय भाषा होती होगी। इसका अर्थ है कि विद्यालयों में भाषा की स्थिति एक विषय के रूप में तथा माध्यम के रूप में होती है।

अतएव कक्षा-संवाद और भाषा की बात करने पर भाषा के महत्व सामने उभरकर आते हैं। स्कूली शिक्षा के संदर्भ में भाषा पाठ्यचर्या का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। शिक्षण के संपूर्ण क्रियाकलापों में भाषा ही समझ का माध्यम है। अवधारणाओं के निर्माण एवं ज्ञान के सृजन में बच्चों की मातृभाषा की भूमिका अतिमहत्त्वपूर्ण होती है।

आपने अनुभव किया होगा कि जब अन्य विषयों की अध्यापन की भाषा एक ऐसी भाषा होती है

जिसके प्रयोग के स्तर पर हम अधिक परिचित होते हैं तो उन विषयों को समझने में अपेक्षाकृत आसानी होती है। जैसे विज्ञान की कक्षा में पूछे गए सरल सवालों के जवाब बच्चे तभी दे सकेंगे जब वे पूछे गए सवालों की भाषा को समझ पाए। यह ठीक वैसा ही होता है जैसे बातचीत करते समय हम दूसरों की बातों का जवाब तभी दे सकते हैं जब हम उनके सवालों की भाषायी समझ हो, अर्थात् वह भाषा का हमें ज्ञान हो।

NCF-2005, BCF-2008 तथा शिक्षा नीति 1986 में यह सुझाव दिया गया है कि 'प्राथमिक स्तर पर अनुदेशन का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए। संविधान में बहुभाषिकता के संदर्भ को संवेदनशीलता से समाहित किया गया है। अनुच्छेद 350 के आलोक में प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में सभी राज्यों को प्रयास करने हैं। बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 की प्रस्तावना को इस संदर्भ में देखना दीगर होगा।

उल्लेखनीय होगा कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा घरेलू भाषा अथवा स्थानीय बोली का स्वीकार किया जाए। लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि मानक हिन्दी अथवा पाठ्यक्रम की भाषा का प्रयोग ही न करें।

कक्षा-संवाद की प्रक्रिया आमने-सामने होता है। बहुभाषिकता कक्षा-संवाद की कार्यनीति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। कक्षा-संवाद में भाषा की भूमिका को निम्नांकित बिन्दुओं में समझ सकते हैं :-

- कक्षा-संवाद में मातृभाषा का महत्त्व।
- कक्षा-संवाद में बहुभाषिकता का महत्त्व।
- समझ का माध्यम और मातृभाषा।
- चिंतन की प्रक्रिया में मातृभाषा का महत्त्व।
- ज्ञान के सृजन में अर्जित भाषा का महत्त्व।
- विभिन्न विषयों के विशिष्ट शब्द एवं मातृभाषा के महत्त्व।
- विश्लेषणात्मक क्षमताओं के विकास में मातृभाषा के महत्त्व।
- संवेदनशीलता के विकास में मातृभाषा के महत्त्व।
- प्रभावी संप्रेषण एवं भाषा का महत्त्व।
- हमारे रोजमर्रा का जीवन एवं भाषा।
- रोजमर्रा का जीवन और बहुभाषिकता।

- सामाजिक वातावरण और भाषा का विकास।

4.7 सारांश (Summary)

'कक्षा-संवाद' का तात्पर्य है कि वह भाषा जिसका उपयोग 'शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया' के दरम्यान शिक्षक एवं छात्र एक-दूसरे के बीच कक्षा में संप्रेषण के लिए करते हैं। कक्षा-कक्ष में विषय को समझने-समझाने का माध्यम भाषा होती है जहाँ मुख्य रूप से बच्चों की अपनी अर्जित भाषा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। कक्षा-संवाद की प्रक्रिया केवल कक्षा की भाषा तक ही सीमित नहीं होता है। विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि विषय की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की भी कक्षा होती है। क्योंकि भाषा एक विषय के रूप में होती है, साथ ही वह सभी विषयों के समझ के माध्यम के रूप में भी होती है। कक्षा-संवाद और सीखना एक महत्वपूर्ण पहल है। वायगोत्सकी के अनुसार, ''बच्चे सामाजिक परिवेश में अन्त:क्रिया करके तीव्र गति से भाषा सीखते हैं।'' कक्षा-संवाद की रूप-रेखा भी सामाजिक अधिगम के लिए काफी उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराता है। आवश्यकता इस बात की होती है कि कक्षागत भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसके जरिए चिंतन की प्रक्रिया, तर्क करने की प्रक्रिया सरल हो सकें। बच्चे अपने पूर्व ज्ञान की बुनियाद पर नये ज्ञान का सृजन आसानी से कर सकें। कक्षा संप्रेषण की भाषा पाठ्यक्रम की भाषा होनी चाहिए। लेकिन आवश्यकतानुसार बहुभाषिकता को भी स्वीकार की जानी चाहिए। विद्यालय आने के पूर्व बच्चों की अपनी भाषा होती है जिसे भाषायी पूँजी कहा जाता है जिसका इस्तेमाल सीखने के लिए किया जाता है। अपनी कक्षा के बच्चों की भाषायी क्षमताओं का विश्लेषण करते हुए उनका शिक्षाशास्त्रीय उपयोग किया जाना चाहिए।

4.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. कक्षा-संवाद से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रकृति का वर्णन करें।
   What do you mean classroom dialogue ? Describe its nature.
2. कक्षा-संवाद का क्या अर्थ है ? इसमें भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए ।
   What is the meaning of classroom dialogue ? Throw light on the significance of language in classroom dialogue.

4.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. ब्रिटन जेम्स (अनुवादक-प्रमोद कुमार शर्मा, 2008, भाषा और अधिगम) ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली

2. एल. एस. वायगोत्सकी (अनुवादक-प्रमोद कुमार शर्मा, 2007, विचार और भाषा, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली
3. Countney B. Cazden : Classroom discourse, The Language of Teaching and Learning.
4. NCF - 2005
5. BCF - 2008
6. NPE - 1986

●●●

इकाई 5: संप्रेषण कौशल
Unit 5 : Communication Skills

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

5.2 संप्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)

5.3 संप्रेषण के प्रकार (Types of Communication)

5.4 संप्रेषण में भाषा का महत्त्व (Significance of Language in Communication)

5.5 भाषायी संप्रेषण कौशल (Lingual Communication Skills)

5.6 मौखिक संप्रेषण (मौखिक अभिव्यक्ति) कौशल(Oral Communication Skill)

5.7 सारांश (Summary)

5.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

5.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रगण :

- संप्रेषण कौशल को बता सकेंगें
- भाषायी संप्रेषण कौशल को गहराई से चर्चा कर सकेगे।
- मौखिक संप्रेषण कौशल तथा इसके महत्त्व को जान सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में अभिव्यक्ति कौशल के विकास का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में संप्रेषण कौशल के महत्त्व की समीक्षा कर सकेंगे।

उपर्युक्त का अध्ययन करना ही इस तथ्य का उद्देश्य है।

5.1 प्रस्तावना / परिचय (Introduction)

हम सभी यह जानते हैं कि प्रभावी एवं धारा प्रवाह बोलने की योग्यता का जीवन में अत्यधिक महत्व है। लेकिन बोलने का सही कौशल और सहजता विभिन्न स्थितियों या अवसरों पर अभिव्यक्ति के वास्तविक अभ्यास द्वारा ही संभव है।

इस प्रकार संप्रेषण मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता होती है। कक्षा-कक्ष में सीखने-सीखाने की विभिन्न गतिविधियों में संप्रेषण का अपना एक अलग महत्व होता है। संप्रेषण की प्रक्रिया में भाषा की अहम भूमिका होती है। सहजता तथा बोधगम्यता के दृष्टिकोण से भाषा में यदि मातृभाषा का उपयोग किया जाए तो बेहतर माना गया है। भाषायी संप्रेषण कौशल में मौखिक संप्रेषण कौशल को मुख्य माना गया है जिसे विकसित करने का प्रयास इस इकाई में किया गया है।

5.2 संप्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)

संप्रेषण से तात्पर्य है-भाव, विचार, सूचना, संदेश आदि को एक इकाई से दूसरी इकाई तक पहुँचाना और प्रतिक्रिया प्राप्त करना। हिन्दी में प्रयुक्त 'संप्रेषण' शब्द अंग्रेजी के 'Communication' का अनुवाद है। अंग्रेजी का शब्द लैटिन भाषा से बना है, जिसका अर्थ है-सामान्य भागीदारी युक्त सूचना और उसका संप्रेषण। अर्थात् संप्रेषण एक ऐसा प्रयास है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों, भावनाओं एवं मनोवृत्तियों में सहभागी होता है।

इस प्रकार विचारों, भावनाओं एवं अभिव्यक्तियों के उन सभी रूपों को संप्रेषण कहते हैं जो परस्पर साझेदारी के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। संप्रेषण की समझ बढ़ाने के लिए विद्वानों के विचारों और परिभाषाओं का अध्ययन करना अति आवश्यक होता है।

संप्रेषण से आशय उन समस्त साधनों से है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में डालने के लिए अथवा उसे समझाने के लिए अपनाता है। यह वास्तव में दो व्यक्तियों के मस्तिष्क के बीच की खाई को पाटनेवाला सेतु है। इसके अन्तर्गत सुनने, बोलने तथा समझने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया सदैव चालू रहती है।''

''सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करने की कला का नाम संप्रेषण है।'' (डा० श० सिंह, P-6)

संक्षेप में, उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि

- संप्रेषण में संप्रेषक और प्रापक के बीच अन्त:क्रिया होती है।
- संप्रेषण करने वाले को संप्रेषक कहा जाता है और उसे प्राप्त करने वाले को प्रापक, ग्रहीता या श्रोता कहा जाता है।

- संप्रेषण करके एक व्यक्ति समूह आदि अपना संदेश दूसरे व्यक्ति, समूह आदि तक पहुँचाता है।
- यह संदेश भाव, विचार, मनोवृत्ति, सूचना आदि के रूप में संप्रेषित होता है।
- संप्रेषण का उद्देश्य ग्रहीता के विचार-व्यवहार में परिवर्तन करना है।
- संप्रेषण में भाषा की भूमिका अति महत्वपूर्ण होता है।
- संप्रेषण की प्रक्रिया एक पक्षीय, द्विपक्षीय तथा पहुपक्षीय भी होता है।
- यह एक संयोगात्मक प्रक्रिया है।
- यह अर्थपूर्ण प्रक्रिया होती है।
- अर्थपूर्ण संदेश किसी माध्यम के द्वारा ही संपन्न होता है।

स्त्रोत–सार्थक संदेश माध्यम ग्रहणकर्त्ता प्रभाव प्रतिपुष्टि

5.3 संप्रेषण के प्रकार (Types of Communication)

संप्रेषण की प्रक्रिया विभिन्न स्तरों पर घटित होती रहती है।

- यह प्रक्रिया किसी एक व्यक्ति के मानसिक स्तर पर घटित हो सकती है।
- दो या दो से अधिक व्यक्ति के स्तर पर घटित हो सकती है।
- कुछ लोगों के समूह में घटित हो सकती है।

अत: संप्रेषण के विभिन्न रूपों एवं प्रकारों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

5.3.1 अन्त:वैयक्तिक संप्रेषण (Intra-personal Communication)

संप्रेषण की प्रक्रिया न केवल बाहरी समाज में घटित होती है बल्कि व्यक्ति के अन्तर्मन में भी निरंतर सक्रिय रहती है। मनुष्य विवेकशील एवं चिंतनशील प्राणी है। कुछ भी कार्य करने से पूर्व वह उस पर विचार करता है यानि वह उसके बारे में सोचता है। उसकी यह विचार और चिंतन प्रक्रिया 'स्व संप्रेषण' पर आधारित होती है। व्यक्ति कुछ भी करने और कुछ भी कहने से पहले उठते हुए विचार संवादों का रूप ले लेते हैं। वस्तुत: यह एक अवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के मन के दायरे में ही संपन्न होती है। यह संप्रेषण व्यक्ति के स्वयं के मानसिक स्तर पर होता है तथा स्व उत्तरात्मक फीडबैक के आधसार पर अपना स्व परिमार्जन करता है। आत्म विवेचन, आत्मा विश्लेषण, तर्क-वितर्क, अन्तर्द्वन्द्व आदि इसी श्रेणी के संप्रेषण है। इस महत्वपूर्ण कार्य में संप्रेषण के माध्यम के रूप में व्यक्ति की अपनी मातृभाषा की भूमिका सर्वोतम माना जाता है।

5.3.2 अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण (Inter-personal Communication)

दो या दो से अधिक लोगों के मध्य होने वाले संप्रेषण को अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण कहते हैं। इस संप्रेषण की प्रक्रिया में एक व्यक्ति द्वारा प्रेषित संदेश दूसरे व्यक्ति द्वारा सीधे ग्रहण किया जाता है। जहाँ फीडबैक तुरंत संभव होता है।

इस संप्रेषण की प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति आमने-सामने रहकर कहीं भी किसी भी माध्यम के द्वारा संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इसमें संदेशों का संप्रेषण मौखिक अथवा स्पर्श, चेहरे का हाव-भाव या शरीर की मुद्राओं से भी संभव हो सकता है। ऐसे संप्रेषण में मुख्य रूप से पाँच अवयव होते हैं-स्रोत, संदेश, श्रोता, प्रभाव, फीडबैक।

इस प्रक्रिया में स्त्रोत स्रोता को सीधे प्रभावित करता है :

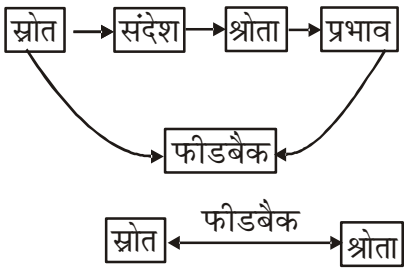

अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण

अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण न सिर्फ दो व्यक्तियों बल्कि दो से अधिक छोटे-छोटे समूहों परन्तु इसकी संपन्नता के लिए समूह का आकार छोटा होना अनिवार्य होता है। जिससे समूह के मध्य तुरंत फीडबैक हो सके तथा समूह के व्यक्तियों में परस्पर अर्थपूर्ण संप्रेषण कायम हो सके। चर्चा-परिचर्या, गोष्ठियाँ, कक्षागत बातचीत, छोटे-छोटे क्रियात्मक समूह के सदस्यों के बीच बातचीत को अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में इस प्रकार के अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण कौशल का विकसित होना अधिक प्रभावशाली माना जाता है क्योंकि यह ज्यादा आंतरिक है।

5.3.3 समूह संचार (Group Communication)

समूह संप्रेषण अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण का विस्तार है। ''जब विराट स्तर पर विचार, गोष्ठी, कार्य शिविर, सार्वजनिक व्याख्यान तथा सभाओं आदि में विचारों का आदान-प्रदान होता है तो उसे समूह-संप्रेषण कहते हैं।''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति को अपना तथा अपने समूह का विकास करने के लिए एक-दूसरे से भाव-भावनाओं एवं विचारों का संप्रेषण करना अनिवार्य होता है। सामूहिक वाद-विवाद, भाषण (मौखिक अभिव्यक्ति) नाट्यशालाओं में सामूहिक अवलोकन, लघुनाटिका आदि समूह संप्रेषण के उदाहरण हैं। यहाँ भी उल्लेखनीय है कि समूह संप्रेषण की प्रक्रिया तभी सफलतापूर्वक संपन्न हो सकती है, जबकि उसका दायरा सीमित हो। इसलिए समूह संप्रेषण प्रक्रिया विशिष्ट स्थान, क्षेत्र, जाति, मातृभाषा या अर्जित भाषा इत्यादि दायरों में ही सीमित रहती है।

समूह संप्रेषण की प्रक्रिया में समूह के सदस्य, समूह की समस्या, मूल उद्देश्य के अनुरूप संदेश प्रस्तुत करते हैं। उसी के अनुरूप फीडबैक होता है। इसमें संप्रेषक और श्रोता में निकटता होने के बावजूद भी फीडबैक के लिए परेक्ष तरीका भी अपनाना पड़ता है। जैसे-विचार-गोष्ठी में कोई श्रोता समस्या समाधान के लए वक्ता के पास पर्ची लिखकर भेजता है।

5.3.4 जन संचार (Mass Communication)

संप्रेषण की वह प्रक्रिया जो कोई भी यांत्रिक उपकरण द्वारा संदेश को एक साथ एक बड़े बिखरे जनसमूह तक पहुँचाता है जिसे जनसंचार कहते हैं। जैसे-रेडियो, टी०वी०, फिल्म, पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तकें, इत्यादि। जन संप्रेषण की प्रक्रिया में संप्रेषक एक ही जगह से अधिकाधिक श्रोताओं से संचार करता है और विभिन्न माध्यमों से फीडबैक भी प्राप्त करता है। इन्हीं कारणों से जन संप्रेषण का प्रभाव दिन-व-दिन अधिक व्यापक होता जा रहा है। आज के युग में जन संप्रेषण का उपयोग सूचना प्रेषण, विश्लेषण एवं ज्ञान का प्रसार तथा मनोरंजन के लिए किया जा रहा है।

5.4 संप्रेषण में भाषा का महत्त्व (Importance of Language in Communication)

मातृभाषा विचारों के विनिमय अर्थात् संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण यंत्र है। इसके माध्यम से हम बोलकर और लिखकर हम अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाते हैं और दूसरे हम तक। विचार-विनिमय का यह कार्य तब तक सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता जब तक हमें ठीक-ठीक बोलने और लिखने की कौशल विकसित न हो जाए। यह योग्यता मातृभाषा से ही मुख्य रूप से प्राप्त हो पाती है, अन्य भाषा के अपेक्षा में। इस प्रकार प्रभावी संप्रेषण के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। साथ ही संप्रेषण में उपयोग किए जाने वाली भाषा समझ का माध्यम भी होता है।

5.4.1 भाषा समझ के माध्यम के रूप में (Language as a medium of understanding)

विचार-विनिमय की प्रक्रिया अर्थपूर्ण तब माना जाता है जब अपनाई जाने वाली भाषा सबों के लिए सहज तथा आसान हो। मातृभाषा की सहज स्वाभाविक स्वच्छन्द धारा की प्रवाह अर्थपूर्ण होता है। बच्चों

की अपनी भाषाई परिवेश होती है जहाँ सोचने का खास ढंग होता है क्योंकि वह एक विशेष वातावरण में पला बढ़ा है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन के साथ भाषा की अविरल धारा का प्रवाह संपूर्ण संप्रेषणीय वातावरण को अर्थपूर्ण बनाता है।

बच्चे अपने परिवार और समाज की भाषा में बोलना सीखता है और अभ्यास द्वारा उस पर अधिकार प्रप्त करता है। बचपन की सीखी गई भाषा में यदि नये-नये विचार दिए जाते हैं, तो उन्हें वह आसानी से ग्रहण करता है।

परन्तु दूसरी भाषा से यदि विचार सीखना पड़ता है, तो विचार की नवीनता के साथ-साथ उसके मार्ग में अन्य भाषा की दुरूहता आ खड़ी होती है। मातृभाषा का पूर्ण ज्ञान होना बालक के संप्रेषणात्मक क्षमता का उत्तरोत्तर विकास करता है। संप्रेषण में भाषा के स्थान पर यदि मातृभाषा को महत्व दिया जाता है तो उसके बौद्धिक ज्ञान का विकास, आत्मभाव-प्रकाशन का विकास सर्जनात्मक और उत्पादक शक्तियों का विकास उत्तरोत्तर होता है।

5.5 भाषायी संप्रेषण कौशल (Lingual Communication Skill)

किसी कार्य को करने में दो प्रकार की योग्यता वांछनीय होती है :-सामान्य तथा विशेष। परन्तु बहुत से कार्य विशेष अभ्यास तथा परिश्रम की मांग करते हैं। इसी अभ्यास तथा परिश्रम से व्यक्ति उस विशेष कार्य को संपन्न करने की विशेष क्षमता अर्जित कर लेता है। यही क्षमता 'कौशल' कहलाती है।

भाषायी संप्रेषण कौशल का अर्थ भाषायी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करना है। भाषायी कुशलता का विकास व्यवस्थित भाषा शिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है। ऐसे तो व्यवस्थित भाषा शिक्षण के बिना भी भाषाई व्यवहार संपन्न किया जा सकता है परंतु इस कार्य को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए भाषायी संप्रेषण कुशलताओं का विकास अति आवश्यक है।

भाषायी संप्रेषण के दो रूप हैं :-मौखिक और लिखित।

संप्रेषण में भाषा का मौखिक रूप ही प्राथमिक है। प्रथम भाषा शिक्षण में मुख्यत: भाषा के लिखित रूप पर विशेष बल दिया जाता है, परन्तु अन्य भाषा शिक्षण में भाषा के मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों पर बल दिया जाता है। सुनना (श्रवण), बोलना (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन अभिव्यक्ति), भाषा के चार कौशल माने जाते हैं। छात्रों को इन कौशलों में निपुणता प्रदान करना तथा उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है।

भाषायी कौशल के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ० शिखा चतुर्वेदी कहती है 'व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर करती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होता है। जिन भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते हैं यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।'

कैलाश चंद्र भाटिया ने भाषाई-कौशलों को दो भागों में विभाजित किया है :

(क) प्रधान कौशल – सुनना और बोलना

(ख) गौण कौशल – पढ़ना (वाचन) और लिखना

रमा शर्मा तथा एम० के० मिश्रा ने भाषाई कौशलों को ग्रहण तथा अभिव्यक्ति के आधार पर मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया है, जिसे निम्न आरेख में दर्शाया गया है :

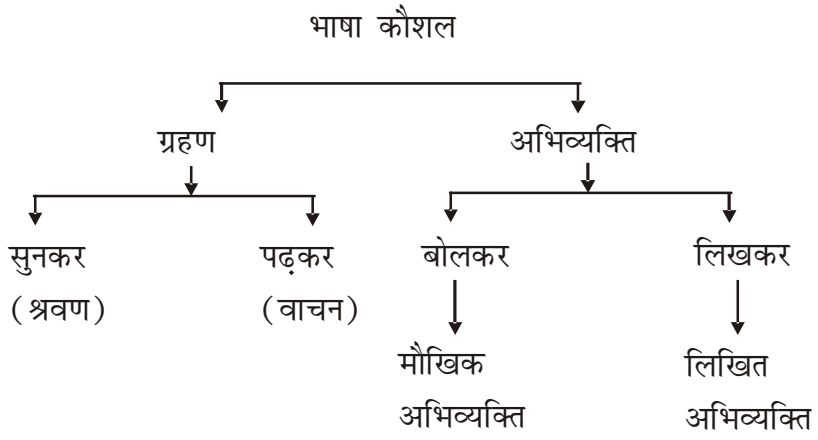

5.6 मौखिक संप्रेषण (मौखिक अभिव्यक्ति) कौशल (Oral Communication Skill)

5.6.1 मौखिक संप्रेषण कौशल (Oral Communication Skill)

मौखिक संप्रेषण कौशल का अभिप्राय है मौखिक अभिव्यक्ति कौशल जिसे भाषण कौशल भी कहा जाता है। जब व्यक्ति मौखिक रूप से अपनी बात को कहने में समर्थ हो जाता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल माना जाता है। मौखिक अर्थात् मुख से निकला हुआ। 'बोलना' अभिव्यक्ति अर्थात् स्वयं को अभिव्यक्त करना। इस प्रकार किसी विषय पर मौखिक रूप से प्रस्तुति को मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है। भाषण मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थात् मौखिक संप्रेषण का चरम और परिमार्जित रूप है जबकि मौखिक अभिव्यक्ति के माध्यम से मौखिक संप्रेषणात्मक कौशल का उत्तरोत्तर विकास किया जाता है।

एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा तैयार दस वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम तथा ईश्वर भाई पटेल, कमेटी ने हिन्दी शिक्षण के समय बालकों में मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास के उद्देश्य निम्न प्रकार निश्चित किए हैं :

☞ शुद्ध-शुद्ध उच्चारण कर सकें।

- ☞ व्याकरण सम्मत वाक्य बोल सकें।
- ☞ सामान्य रूप से बातचीत में भाग ले सकें।
- ☞ सरल ढंग से कविता और कहानियाँ सुना सकें।
- ☞ सरल और प्रभावी संवाद स्थापित कर सकें।
- ☞ तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकें।
- ☞ प्रभावोत्पादक स्वर एवं भाषा में उत्तर देने की क्षमता का विकास हो सकें।
- ☞ शब्दों का उचित प्रयोग कर सकें।
- ☞ चर्चा-परिचर्या में सहजता से भाग ले सकें।
- ☞ संवाद सुनकर अन्त:क्रिया कर सकें।

'एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा तैयार की गई प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (1985) में मौखिक अभिव्यक्ति अर्थात मौखिक संप्रेषण की उपेक्षा पर खेद प्रकट करते हुए कहा गया है कि यह कितने दु:ख की बात है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में तथा भाषा शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति के पक्ष की नितांत उपेक्षा की गई है।

5.6.2 मौखिक संप्रेषण कौशल विकास की प्रविधियाँ (Methodology of Oral Communication Skill Development)

प्राथमिक स्तर पर छात्रों की भावाभिव्यक्ति की शक्ति, शब्दावली, अर्थबोध की क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है। अत: अति परिचित विषयों-जैसे पठित विषयों-जैसे पठित विषयों से संबंधित प्रकरणों पर प्रश्नोत्तर एवं बातचीत द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति की ओर छात्रों को प्रवृत्त किया जा सकता है।

5.6.2.1 प्रश्नोत्तर एवं बातचीत (Question-Answer and Conversation)

मौखिक अभिव्यक्ति अर्थात् मौखिक संप्रेषणात्मक कौशल के विकास के लिए ''प्रश्नोत्तर एवं बातचीत'' एक महत्त्वपूर्ण प्रविधि है। इस स्तर पर मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता के लिए निर्धारित पाठ्यवस्तु का शिक्षण की प्रक्रिया के दरम्यान बच्चों से विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से संवाद कायम करना चाहिए। छात्र ध्यानपूर्वक प्रश्नों को सुनेंगे तथा अन्त:क्रिया करते हुए अपेक्षित उत्तर देने की कोशिश करेंगे। इसके जरिए विषय-वस्तु, भाषा एवं शैली (अभिव्यक्ति की शैली) में उत्तरोत्तर परिष्कार होता है। बालक चित्रों से आकर्षित होते हैं। चित्रों को बनाना भी चाहते हैं। चित्रों द्वारा उसकी आत्माभिव्यक्ति की शक्ति का विकास भी किया जा सकता है। इसके द्वारा

- चित्रों को देखकर उनका वर्णन करने हेतु प्रेरित करना।

- चित्रों को देखकर उनपर छात्रों से प्रश्न पूछना। जैसे :
  - ☞ इसमें कितने लोग हैं ?
  - ☞ इसे क्या कहते हैं ?
  - ☞ नदी में क्या देख रहे हो ? इत्यादि।

इस प्रकार पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य अवसरों पर छात्रों के साथ अध्यापक का वार्तालाप मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में सहायक होता है। प्रत्येक छात्रों को वार्तालाप में भग लेने के लिए प्रेरित करना चहिए। वार्तालाप के प्रश्न छात्रों के विषय आधारित ज्ञान तथा अनुभव परिधि के भीतर होने चाहिए।

5.6.2.2 वाद-विवाद प्रतियोगिता (Discussion)

इसमें छात्र पूर्व निर्धारित विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए अपनाई जाती है। इसमें प्रतिपक्षी वक्ता या वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत तर्कों के खंडन के लिए उसे तत्काल उचित तर्क सोचना, उचित भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। छात्रों में यहाँ आत्माभिव्यक्ति की कुशलता इस प्रकार विकसित होने चाहिए कि वे अपने प्रतिपक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों का पूर्वानुमान (अन्त:क्रिया द्वारा) कर उसके उत्तर के लिए स्वयं को तैयार रख सकें तथा स्वयं को प्रस्तुत करें।

इस प्रकार वाद-विवाद प्रतियोगिता के अन्तर्गत अन्त:वैयक्तिक संप्रेषण तथा अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण कायम होता है। मौखिक संप्रेषण कौशल के विकास में ऐसे प्रविधियों का अपना एक अलग महत्व होता है। कुशलता के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता कि समय-समय पर विभिन्न अवसरों के उपलक्ष्य पर अलग-अलग विषय-वस्तु आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय स्तर पर होते रहना चाहिए जहाँ एक सफल पेशेवर शिक्षक का मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण होता है।

5.6.2.3 भाषण (Declamation Contests)

भाषण का प्रारंभ माध्यमिक कक्षाओं से किया जाना चाहिए। व्यक्ति में वक्तृत्व कला एकाएक विकसित नहीं हो पाता है। इसके लिए जरूरी होता है बार-बार छात्रों को मंच प्रदान की जाए। वक्तृत्वकला की विभिन्न विशेषताएँ जैसे-निर्भीकता, आत्मविश्वास, विषय ज्ञान, उपस्थित श्रोताओं को उचित रीति से संबोधन, हाव-भाव आदि। इसके लिए आवश्यक होता है कि माध्यमिक कक्षाओं में सीमित शब्दावली तथा धीरे-धीरे ऊँची कक्षाओं में अधिकाधिक शब्दावली के प्रयोग पर बल दिया जाए। कक्षा 10 और 11 के छात्रों के लिए अधिक से अधिक पाँच मिनट का आशु भाषणस का आयोजन किया जा सकता है।

5.7 सारांश (Summary)

हमारे दैनिक जीवन में बोलचाल का महत्व हमें मालूम है। घर में, खेत में, विद्यालय में, समाज

में–प्रत्येक स्थान पर बोलचाल की जरूरत पड़ती है। जो बोलकर दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं, उनकी कद्र समाज में अधिक होती है।

ठीक इसी प्रकार समग्र पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका अहम होती है। व्यक्ति विभिन्न मुद्दों पर अपने भावों, विचारों, तर्कों को प्रभावशाली ढंग से रखने का प्रयास अवश्य करते हैं। जहाँ संप्रेषण कौशल की भूमिका अति महत्वपूर्ण नजर आती है। भाषा प्रयोग के चार प्रमुख कौशलों में मौखिक आत्माभिव्यक्ति की कुशलता काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मौखिक आत्माभिव्यक्ति के उन्नति का व्यापक प्रभाव लिखित आत्माभिव्यक्ति पर पड़ता है। मौखिक आत्माभिव्यक्ति संप्रेषण कौशल की प्रथम सीढ़ी मानी जाती है जहाँ एक पेशेवर शिक्षक को अति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। समग्र पाठ्यचर्या से भाषा में संप्रेषणात्मक कौशल का विकास अन्य विषयों को भी प्रभावित करता है।

5.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. संप्रेषण कौशल से आप क्या समझते हैं ? इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।

   What do you mean by Communication Skill ? Describe its different types.

2. संप्रेषण कौशल के विकास में भाषा की भूमिका का वर्णन अपने अनुभवों के आधार पर करें।

   Describe the role of language in the develop the Communication Skill.

5.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. Dillon;, J.T. (1982) Cognitive correspondenc between questions/statement and response. American Educational Research Journal,19, 540-551.
2. डॉ. उमा मंगल, हिंदी शिक्षण, 1996
3. लक्ष्मी नारायण शर्मा, भाषा, जनवरी–फरवरी–2011
4. डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया, आधुनिक–भाषा शिक्षण, 2001
5. डॉ० शिखा चतुर्वेदी, हिंदी शिक्षण–2011
6. NCF - 2005

●●●

इकाई 6: विभिन्न विषयों में भाषा

Unit 6: Language across Various Disciplines and Subjects

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

6.0 उद्देश्य (Objective)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा (Language across Curriculum)

6.3 विषय के रूप में भाषा (Language as Subject)

6.4 मानविकी एवं विज्ञान विषयों में भाषा (Language in Humanities and Science Subjects)

6.5 सर्वोत्तम अधिगम में भाषा की भूमिका (Role of Language in Optimum Learning)

6.6 सारांश (Summary)

6.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

6.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

6.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थीगण :

- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा की उपस्थिति को समझ सकेंगे।
- विषय के रूप में भाषा-अधिगम की प्रकृति को समझ सकेंगे।
- मानविकी एवं विज्ञान विषयों के अध्ययन में भाषा का स्थान एवं महत्त्व समझ सकेंगे।
- विभिन्न विषयों के सर्वोत्तम अधिगम में भाषा की भूमिका को समझ सकेंगे।

उपर्युक्त तथ्यों से अवगत कराना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

इस पाठ में बताया गया है कि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा विद्यमान होती है। स्कूली पाठ्यक्रम में कुछ भाषाओं को विषय के रूप में पढ़ायी जाती है। ऐसा करना आवश्यक होता है ताकि विद्यार्थी भाषा की बारीकियों को समझकर उसका समुचित प्रयोग कर सकें। भाषा का समुचित ज्ञान मानविकी विषयों एवं विज्ञान विषयों को पढ़ने, लिखने एवं समझने के लिए भी आवश्यक होता है। साथ ही भाषा का निर्माण सिर्फ भाषायी कक्षा में नहीं होता; बल्कि अन्य विषय एवं विद्यालयी गतिविधियों के साथ-साथ पारिवारिक परिवेश में भी भाषा का निर्माण होता रहता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने या किसी भी विषय में उत्कृष्टता के स्तर तक पहुँचने में भाषा की भूमिका बहुत प्रभावशाली होती है। अत: इस इकाई में इन्हीं बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

6.2 सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा (Language across curriculum)

पिछली इकाईयों में आपने भाषा एवं उसकी प्रकृति के बारे में अध्ययन किया। भाषा के साथ-साथ आपने उप-भाषाओं और उनकी बोलियों के बारे में भी जानकारी प्राप्त किया। आपने भाषा के विविध रूपों-मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, सांस्कृतिक भाषा एवं विदेशी भाषा के बारे में भी जानकारी प्राप्त किया। आपने यह भी जाना कि इनमें से कुछ भाषाएँ परिवेश के कारण बालक स्वत: और स्वाभाविक रूप से सीख लेता है। ऐसी भाषा को उपार्जित भाषा कहते हैं, जैसे-मातृभाषा। जबकि कुछ भाषाएँ औपचारिक शिक्षा के आरंभ के बाद विद्यालयी वातावरण में सीखा जाता है। भाषाविद् इसे भाषा अधिगम (Language Learning) का परिणाम मानते हैं। इस प्रकार बहुभाषिकता (Multilingual) का उदय होता है।

यहाँ यह भी जान लेना आवश्यक है कि भाषा न सिर्फ पाठ्यचर्या (Syllabus) का एक विषय है और अन्य विषयों को सीखने का माध्यम है, बल्कि पूरे पाठ्यक्रम (Curriculum) में इसका स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। किसी भी पाठ्यपुस्तक को पढ़ने में या कुछ भी लिखने में भाषा का प्रयोग होता ही है। छात्र वार्तालाप में भी किसी भाषा का प्रयोग करते हैं। शिक्षक अपने अनुदेशन में भाषा का प्रयोग करते हैं तथा छात्र शिक्षक अंत:क्रिया में भी किसी औपचारिक भाषा का उपयोग किया जाता है। इतना ही नहीं कक्षा के बाहर की गतिविधियों में भी हर जगह भाषा का उपयोग होता है। चाहे खेल का मैदान हो या कोई सामूहिक गतिविधि हो या किसी प्रकार का सांस्कृतिक कार्यक्रम हो उसमें भाषा का उपयोग अवश्यंभावी होता है। पाठ्य सहगामी अन्य कार्यक्रमों जैसे-भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, काव्यपाठ या अन्य साहित्यिक गतिविधियों में भी भाषा का सर्वत्र उपयोग होता है। अपने घर में भी सुबह सवेरे सोकर उठने से लेकर रात को सोने के पहले तक अपनी आवश्यकताओं, विचारों या भावनाओं को वह भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है। इतना ही नहीं सोचने-विचारने का काम भी बिना भाषा के नहीं होता है।

यह सही है कि सोचने-विचारने या किसी विषय पर चिन्तन-मनन करने में किसी शब्द या वाक्य को ध्वनि के साथ उच्चारित नहीं किया जाता है, परन्तु सोचने-विचारने का काम भी बिना भाषा के शून्य में नहीं होता है और उसी का उपयोग वह स्वप्न में करता है जिसे वह पहले से जान रहा है। ऐसा नहीं होता है कि जो व्यक्ति अंग्रेजी, फ्रेंच नहीं जान-समझ रहा है, उसके स्वप्न में ये भाषाएँ आती हों।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा का उपयोग सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में सभी विषयों में प्रमुखता से होता है। यही कारण है कि सभी शिक्षा-शास्त्रियों ने आरंभिक स्तर पर सबसे अधिक जोर भाषा की शिक्षा पर दिया है। एक बार जब किसी बालक की भाषा में पकड़ अच्छी हो जाती है तो अन्य विषयों को पढ़ना-समझना उसके लिए आसान हो जाता है। इसलिए पाई ने सही कहा है कि ''भाषा बुद्धि, संस्कृति और व्यक्तित्व का एक सूचकांक माना जाता है। (Language is considered to be an index of intelligence, culture and personality)

यदि शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में या मानव जीवन के विकास में या पाठ्यक्रम में भाषा का महत्व समझना चाहें तो थोड़ी देर के लिए मान लें यदि भाषा नहीं हो तो क्या होगा? सच तो यह है कि भाषा के बिना हम किसी भी प्रकार के अनुभव को व्यक्त ही नहीं कर सकते। अधिगम या अनुभव के तमाम पहलू भाषा के बिना पंगू मालूम पड़ता है। एक नवजात शिशु के पास भी शरीर के लगभग सारे अंग काम करते हैं, परंतु भाषा के बिना वह इतना लाचार होता है कि उसकी बात कोई समझ नहीं पाता। उसे अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा चाहिए और अनुभवों को ग्रहण करने के लिए भी भाषा की आवश्यकता होती है। डीन लिखते हैं कि ''भाषा अनुभव पर दी हुई प्रतिक्रिया है और भरपूर अनुभव के लिए भाषा का विकास अनिवार्य है।'' (Language is a response to experience and rich experience is essential to language development) यही कारण है कि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा को महत्वपूर्ण माना जाता है।

6.3 विषय के रूप में भाषा (Language as subject)

भाषा की भूमिका तो सभी विषयों में है, किन्तु एक विषय के रूप में भी भाषा का अपना महत्व है। विषय के रूप में भाषा के अध्ययन से तात्पर्य उस भाषा के अध्ययन भी हो सकता है जिसके माध्यम से रोजी रोजगार में या उच्च शिक्षा में मदद मिले। भारत के सन्दर्भ में 'त्रिभाषा-सूत्र' पर अमल करते हुए किसी प्रान्तीय भाषा या प्राचीन भाषा (जैसे संस्कृत) का अध्ययन भी एक विषय के रूप में किया जा सकता है। भाषा पर अच्छी पकड़ एवं उसके प्रयोग का समुचित कौशल न सिर्फ विद्यालय में सभी विषयों एवं गतिविधियों में सहायक होता है, बल्कि समाज में भी विशिष्ट पहचान कायम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा की अद्भुत भूमिका रही है। भाषा मानव के सोचेने-विचारने का माध्यम रहा है। भाषा के विकास से बालक का समाजीकरण होता है तथा वह समाज में रहने लायक और अन्य सदस्यों से अंत:क्रिया के योग्य बनता है।

सामान्य तौर पर सभी भाषा में छोटे-छोटे संकेत या चिह्न होते हैं जिन्हें वर्ण, अक्षर या अल्फाबेट जैसे नामों से जाना जाता है। पुन: उन वर्णों या अक्षरों को मिलाकर शब्द का निर्माण किया जाता है और शब्दों से मिलकर वाक्य बनते हैं जो कि सम्प्रेषण का माध्यम होता है। वर्णों से बने शब्द, शब्दों से बने वाक्य सभी लिखित या मौखिक अभिव्यक्ति के साधन हैं; किन्तु हर भाषा की अपनी विशिष्टता होती है। जब उस भाषा का अध्ययन एक विषय के रूप में किया जाता है तब हम उसकी विशिष्टताओं से परिचित होते हैं, उसके विभिन्न शब्दों के अर्थ एवं उपयोग को हम जान पाते हैं। साथ ही हरेक भाषा में वाक्य-रचना का भी अपना विशिष्ट ढंग होता है, उसकी अपनी बारीकियाँ होती हैं जिसको जानना समझना आवश्यक होता है। इतना ही नहीं सभी भाषाओं में अक्षरों या शब्दों के उच्चारण का भी अपना तरीका होता है जो कि अन्य भाषाओं से अलग होता है। जब हम किसी भाषा को विषय के रूप में पाठ्यचर्या का हिस्सा बनाते हैं तो उसकी इन तमाम विशिष्टताओं का अध्ययन व्याकरण के रूप में बारीकी के साथ करते हैं।

विद्यालयी पाठ्यक्रम में जब भाषा की शिक्षा एवं परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य घोषित किया गया, तब भाषा शिक्षा को आरंभ में बहुत संकीर्ण दायरे में लिया गया। विषय के रूप में भाषा के अध्ययन में मुख्य रूप से पुस्तकों को पढ़ना, शुद्ध-शुद्ध लिखना एवं व्याकरण के नियमों को आत्मसात करने पर ही अधिकाधिक जोर दिया जाता था। साहित्य की विधाएँ सीमित थीं और उसमें आमजन का या पाठक का ध्यान न रखकर गूढ़ विचारों एवं सिद्धांतों को मान्यता दी जाती थी। उस समय सम्प्रेषण क्षमता के विकास, व्यावहारिक जीवन में अंत:क्रिया या भाषागत उपयोग के विभिन्न सन्दर्भों का ध्यान नहीं रखा जाता था। श्रृंगारिक भाषा को व्यावहारिक भाषा से बहुत अधिक महत्व दिया जाता था। आधुनिक युग में जीवन के नये आयामों के विकास के साथ ही भाषा एवं साहित्य में नयी-नयी विधाओं का जन्म होता गया। श्रृंगारिकता की तुलना में भाषा में उपयोगिता या व्यावहारिकता पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। भाषा में अब 'उपयोग की भाषा' पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसमें सम्प्रेषण का विकास सबसे प्रमुख है। भाषा की शिक्षा में अब वार्तालाप के ढंग, साक्षात्कार की विधि, व्यावहारिक आवेदन पत्र, निमंत्रण-पत्र, मेल भेजने की भाषा पर अधिक जोर दिया जाता है।

सूचना सम्प्रेषण के इस युग में मीडिया का अधिकाधिक महत्व एवं दखल हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में बढ़ गया है। आज शायद ही कोई व्यक्ति है जो पत्र-पत्रिकाओं या रेडियो, टेलीविजन आदि सभी चीजों से अछूता हो। ऐसे में भाषा शिक्षण में भी रिपोर्ट-लिखना, किसी घटना का विवरण तैयार करना, सामयिक चिंतन का उपयोग करना आदि को प्रमुखता दी जाती है। विभिन्न माध्यमों या न्यूज चैनलों में लोकप्रियता की होड़ के कारण भी भाषा में अब नित्य नये प्रयोग हो रहे हैं, साथ ही सिनेमा उद्योग एवं टेलीविजन पर नये-नये मनोरंजक चैनलों के विकास के कारण संवाद-लेखन, परिदृश्य लेखन, गीत लेखन आदि विधाओं में भी अपार संभावनाओं का उदय हुआ है, जिस सबके केन्द्र में भाषा है। इंटरनेट के जमाने में एक बार फिर नए शिरे से कवि सम्मेलन, हास्य-कवि सम्मेलन एवं मुशायरा आदि की लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी है और इसी के साथ आर्थिक लाभ की भी संभावनाएँ भी बहुत बढ़ गयी हैं। अपने देश में अभी

हिन्दी एवं उर्दू में ऐसे अनेक कवि या शायरों के नाम मशहूर हैं। जिनकी लोकप्रियता एवं कमाई आसमान छू रही है। ऐसे में एक विषय के रूप में भाषा शिक्षण में भी नयी प्रवृत्ति का उदय होना आवश्यक हो जाता है। व्याकरण भी पहले अपनी सीमाओं में बँधा हुआ 'उपयोग की भाषा' से अलग जान पड़ता था, जिसमें नियम एवं सिद्धांतों को जानने एवं शब्दों, मुहावरों आदि को रटने पर अधिक जोर दिया जाता था। अब व्याकरण का प्रयोग भी 'उपयोग की भाषा' या व्यावहारिक भाषा के साथ किया जाता हे। व्याकरण शिक्षण के महत्व को कम करके आँकना तो गलत होगा, लेकिन सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा में व्याकरण को उपयुक्त स्थान मिलना चाहिए। भाषा में व्याकरण को उपयुक्त स्थान मिलना चाहिए। इसी प्रकार सारांश-लेखन या संक्षेपण लिखना, वाद-विवाद, एकांकी या नाटक का आयोजन करना भी भाषा-शिक्षण के अन्तर्गत ही आता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा न सिर्फ एक माध्यम के रूप में ही दूसरे विषय को पढ़ने के काम आता है; बल्कि एक विषय के रूप में इसका पर्याप्त महत्व है। इसलिए विषय के रूप में भाषा को पढ़ाते हुए शिक्षकों को कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

- भाषा शिक्षकों को यह जानना चाहिए कि भाषा का अर्जन या अधिगम क्रमशः चार सोपानों में होता है-सुनना, बोलना, पढ़ना और तब लिखना। बालक जिस समुदाय या समाज में रह रहा है, यदि वहाँ भाषा को अशुद्ध या गलत तरीके से बोला जाता है तो बालक सुनता भी गलत है। फिर उसी का नकल करके वह गलत बोलने लगता है। फलतः वह पढ़ने और फिर लिखने में भी गलती करने लगता है। अब शिक्षक का दायित्व है कि वह बच्चे को सर्वप्रथम सही-सही पढ़ना सिखाए (अक्षर या शब्द को), तब लिखने में शुद्धता आयेगी और नियमित अभ्यास के उपरांत वह शुद्ध-शुद्ध बोलने भी लगेगा। इसके लिए शिक्षक को तीक्ष्ण अवलोकन कर, बालक के भाषा प्रयोग में सक्रिय हस्तक्षेप करना पड़ेगा।
- हरेक भाषा को पढ़ने में या उसके शब्दों को उच्चारित करने में कुछ विशिष्ट तरीकों का प्रयोग किया जाता है तथा उसे लिखने का भी कुछ खास तरीका होता है उसको बारीकी से बताना और उसका अभ्यास कराना भाषा विषय के शिक्षक का दायित्व है।
- वाक्य के विभिन्न शब्दों का जो वर्गीकरण भाषा विषय में किया जाता है वह अन्य विषयों में भी मौजूद होता है, उसे दृष्टांत देकर बताना। उदाहरण के तौर पर हिन्दी की कक्षा में यदि संज्ञा का भेद या अंग्रेजी की कक्षा में 'काइन्ड्स ऑफ नाउन' पढ़ाया जाता है तो विज्ञान की किताबों से भी दृष्टांत लेकर बच्चों को बताया जाना चाहिए कि यह शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है तो यह जातिवाचक संज्ञा। अंग्रेजी माध्यम में लिखी हुई या छपी हुई पुस्तक में भी बच्चों को पन्ना पलटकर बताया जाना चाहिए कि प्रॉपर नाउन के शब्दों को वाक्य के बीच में हम कैपिटल लेटर में लिखते हैं, प्रश्नों को लिखते समय प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग करते हैं और टेन्स के नियमों का ध्यान रखकर ही विज्ञान विषय के भी वाक्य लिखे जाते हैं।

- अपने विद्यालय के या दूसरे विद्यालयों के शिक्षकों को भी भाषा के महत्व को विद्यार्थी के सामने नकारने से बचने को प्रेरित करें। वे अपने साथियों से विनम्र अपील करें कि भले ही उनकी भाषा कमजोर हो परंतु वे छात्रों से ये नहीं कहें कि विज्ञान और तकनीकी के युग में अब भाषा का महत्त्व नहीं रहा। आखिर विज्ञान की पुस्तकों को लिखने में भी तो सर्वत्र भाषा का प्रयोग होता है। गणित के सवाल और सिद्धांत भी तो भाषा का उपयोग करके ही लिखे जाते हैं। विज्ञान और गणित विषयों में भी तो अनुसंधान के निष्कर्ष को अच्छी भाषा में प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है।
- अपने विद्यालय के बच्चों एवं अन्य शिक्षकों को भी बताएँ कि भाषा सभी विषयों में विद्यमान है और उसे समझने की आवश्यकता है। उस समझ को पुख्ता करने में अपने बच्चों तथा साथी शिक्षकों का सहयोग करें और पुनः अपने साथी शिक्षकों से भी अच्छी भाषा के अधिगम में सहयोग का आग्रह करें।
- उन्नत तकनीकी के युग में बेहतर श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग कर भाषा कक्षा को रोचक, सुगम और ज्ञानवर्धक बनाएँ, ताकि अधिगम प्रक्रिया फलदायी हो।
- ''छोटा लक्ष्य रखना अपराध है'' (Small aim is crime) इस सिद्धांत का प्रयोग कर अधि गम की उन्नत विधाओं का प्रयोग करें एवं विद्यालय में प्रतियोगी वातावरण का सृजन करें। उदाहरण के लिए भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, पत्र-लेखन प्रतियोगिता का नियमित आयोजन करें। जहाँ तक संभव हो, जज की भूमिका में भी विद्यार्थियों को आगे लाएँ। कविता याद करने या सुनाने में स्वतंत्रता देते हुए कवि-सम्मेलन का आयोजन करें या अंत्याक्षरी प्रतियोगिता करवाएँ। बच्चे को अखबार या टी० वी० का रिपोर्टर या सम्पादक बनाकर उनसे काम लेकर देखें। उन्हें नाटक में ही सही किसी बड़े पद पर आसीन कर उन्हें वाद-विवाद में उतारें।

उपर्युक्त उपाय करने से न सिर्फ बच्चों की भाषागत् कौशल का विकास होगा, वरन् रचनात्मक क्षमता का विकास भी आश्चर्यजनक स्तर तक हो सकेगा।

6.4 मानविकी एवं विज्ञान विषयों में भाषा (Language in Humanities and Science Subejcts)

स्कूली शिक्षा में भाषा, मानविकी विषयों एवं विज्ञान विषयों की पढ़ाई को खासकर माध्यमिक स्तर तक आते-आते अलग-अलग विषय या संकाय के रूप में देखा जाने लगता है। विषयों की यह विशिष्टता उच्च शिक्षा या शोध के स्तर पर और अधिक स्पष्ट हो जाती है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि अनेक

विषय या संकाय विभिन्न उपागम (Approach) का कार्य करते हैं, परंतु ये एक दूसरे से जुड़े हैं। मानविकी विषयों एवं विज्ञान विषयों को अक्सर दो भिन्न-भिन्न या विरोधाभासी उपागमों (Approaches) के रूप में लिया जाता है, परंतु ये दोनों भी मानव-संस्कृति के विकास के दो भिन्न उपागम हैं, जिसमें भाषा का स्थान सर्वत्र महत्त्वपूर्ण है। भाषा के बिना न तो कोई मानविकी विषय अपना आकार ग्रहण कर सकता है और न ही विज्ञान का अध्ययन आगे बढ़ सकता है। इसलिए भाषा तो सभी विषयों में विराजमान है। यद्यपि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि की पढ़ाई भाषा विषय में होती है, किन्तु ये सभी मानविकी और विज्ञान विषयों की पढ़ाई-लिखाई में समान रूप से विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार वाक्य की संरचना या वाक्य की बनावट के संबंध में भले ही भाषा के विषय में ही पढ़ाई होती हो, किन्तु वाक्य का प्रयोग सभी विषयों में होता है। भाषा के अतिरिक्त शब्दों का समुचित प्रयोग एवं वाक्य को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करना सभी विषयों में अपेक्षित होता है।

अगर हम इतिहास की बात करें तो किसी भी काल के इतिहास का सबसे बड़ा स्त्रोत उस समय का साहित्य ही होता है। भाषा और साहित्य में गहरा संबंध होता है, जबकि वहीं साहित्य इतिहास को जानने, समझने का स्रोत बनता है। (प्रागैतिहास इसका अपवाद इसलिए है क्योंकि उस समय भाषा, शिक्षा जैसी किसी चीज का आविष्कार या विकास हुआ ही नहीं था) अगर एक इतिहासकार पौराणिक काल की भाषा या साहित्य का सहारा नहीं ले तो इतिहास लेखन में कुछ रह ही नहीं जाएगा। आज की जो राजनीति या अर्थनीति है वह कुछ दशक या पिछली एक-दो शताब्दी की देन है, जिसे हम इतिहास की देन कह सकते हैं और आज की जो राजनीति है वही कुछ दशकों के बाद इतिहास के पन्नों में दर्ज हो जाएगी। इन सभी विषयों की शब्दावली में या घटनाओं के वर्णन में भाषा का अपरिहार्य स्थान है।

इसी प्रकार भौगोलिक घटनाओं या प्रक्रियाओं के वर्णन, स्पष्टीकरण, विश्लेषण, मूल्यांकन, नामकरण या उसके प्रति दृष्टिकोण विकसित करने में भाषा की भूमिका सर्वत्र है। भूगोल में अध्ययन का दायरा इतना व्यापक हो गया है कि नित्य नवीन घटनाओं एवं परिस्थितियों के बारे में इसमें अध्ययन एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालना होता है। ऐसे में सक्षम भाषा की आवश्यकता हमेशा महसूस होती है। अंतरिक्ष विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी जैसे नवीन विषयों में भी जहाँ नित्य नए खोज होते रहते हैं एवं नयी शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है, जहाँ भी सक्षम भाषा की सहायता ली जाती है।

स्कूली शिक्षा में विशेष रूप से माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान को प्रायोगिक क्रिया के वर्णन एवं परिणाम के विश्लेषण हेतु भाषा नितांत आवश्यक हो जाता है। विज्ञान की पुस्तकों को भी किसी भाषा में लिखा जाता है और पुस्तक को भी पहली बार लिखने के समय एवं फिर छपने के बाद पढ़ने के समय भाषा ज्ञान की आवश्यकता होती है। विज्ञान की पुस्तक में भी जो प्रश्न उठाए जाते हैं एवं सिद्धांत की व्याख्या की जाती है, भाषागत् शुद्धता अपेक्षित होती है। विज्ञान के पुस्तक में भी उपयुक्त शब्द एवं सही वाक्य की बनावट उतनी ही अपेक्षित होती है जितनी कि अन्य विषयों में। विज्ञान विषयों की पढ़ाई

करते हुए शिक्षण में सुविधा हेतु यह निर्णय लेना अपेक्षित होता है कि अध्येता को उसकी प्रथम भाषा में अध्ययन करना है या द्वितीय भाषा में या तृतीय भाषा में। किन्तु एक बार जब किसी भाषा को माध्यम के रूप में अपना लिया जाता है तब उस भाषा में पढ़ाई-लिखाई में भाषागत् शुद्धता भी अपेक्षित होती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी माध्यम से विज्ञान पढ़ते समय विज्ञान की पुस्तक में भी सी.वी. रमण का नाम लिखा जाएगा तो उसमें C, V और R बड़े अक्षरों (कैपिटल लेटर्स) में ही लिखा जाएगा जैसा कि Proper Noun को लिखने का तरीका है। हिन्दी या अंग्रेजी में प्रश्न पूछा जाएगा या विज्ञान के पाठ के अंत में अभ्यास प्रश्न दिया रहेगा तो उसमें भी प्रश्नवाचक चिह्न का ही प्रयोग होगा।

स्कूली शिक्षा में विज्ञान विषयों में जिन तीन विषयों को समाहित किया जाता है, वे हैं-जीव-विज्ञान, भौतिकी विज्ञान एवं रसायन विज्ञान। ये तीनों ही प्राकृतिक विज्ञान हैं एवं प्रकृति के रोमांचक अनुभव एवं घटनाओं का वर्णन एवं विश्लेषण इसमें शामिल होता है। ऐसा करने में अच्छे भाषा की आवश्यकता होती है। फिर प्रयोगशाला में भी घटित घटनाओं एवं प्रक्रिया को लिखने-पढ़ने में भाषा का पर्याप्त इस्तेमाल होता है। विज्ञान में कुछ तकनीकी शब्द होते हैं और कुछ गैर-तकनीकी शब्द। तकनीकी शब्द उस विषय विशेष में विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है जबकि अन्य शब्द भाषा के सामान्य शब्द की तरह होते हैं। जैसे भौतिकी में 'Resistance' शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है जो कि भाषा में उसके अर्थ से अलग है। इसी प्रकार समंजन-क्षमता (power of accommodation) का प्रयोग भौतिकी में साफ-साफ देखने की क्षमता से संबंध रखता है। जीव विज्ञान में 'जैव-विविधता' शब्द का प्रयोग होता है। अगर विविधता का सही अर्थ अध्येता को पता है कि यह 'भिन्न-भिन्न प्रकार का' होता है तो जैव-विविधता को समझने में उसे सहायता मिलती है। इसी प्रकार 'जैव-प्रक्रम', 'उत्सर्जन' या 'परिवहन' शब्द का प्रयोग जीव-विज्ञान में होता है। यहाँ कुछ अर्थ सामान्यता के लिए होता है तो कुछ विशिष्टता भी; किन्तु भाषा सभी जगह विद्यमान रहती है।

6.5 सर्वोत्तम अधिगम में भाषा की भूमिका (Role of Language in Optimum Learning)

अभी तक के विचार-विमर्श से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके हैं कि किसी भी विषय के अध्ययन-अध्यापन में भाषा एक माध्यम का काम करती है। भाषा के बिना किसी भी विषय के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की कल्पना करना भी अत्यंत कठिन लगता है। इतना ही नहीं भाषा को माध्यम के रूप में उपयोग करके ही सोचने, विचारने, कल्पना करने, अनुमान लगाने या किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में मदद मिलती है। भाषा की प्रखरता का संबंध आदमी की बुद्धिमता से होती है। रोजर बेकन (Roger Bacon) के अनुसार ''भाषाओं का ज्ञान बुद्धिमता का द्वार है।'' (Knowledge of languages is the doorway to wisom.) फ्रैंक स्मिथ ने भी भाषा की भूमिका पर कहा कि-''एक भाषा आपको जीवन के

लिए एक गलियारा में स्थापित करती है। दो भाषाएँ उसके (जीवन के) प्रत्येक द्वार को खोल देती है।'' (One language sets you in a corridor for life. Two languages open every door along the way.) किसी भी विषय के शिक्षण-अधिगम में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए भाषा का ज्ञान अनिवार्य होता है। यदि किसी खोज, सिद्धान्त या घटना का विवरण शुद्ध एवं सटीक भाषा में प्रस्तुत किया जाता है तो वह अध्येता या श्रोता के लिए सरल, सुगम एवं सुग्राह्य हो जाता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि सर्वोत्तम अधिगम में उपयुक्त भाषा का प्रयोग बहुत मायने रखता है।

(1) **प्रभावी शिक्षण-अधिगम में (In effective teaching and learning)—**

किसी भी विषय को उत्कृष्ट ढ़ंग से पढ़ने, लिखने या सीखने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा का सहारा लेकर ही किसी वस्तु या घटना का विवरण देते हैं। किसी सजीव या निर्जीव वस्तु के नामकरण में भी भाषा का प्रयोग किया जाता है। यदि उपयुक्त शब्द या वाक्य का व्यवहार हो तो शिक्षण भी प्रभावी होता है और अधिगम आसान हो जाता है।

(2) **संकल्पना के विकास में (In developing concepts)—**

किसी भी विषय में संकल्पना का निर्माण एवं विकास अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। विज्ञान विषयों में तो संकल्पना का विकास और भी आवश्यक हो जाता है। संकल्पना के विकास के बिना विज्ञान का शिक्षण अधूरा एवं अपर्याप्त माना जाता है। किसी भी वैज्ञानिक घटना को समझने-समझाने, उसे परिभाषित करने और उसके प्रति दृष्टिकोण विकसित करने में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया के बारे में धारणा विकसित करने या उसपर तर्क-वितर्क करने में भी भाषा की भूमिका प्रमुख होती है।

(3) **अनुसंधान कार्य में (In research work)—**

किसी भी विषय को जीवन्त एवं उपयोगी बनाए रखने के लिए उस विषय में नित्य अनुसंधान होते रहना अनिवार्य माना जाता है। आधुनिक युग में विज्ञान को जो महत्ता और प्रतिष्ठा मिलती है, उसका कारण उसमें निरंतर अनुसंधान होते रहना है। अनुसंधान के जितने भी चरण हैं उसमें आरंभ से लेकर अंत तक भाषा की भूमिका प्रमुख होती है। अनुसंधान में समस्या की पहचान से लेकर परिकल्पना के निर्माण तक भाषा का प्रमुखता से सहारा लिया जाता है। अनुसंधान की प्रक्रिया का विश्लेषण करने या तर्क-वितर्क कर निष्कर्ष लिखने में भी भाषा का प्रयोग होता है। पुनः प्रतिवेदन की प्रस्तुति में भी अच्छी भाषा का प्रयोग अपेक्षित माना जाता है। यही कारण है कि वैज्ञानिक नियमित रूप से नये-नये शोध

प्रतिवेदन, लेख, आलेख आदि का अध्ययन करते रहते हैं। वैज्ञानिक भी इन कार्यों में उत्कृष्टता के लिए भाषा की भूमिका को स्वीकारते हैं।

(4) स्कूली शिक्षा की सफलता (Success of school education)—

सम्पूर्ण स्कूली शिक्षा की सफलता में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी विषय में प्रश्न पूछने, धारणा विकसित करने या तर्क-वितर्क करने में भाषा माध्यम का काम करती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उच्च स्तरीय सोच एवं कौशल के विकास में भाषा की केन्द्रीय भूमिका होती है। किसी भी विषय में व्याख्या करने या कक्षा-कक्ष में संवाद स्थापित करने में उत्कृष्टता तभी आती है, जब भाषा का स्तर उच्च हो।

(5) मूल्यांकन हेतु (For evaluation)—

शिक्षण-अधिगम में सफलता का आकलन करने के लिए मूल्यांकन भी आवश्यक है। यह मूल्यांकन लिखित या मौखिक परीक्षा के आधार पर किया जाता है। विज्ञान विषयों में मूल्यांकन हेतु प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन भी प्रमुखता से किया जाता है। अब तो सामाजिक विज्ञान विषयों में भी प्रायोगिक परीक्षा में उसकी प्रक्रिया के वर्णन हेतु या निष्कर्ष को लिखने-बोलने में भाषा का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। लिखित और मौखिक परीक्षा चाहे वस्तुनिष्ठ हो या निबन्धात्मक, भाषा का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। साथ ही मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पूछे गये प्रश्न में स्पष्टता और सरलता दोनों हो। प्रश्न बोधगम्य हों और द्विअर्थी कदापि नहीं हो। इस सबके लिए भाषा का सही ज्ञान एवं उसका प्रयोग आवश्यक होता है। एक उत्कृष्ट प्रश्नावली के निर्माण में भाषा की भूमिका प्रमुख होती है।

(6) व्यावसायिक प्रशिक्षण और बाजारी प्रतिस्पर्धा में (In professional training and market)—

आज का हर पढ़ा-लिखा युवा बेहतर पेशेवर करिअर को अपनाना चाहता है और वैश्वीकरण के युग में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में जाकर अपनी उत्कृष्टता साबित करना चाहता है। ऐसे में चाहे प्रशिक्षण की बात हो या नौकरी करने की, उसमें भाषा का ज्ञान भी उसकी सफलता में एक अनिवार्य शर्त बन जाता है। आई०आई०टी० जैसे यहाँ के उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी संस्थान में देश के भिन्न-भिन्न भागों से विद्यार्थी नामांकन लेते हैं और देश विदेश के विद्वान शिक्षक एवं वैज्ञानिक शिक्षण कार्य करते हैं। ऐसे में उनकी भाषा समृद्ध न हो तो अध्ययन, अध्यापन, शोध, प्रतिवेदन-प्रकाशन आदि का काम नहीं हो पायेगा। इसी प्रकार वैश्विक बाजार के खुल जाने के कारण आज बाजार की प्रतिस्पर्धा भी

चरम पर है। इस प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए उत्कृष्ट सम्प्रेषण क्षमता भी अनिवार्य है। इन सारे कार्यों के लिए एक ही नहीं, बल्कि एक से अधिक भाषा का समुचित ज्ञान आवश्यक और अपेक्षित हो जाता है।

(7) **सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी हेतु (For active participation in public life)—**

शिक्षण-अधिगम की उत्कृष्टता या व्यावसायिक सफलता का एक पैमाना यह भी है कि व्यक्ति का किस हद तक सामाजीकरण हुआ है; अर्थात् वह सामाजिक गतिविधियों में कितनी सक्रियता के साथ भाग ले पाता है। सार्वजनिक जीवन में सहभागिता भी व्यक्ति के व्यवहार कुशलता एवं सम्प्रेषण क्षमता पर निर्भर करती है। सम्प्रेषण क्षमता का गहरा संबंध भाषा ज्ञान से है। अत: भाषा का उत्कृष्ट ज्ञान एवं प्रयोग व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में सफल बनाता है।

(8) **आधुनिक ज्ञान समाज की माँग पूरी करने में (In order to fulfil the demands of modern knowledge society)—**

आधुनिक युग ज्ञान-विज्ञान का युग है। आज के समाज में ज्ञान का महत्व है। ''ज्ञान ही शक्ति है'' (Knowledge is power) इसे सम्प्रत्यय के तौर पर समाज स्वीकारता है। इस ज्ञान आधारित समाज की माँग को पूरा करने में भाषा की भूमिका सर्वत्र होती है। सभ्य एवं शिक्षित समाज में उच्च स्तरीय अंत:क्रिया की अपेक्षा हरेक व्यक्ति से की जाती है चाहे वह किसी भी विषय या क्षेत्र को व्यावसायिक जीवन में अपनाए। ऐसे आधुनिक समाज में यदि कोई व्यक्ति उत्कृष्ट भाषा का प्रयोग नहीं कर पाता है तो उसे शैक्षिक रूप से पिछड़ा माना जाता है और हेय दृष्टि से देखा जाता है। इस स्थिति में भाषा का ज्ञान आधुनिक ज्ञान समाज की माँग को पूरा करने में सहायक होता है।

6.6 सारांश (Summary)

स्कूली शिक्षा में भाषा-शिक्षण को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में लिया जाता है। अक्सर यह मान लिया जाता है कि भाषा का अध्ययन हिन्दी, अंग्रेजी या संस्कृत की कक्षा में होता है। किन्तु भाषा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में विद्यमान होती है। चाहे सामाजिक विज्ञान हो या प्राकृतिक विज्ञान, गणित हो या कला विषय भाषा का प्रयोग सभी विषयों को लिखने, पढ़ने, सम्प्रत्यय निर्माण, धारणा विकसित करने आदि में होता है। किसी विषय पर सोचने-विचारने, प्रश्न पूछने एवं समझ विकसित करने में भी भाषा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। मानक भाषा का समुचित ज्ञान किसी भी विषय के सर्वोत्तम अधिगम में सहायक होता है जबकि

भाषागत कमजोरी किसी भी क्षेत्र या विषय में व्यक्ति के विकास को सीमित करके रख देती है। भाषा का निर्माण भी सिर्फ भाषा की कक्षा में नहीं होता; बल्कि यह किसी भी कक्षा में पढ़े, लिखे, बोले या सुने जाने के दौरान होता है। इतना ही नहीं भाषा का निर्माण कक्षा से बाहर की गतिविधियों में एवं विद्यालय के बाहर परिवार या आसपास के परिवेश में भी होता रहता है। यह सत्य है कि भाषा को विषय के रूप में पढ़ने-पढ़ाने के दौरान भाषा की बारीकियों को विशेष रूप से सीखने, समझने एवं अभ्यास करने का उत्तरदायित्व होता है, परनतु किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में या किसी भी विषय के सर्वोत्तम अधिगम में भाषा का ज्ञान बहुत मायने रखता है।

6.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा के महत्व एवं भूमिका की व्याख्या कीजिए।
   Explain the importance and role of language across curriculum.
2. विषय के रूप में भाषा शिक्षण को स्कूली शिक्षा में किस प्रकार उपयोगी बनाया जा सकता है?
   How can the teaching of language as subject be made useful in school education ?
3. मानविकी एवं विज्ञान विषयों के अध्ययन में भाषा का ज्ञान किस प्रकार सहायक होता है? व्याख्या करें।
   How is the knowledge of language helpful in the study of humanities and science subjects ? Explain.
4. विभिन्न विषयों में सर्वोत्तम अधिगम की उपलब्धि में भाषा की भूमिका है?
   What is the role of language in achieving the optimum learning in different subjects ?

6.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- Smith, Frank (1887) : Joining the Literacy Cluf : Further Essays into Education, Heinemann, South Africa.
- Taj, Dr. Haseen and Bhargava, Dr. Mahesh (2016) : Language Across The Curriculu, Rakhi Prakashan, Agra, U.P.
- चतुर्वेदी, स्नेहलता (2016-17) : पाठ्यक्रम में भाषा, आर्यन प्रिन्टर्स, आगरा।

●●●

BLOCK — 3

इकाई 7: विभिन्न विषयों में पठन
Unit 7 : Reading in different content area

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

7.0 उद्देश्य (Objective)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

7.2 पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया (Reading and the Reading Process)

7.3 पढ़ना सीखना (Learning to Read)

7.4 नोट-लेना (Note-taking)

7.5 सारांश (Summary)

7.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

7.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

7.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया से अवगत होंगे,
- प्रभावी पढ़ने का निर्देशन को समझेंगे,
- पढ़ने सीखने की नीतियाँ जानेंगे,
- स्कैनिंग और स्किमिंग की जानकारी प्राप्त करेंगे,
- नोट लेने की विधि विकसित करेंगे,
- प्रभावी नोट लेने के महत्वपूर्ण लाभ को जानेगे,
- नोट लेने और नोट बनाने के अंतर से अवगत होंगे,

उपर्युक्त तथ्यों से अवगत कराना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

पाठक किसी भी विषय वस्तु को विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ते हैं कभी-कभी वे सुख के लिए पढ़ते हैं और कभी-कभी वे जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं। पढ़ने का कारण हर समय पाठक पर निर्भर करता है और वह उसको प्रभावित करता है। पाठक पढ़ाई इसलिए करते हैं कि वे सावधानीपूर्वक चीजों को समझ सके और उनको इसका ज्ञान हो सके। इस प्रक्रिया के दौरान, पाठकों के ज्ञान के निर्माण की निगरानी रखी जाती है। जब पाठक उनके उद्देश्यों को पूरा नहीं करता है, तो पाठक उस पाठ को छोड़कर दूसरे पाठ पर ध्यान देते हैं। पाठकों की अपेक्षा है कि वे जो भी पढ़े उसको सही से समझने के लिए निरन्तर पढ़ते रहे। पाठक विभिन्न रणनीतियों का प्रदर्शन और उपयोग करते हैं, जैसे विचारों को स्पष्ट करने के लिए पुनर्विचार, पुनः उसी चीज को पढ़ना या फिर उसी को पढ़ना, वे इसलिए करते हैं कि यह सुनिश्चित करें कि वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफलता प्राप्त कर रहे हैं और उसी सोच से पाठक निरंतर पढ़ते हैं।

7.2 पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया (Reading and the Reading process)

7.2.1 पाठन क्या है? (What is Reading ?)

पढ़ना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें पाठकों को उद्देश्यपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक संज्ञानात्मक और भाषाई सब का एक साथ ज्ञान होना चाहिए यही ज्ञान उसको नियमित मदद करती है। कोई भी पाठक बोली जाने वाली और लिखित भाषा, साथ ही साथ पाठ के विषय का ज्ञान और उनकी संस्कृति का ज्ञान सही का सही मायने में उपयोग करना सही प्रकार से सिखाता है उसको पाठ का अर्थ और उसके ज्ञान के निर्माण करने के लिए जो भी उपयोगी होता है उसका ज्ञान होना जरूरी है। इस प्रकार के ज्ञान प्राप्ति का अर्थ है कि पाठकों ने प्रिंट के माध्यम प्राप्त सामग्री से अपने ज्ञान का निर्माण किया है। पाठक आसानी से उस बात से परिचित हो जाता है जिसको उसको अपनी भाषा के माध्यम से पाठ को समझाया जाता है लेकिन एक अपरिचित भाषा के साथ पाठ को समझने में उसको दिक्कत होती है और वो कम सफल हो पाता है। पाठक परिचित विषयों के पाठ को आसानी से समझते हैं लेकिन अपरिचित विषयों को समझने में समय लेते हैं और कम सफल होते हैं। पाठ के साथ व्याख्या समझाने से पाठकों में ज्ञान का निर्माण होता है, साथ ही साथ वे जो पाठ पढ़ते और अच्छी तरह से समझते हैं, वे उन पाठ को और भी अच्छी तरह से समझते हैं जो उनके जीवन के अनुभवों से प्रभावित होते हैं।

सामाजिक, सांस्कृतिक, संज्ञानात्मक और भाषायी प्रणालियों के माध्यम से पाठकों को प्रिंट मीडिया के मदद से भी प्राप्त ज्ञान काफी हद तक सहज और युक्त लगता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग जानते हैं कि वे पाठ की व्याख्या करने के लिए अपने जीवन के अनुभवों का उपयोग करते हैं और यह कि जीवन

के पाठों को पाठक से और समुदाय से समुदाय तक अलग-अलग अनुभव प्राप्त करते हैं, इसलिए वे अपने पाठ में उन सब बातां का समावेश करके पाठ की व्याख्या करते हैं। इसी तरह, कुछ लोग जानते हैं कि जब वे आँकड़ों के बारे में पढ़ रहे हैं तो वे वाक्यांश को दाहिनी ओर रखकर उन सभी आंकड़े को अच्छी तरह समझते हैं, पंक्तियों और स्तंभों में अंकों का मतलब को सही रूप में समझते हैं, लेकिन जब वे शिल्प के बारे में पढ़ते हैं, तो वे उसी वाक्यांश को समझते हैं और उसको भी उसी तरह समझाने की पूरी तरह कोशिश करते हैं।

लेखकों ने यह भी योगदान दिया है कि पाठकों को कितनी अच्छी तरह एक पाठ पढ़ाया जायेगा। लेखक की भाषा और विषय के ज्ञान और लिखित भाषा के सही उपयोग करने में पाठक के कौशल और विषय वस्तु के सही अर्थ का निर्माण करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। जिस तरह से पाठकों और लेखकों ने भाषा की समझ होती है उसी तरह लेखक विषय वस्तु को समझाने का भी प्रयास करते हैं जो पाठ के विषय को प्रभावित करता है, और वही उनकी समझ को कितनी अच्छी तरह से एक दूसरे के साथ संवाद के माध्यम से पहुँचाते हैं जो उस पाठ की सफलता का मूल मंत्र है।

7.2.2 कुशल पाठन क्या है? (What is Efficient Reading ?)

जब आप किसी ऐसे विषय की जानकारी के लिए एक किताब, एक समाचार पत्र या पत्रिका को पढ़ते हैं जिसमें आप रूचि रखते हैं, या जब आप किसी विषय को अध्ययन के पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में पढ़ते हैं, वो वह आपको किस प्रकार से मदद करता है ये बहुत मायने रखता है। यदि आप एक अच्छे पाठक हैं तो आप निश्चित रूप से उस विषय वस्तु के प्रत्येक शब्द को सावधानी से पढ़ते हैं आप उसे किसी उद्देश्य के साथ पढ़ते हैं, और उसकी समझ को जैसा आप चाहते हैं अपनी आँखों के माध्यम से उसको अपने ज्ञान का हिस्सा बना लेते हैं और उसी की मदद से आप आगे बढ़ते हैं और भविष्य में आगे आने की संभावना का अनुमान लगाते हैं और आपके पूर्वानुमानों को समायोजित करते हैं।

छात्रों को अंग्रेजी में इस तरह पढ़ना और सीखना चाहिए कि उनको कभी भी किसी बात की कोई परेशानी न हो। पाठक के गति और दक्षता के साथ प्रासंगिक जानकारी की पहचान करने वाली दुनिया भर के विभिन्न वेब पेज के माध्यम से अलग-अलग प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसी उम्मीद के साथ एक दिन उनमें से बहुत से अंग्रेजी स्तर के अध्ययन के माध्यम से भाषा के स्तर का या उससे आगे के उपयोग के लिए पर्याप्त और कुशलतापूर्वक सामग्री पर्याप्त होगा। शिक्षा में अधिक से अधिक विद्यालय और और मंत्रालय सामग्री और भाषा एकीकृत शिक्षण में दिलचस्पी रखते हैं, एक भाषा सीखने के महत्व को पहचानने, अन्य विषयों को अधिक प्रभावी ढंग से अध्ययन करने में ये बहुत सहायक भी होता है। अगर हम अंग्रेजी भाषा की कक्षा में इस प्रकार की पढ़ाई को प्रोत्साहित करना चाहते हैं तो हमें पढ़ने का मकसद साफ होना चाहिए और छात्रों को भी इसके महत्व हो समझने भी बहुत जरूरत है जिसमें

पाठक कक्षा के बाहर असली दुनिया में अपना काम आसानी से कर लेने में पूरी तरह सक्षम हो सकता है। पढ़ने के लिए एक कार्य-आधारित दृष्टिकोण होना बहुत जरूरी है और ज्ञान ही हमको ऐसा करने में सक्षम बनाती है।

7.2.3 पढ़ने के लिए कारण प्रदान करना (Providing Reason for Reading)

पहले हमें एक सन्दर्भ प्रदान करने की आवश्यकता है जब हम वास्तविक जीवन में पढ़ते हैं तो हम आम तौर पर कुछ अपेक्षाएँ करते हैं कि हम क्या पढ़ना चाहते हैं। शायद हम किसी विषय के बारे में बहुत कुछ जानते हैं और हम कुछ विवरणों पर जांच करना चाहते हैं। या शायद हम सिर्फ कुछ के बारे में सुन्नाना चाहते और उसकी गहन खोज या जानकारी प्राप्त नहीं करना चाहते हैं। हमें पढ़ने के लिए एक कारण प्रदान करने की आवश्यकता है जो हमारे लक्ष्य को सही दिशा देती है। कभी-कभी हमारे पढ़ने में हम बहुत विशिष्ट जानकारी ढूँढते हैं। हमारे पास कुछ ऐसी सोच या मान्यताएँ हो सकती हैं जो हम पुष्टि करना चाहते हैं या फिर कई जानकारी पर पुनर्विचार करना चाहते हैं। या शायद हमारी जिज्ञासा एक समाचार पत्र की शीर्षक या एक पत्रिका में एक लेख के शीर्षक से उत्साहित हो सकती है, और हम उस जिज्ञासा को संतुष्ट करना चाहते हैं हमें अपने विद्यार्थियों को उसी स्थिति में रखने की कोशिश करनी चाहिए जब वे कुछ भी पढ़ने की सही स्थिति तक पहुँच जाएँ। क्या वे केवल पढ़ने और समझने से बाहर निकलने की अपेक्षा करते हैं? क्या वे अपने ज्ञान में अंतराल को भरना चाहते हैं? क्या उनको उम्मीदें हैं जो वे पढ़ने के लिए जा रही है उसकी सही जाँच करना चाहते हैं?

शिक्षार्थियों के लिए इस तरह पढ़ने की गतिविधि की स्थापना किया जाना होगा जो उनके संदर्भ और पढ़ने का कारण प्रदान करना है। आइए इस बात को सही समझने के लिए कुछ सवाल पूछकर इसको शुरू करें : क्या शार्क मनुष्यों के लिए खतरनाक है? तथ्य यह है कि हमें एक प्रश्न के साथ शुरू करना दिलचस्प है। एक से अधिक सवाल भ्रम की स्थिति भी पैदा कर देती है और यही पढ़ने को एक कारण प्रदान करता है जो प्रश्न का उत्तर पाने के लिए सहायक साबित होता है। लेकिन हो सकता है कि हमारे कुछ शिक्षार्थियों को पहले से ही उत्तर पता हो। हम उन्हें अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर प्रश्न का उत्तर देने के लिए जोड़े या समूहों में काम करने लिए उनको प्रोत्साहित करें और उनको काम शुरू करने में प्रोत्साहन दे सकते हैं। फिर हम इस जोड़ी/समूह के काम के परिणामों को साझा करने के लिए एक कक्षा चर्चा का नेतृत्व कर सकते हैं।

7.2.4 पढ़ने के लिए सीखना (Learning to Read)

पढ़ना और सीखना किसी भी जीवन की एक सामान्य प्रक्रिया है और लोग इसी प्रक्रिया से ज्ञान

विकसित करते हैं। लोग परिवारों और समुदायों के साथ अपने शुरूआती बातचीत के दौरान पढ़ने और सीखने के लिए इसी ज्ञान का उपयोग करेंगे। अपने पूर्व-विद्यालय के वर्षों में भी, बच्चों को बोली जाने वाली भाषा समझने और उपयोग करने में पढ़ना और सीखना मदद करता है। दूसरों के साथ सार्थक बातचीत के माध्यम से अपनी दुनिया के बारे में जानने के लिए इन्हीं बातों के ज्ञान से छात्र सीखते हैं। बच्चों को लिखित भाषा के बारे में सीखना है क्योंकि अधिक अनुभवी पाठकों को पढ़ने और लिखने के सार्थक प्रदर्शन मिलते हैं। वे प्राप्त होने वाले कुछ पुराने जानकारी के अनुभव को ही शामिल करके अपने जीवन में सीखने की क्षमता को विकसित करते हैं। पर्यावरण को पढ़ने, किराने की चीजों की सूची बनाने, लेखन और पढ़ने के नोट्स का इस्तेमाल करना, और बच्चों की कहानियों और पत्रों को पढ़ना और सिखाने के उद्देश्यों को सही केंद्र करना जिससे उनके सिखने में मदद साबित हो सके। बच्चों को ये सिखाना जरूरी है जिसमें वे अपने नाम और परिवार के सदस्यों के नाम को पढ़ने और लिखना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, वे लिखित भाषा की शब्दावली सीखते हैं, जैसे किराने के दुकान की सूची बनाने, व्यक्तिगत पत्र और विभिन्न कथाओं के विभिन्न प्रकार के ग्रंथों की रचना कैसे की जाती है। वे प्रिंट की बुनियादी अवधारणाएँ भी सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, वे लिखित भाषा की शब्दावली सीखते हैं, जैसे किराने के दुकान की सूची बनाने, व्यक्तिगत पत्र और विभिन्न कथाओं के विभिन्न प्रकार के ग्रंथों की रचना कैसे की जाती है। वे प्रिंट की बुनियादी अवध ारणाएँ भी सीखते हैं जैसे कि पुस्तकें प्रिंट के संदेश पृष्ठ भर में जारी रहती हैं। अधिक बच्चे बोलने वाली और लिखित भाषा के साथ बातचीत करते हैं, और बेहतर पाठक होते हैं।

जैसे-जैसे बच्चों को निरंतर पाठ पढ़ना सीखना होता है, वे बोली में छपी शब्दों का पता लगाने के लिए बोलने जाने वाली भाषा के अपने सहज ज्ञान और ज्ञान का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए हम इन शब्द पर ध्यान दे, यदि एक अधिक अनुभवी पाठक मुझे पकड़ता है, तो मुझे पकड़ो, यदि आप कर सकते हैं छोटे बच्चों के लिए प्रिंट करने की ओर इशारा करते हुए, बच्चों को उनकी पढ़ाई की उनकी याददास का उपयोग करने के लिए उन्हें यह पता लगाने में सहायता करने के लिए कि वाक्य में कौन-से शब्द पकड़ और मुझे दर्शाते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे नए पाठ वस्तु को स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीखते हैं, वे बोली जाने वाली भाषा के अपने सहज ज्ञान से उसको जोड़ते हैं, लिखित भाषा के बढ़ते ज्ञान और अर्थ के निर्माण के लिए पाठ के विषय का ज्ञान का उपयोग करते हैं। नतीजन, पाठकों की शुरूआत में परिचित विषय पर परिचित भाषा के साथ एक कहानी के संदर्भ में शब्दों को पढ़ने से बेहतर अनुभव प्राप्त होता है, क्योंकि वे सूचियों या फ्लैश कार्ड के प्रयोग से संदर्भ के बाहर शब्द पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, एक पाठक जो शुरूआती घोड़ों को एक सूची के रूप में एक घर के रूप में पढ़ सकता है लेकिन काउबॉय के बारे में एक दिये गये कहानी में यह सही तरीके से पढ़ता है पाठकों उसको समझता है और शुरूआत से अपरिचित भाषा का ज्ञान प्राप्त करता है। जैसे कि अपरिचित ''किताब'' भाषा या विकृत भाषा जैसे डिकोडेबल ग्रंथों में पढ़ी जाने वाली भाषा जैसी कहानियों की तुलना में परिचित भाषा की कहानियों की तुलना में बेहतर समझा जाता है।

जो बच्चे अधिक पढ़ते हैं, बेहतर पाठक बन जाते हैं। बच्चों को जब वे आकर्षक, उम्र-योग्य पुस्तकं, पत्रिकाएँ अखबारों, कंप्यूटर और अन्य रीडिंग सामग्री तक पहुँचते हैं तो उन्हें और अधिक पड़ते हैं। वे उन विषयों पर अधिक पढ़ते हैं जिस पर उनको रूचि रहती है। पढ़ना लेखन विकास का समर्थन करता है और लिखने को पढ़ने के विकास का समर्थन करता है। उदाहरण के लिए, पढ़ने के माध्यम से, पाठक एक मजबूत परिचय की शक्ति सीखते हैं और अंततः इस तरह के ज्ञान का प्रयोग करते हैं क्योंकि वे अपने टुकड़े लिखते हैं। इसके विपरीत, लेखन भाषा संरचनाओं, पाठ का संगठन, और वर्तनी पैटर्न के बारे में जागरूकता विकसित करता है। एक भाषा में पढ़ना सीखना अन्य भाषाओं में पढ़ना सीखने में तेजी लाता है। जब पाठक एक भाषा में लिखे गए पाठ को पढ़ते हैं तो वे समझते हैं कि वे क्या पढ़ रहे हैं और अन्य भाषाओं में पढ़ते समय कैसे पढ़े। बच्चों को पढ़ने में सीखने के अनुभवों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों, पृष्ठभूमि ज्ञान, मौखिक और लिखित भाषाएँ, प्रिंट के साथ अनुभव और प्रिंट करने के लिए उपयोग करते हैं। फिर भी, सभी पाठकों ने अपने जीवन के अनुभव, विषय के बारे में ज्ञान, और मौखिक और लिखित भाषा के उनके ज्ञान का उपयोग प्रिंट की भावना और सभी शिक्षार्थियों को शिक्षा से लाभ प्रदान किया है जो उन्हें प्रिंट की भावना बनाने में मदद करता है।

पाठकों को अपनी जिंदगी में बढ़ती हुई विभिन्न प्रकार के विषयों की बढ़ती विविधता की समझ में उनकी क्षमता में वृद्धि करना जारी रहता है क्योंकि वे अधिक बोली जाने वाली और लिखित भाषा सीखते हैं, एक सतत विकास वाले विषयों पर अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं और अधिक और अधिक जीवन अनुभव।

7.2.5 प्रभावी पढ़ने का निर्देशन (Effective Reading Instruction)

प्रभावी पढ़ने का अनुदेश विद्यार्थियों को लिखित भाषा के भाव को समझने में सहायता करता है। यह सिखाता है कि सीखने वालों को किसी भी समय पता होता है कि उन्हें और अधिक सीखने में मदद मिलेगी। प्रभावी निर्देश हम कैसे पढ़ते हैं और कैसे पढ़ना सीखते हैं, यह इसके पेशेवर ज्ञान पर आधारित होता है। यह अपने सभी छात्रों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए निर्देशों को व्यवस्थित करने वाले शिक्षकों, बौद्धिक, देखभाल करने वालों द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है।

शिक्षक प्रभावी पढ़ने के निर्देश प्रदान करते हैं जब वे :

- सभी छात्रों को सामान्य ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा करे।
- आने छात्रों को उनके हितों पढ़ने के बारे में उनके दृष्टिकोण, और उनके स्कूल, घर और सामुदायिक अनुभवों के रूप में व्यक्तिगत के रूप में जानें।
- उपयुक्त निर्देश प्राप्त करने वाले और प्रगति की निगरानी करने के लिए प्रत्येक छात्र के कई संदर्भों में ध्यानपूर्वक ध्यान दें।

- एक जोखिम रहित वातावरण बनाएँ जो सामाजिक संपर्क, विचारों की खुली चर्चा और कई दृष्टिकोणों का समर्थन करता हो।
- प्रामाणिक भाषा के साथ ग्रंथों का उपयोग करके प्रामाणिक पढ़ने के संदर्भ में पढ़ने के बारे में छात्रों को पढ़ाने के लिए।
- अनेक प्रकार के विषयों पर लिखित भाषा और उनके पृष्ठभूमि ज्ञान के साथ अपने छात्रों की परिचित बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के उपन्यास और गैर-कल्पना और बहुसांस्कृतिक साहित्य सहित विभिन्न प्रकार के पाठ प्रकारों के माध्यम से दैनिक रूप से पढ़े।
- सीखने के कई अनुभव प्रदान करने के लिए, पूरे समूह, छोटे समूह और व्यक्तिगत शिक्षा सहित कई विभिन्न शिक्षण समूहों का उपयोग करें।
- अनेक शिक्षण विधियों का उपयोग करें, जैसे कि साझा पढ़ने, निर्देशित पठन और साहित्य चर्चा, जो कि छात्रों के लिए उपयुक्त हैं।
- पृष्ठ पर दिए गए शब्दों के बजाय लिखित भाषा द्वारा प्रस्तुत विचारों पर ध्यान केंद्रित करें।
- विषय और भाषा के पृष्ठभूमि ज्ञान का निर्माण करना जिससे विद्यार्थियों को वे पढ़ सकें।
- लिखित भाषा के अर्थ के निर्माण के लिए, प्रदर्शनों सहित और बाद में पढ़ने वाली रणनीतियों, प्रदर्शनों सहित अलौकिक सोचें।
- विद्यार्थियों को प्रभावी रीडिंग रणनीतियों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे कि अर्थ के लिए आत्मनिरीक्षण और आत्म-सुधार।
- अपने पढ़ने के विकास का समर्थन करने के लिए छात्रों को विशिष्ट प्रतिक्रिया दें।
- शब्दावली, शब्द और पाठ संरचनाओं, और वर्तनी पैटर्न सहित पूछताछ और भाषा अध्ययन के अवसर प्रदान करें, जो प्रामाणिक पढ़ने के अनुभवों से उभरकर आते हैं।
- छात्रों को चर्चा, लेखन, कला, नाटक, कहानी सुनने, संगीत और अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से पढ़ने के लिए नियमित अवसर प्रदान करें।
- स्कूल में अपनी पसंद की पुस्तकों को पढ़ने के लिए छात्रों के लिए दैनिक अवसर प्रदान करें।
- स्कूल में अपनी पसंद के विषयों पर छात्रों को लिखने के लिए दैनिक अवसर प्रदान करें।
- पढ़ने और लिखने के माध्यम से सीखने के लिए छात्रों को मिलकर काम करने के लिए नियमित अवसर प्रदान करें।
- घर पर नियमित रूप से पढ़ने और लिखने के लिए परिवारों के साथ भागीदारी बनाएँ।
- सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, गणित और अन्य पाठयक्रम क्षेत्रों में विभिन्न प्रामाणिक साक्षरता के अनुभवों में शामिल होने के लिए छात्रों के लिए नियमित अवसर प्रदान करें।

- छात्रों को उनके सीखने पर प्रतिबिंबित करने के लिए नियमित अवसर प्रदान करें।
- अतिरिक्त निर्देश की आवश्यकता वाले छात्रों को जारी समर्थन प्रदान करें।
- स्वतंत्र पढ़ने के समर्थन के लिए धीरे-धीरे निर्देशात्मक जिम्मेदारी निभाएँ।
- छात्रों की जरूरतों को पूरा करने वाले परिवर्तन करने के लिए अपने छात्रों की प्रगति और उनकी स्वयं की शिक्षण पद्धतियों पर गौर करें।

7.2.6 पढ़ना सीखने की नीतियाँ (Policies that promote Learning to Read)

स्कूलों, स्कूल जिलों और सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों को पढ़ने की उपलब्धि को बढ़ावा देता है, जब वे :

- पेशेवरों के रूप में शिक्षकों का सम्मान करते हैं, छात्रों और समुदायों की उनकी जानकारी का महत्व मानते हैं और उन्हें अपने छात्रों की शिक्षण आवश्यकताओं के अनुसार पाठ विकसित करने और समायोजित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- एक अनुदेशात्मक सामग्री चयन नीति की स्थापना और रखरखाव जिसके माध्यम से पढ़ने वालों की पढ़ाई के ज्ञान के साथ शिक्षकों, पाठकों को कैसे पढ़ना सीखना, और साक्षरता निर्देशन प्रभावी करने के लिए स्कूलों के लिए व्यापारिक पुस्तकों और तकनीकी संसाधनों सहित पढ़ने वाली शिक्षण सामग्री का चयन करना, जिसके लिए वे जिम्मेदार हैं। इस प्रक्रिया में शामिल लोगों को प्रक्रिया के परिणाम में कोई व्यावसायिक हित नहीं होना चाहिए।
- पढ़ने के लिए आनंद और जानकारी, विविध प्रकार के आकर्षक, उम्र-योग्य पठन सामग्री, रूढ़िवादी और सामुदायिक मूल्यों के साथ संगत के विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को प्रदान करें।
- सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, गणित, ललित कला और अन्य विषय मामलों में एक समृद्ध पाठ्यक्रम के साथ शिक्षार्थियों को प्रदान करें ताकि वे विषयों की एक विस्तृत-विस्तार वाली विविधता पर सामग्री पढ़ने को समझ सकें।
- उन शिक्षार्थियों को उपलब्ध कराएँ जिन्होंने अभी तक किसी भी भाषा में पढ़ना नहीं सीखा है, जिसमें वह एक ऐसी भाषा में पठन निर्देश शुरू कर सकते हैं जिसमें वे सक्षम हैं।
- शिक्षण के लिए उपयोग करने के लिए प्रामाणिक भाषा के साथ साहित्य की एक विस्तृत विविधता, रूढ़िवादी और सामुदायिक मूल्यों के साथ संगत के साथ शिक्षकों को प्रदान करें।
- शिक्षकों, अभिभावकों, शैक्षिक नेताओं और जनता के लिए अवसरों को उनकी बढ़त में बढ़ते रहने के लिए प्रदान करें।

7.2.7 अध्ययन के लिए पढ़ना (Reading for Study)

आप पहले ही प्रतिदिन स्थितियों में पढ़ने की शैलियों की एक शृंखला का उपयोग करते हैं सामान्य रीडिंग शैली जिसे आप एक उपन्यास पढ़ने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, विस्तार से पढ़ना है, शुरू से खत्म करने के क्रम में प्रत्येक शब्द पर ध्यान केंद्रित करना। अगर यह एक पत्रिका है जो आप पढ़ रहे हैं, तो आप यह देख सकते हैं कि कौन से लेख रूचिकर हैं। जब आप किसी विशेष नाम के लिए एक टेलीफोन निर्देशिका में देखते हैं, तो आप सभी अन्य प्रविष्टियों को ध्यानपूर्वक अनदेखा कर सकते हैं और अपने इच्छित नाम को खोलने पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। ये प्रतिदिन के कौशल को आपके अध्ययन पर लागू किया जा सकता है।

अपने पढ़ने के कौशल को सुधारने के लिए आपको निम्न कार्य करना होगा :

- पढ़ने के लक्ष्य को स्पष्ट करे
- सही ग्रंथों का चयन
- सही रीडिंग शैली का उपयोग करें
- नोट लेखन तकनीकों का उपयोग करें

7.2.8 पढ़ने का लक्ष्यों (Reading Goals)

पढ़ने के लक्ष्यों को स्पष्ट करने से आपकी पठन क्षमता में काफी सुधार हो सकता है।

पढ़ने के निम्न लक्ष्य हो सकते हैं :

- एक निबंध या सेमिनार का विषय
- एक रिपोर्ट संक्षिप्त
- एक चयनित विषय क्षेत्र
- एक विशिष्ट विषय के बारे में कई प्रश्न

अपने वर्तमान कार्य के लिए प्रासंगिक जानकारी की पहचान करने में आपकी सहायता करने के लिए अपने पढ़ने के लक्ष्यों का उपयोग करें

7.2.9 पाठ का चुनाव (Choosing a Text)

आपको यह देखने के लिए पाठ का आकलन करना होगा कि क्या इसमें ऐसी जानकारी है जो आपके पढ़ने के लिए प्रासंगिक है

- प्रकाशन की तारीख की जांच करें कि दी गयी सूचना अप-टू-डेट है या नहीं

- सामग्री के अवलोकन के लिए पीठ या अंदर की आस्तीन पर प्रकाशक के ब्लॉन्बल को पढ़ें
- प्रासंगिक अध्यायों के लिए सामग्री पृष्ठ की जांच करें
- सूचकांक में अपने विषय के लिए संदर्भ देखें
- अगर पाठ प्रासंगिक नहीं लगता है, तो इसे त्यागें
- एक पाठ का चयन करने के बाद आप स्कैनिंग और स्किमिंग की निम्नलिखित तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं ताकि आपको विस्तृत पढ़ने के लिए क्षेत्रों की पहचान हो सकें।

7.3 स्कैनिंग (Scanning)

स्कैनिंग एक तकनीक है जिसका उपयोग आप टेलीफोन डायरेक्टरी को पढ़ते समय करते हैं। अपने वर्तमान कार्य के लिए प्रासंगिक विशेष शब्दों या वाक्यांशों को खोजने के लिए आप पाठ के एक सेक्शन पर तेजी से अपने दृष्टिकोण को पारित करते हैं आप स्कैन कर सकते हैं :

- पाठ का परिचय या प्रस्तावना
- अध्यायों के पहले या अंतिम पैराग्राफ
- पाठ का समापन या संक्षिप्त अध्याय
- पुस्तक सूचकांक

7.4 स्किमिंग (Skimming)

स्किमिंग सामान्य अर्थ में शीघ्र पढ़ने की एक प्रक्रिया है। अपनी आँखें वाक्य या वाक्यांशों पर छोड़ दें, जो हमें केंद्रीय या मुख्य बिंदुओं की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। इस तकनीक का उपयोग इस प्रकार करें :

- विस्तृत पढ़ने से पहले पाठ का चयन पूर्व-देखें;
- विस्तृत पढ़ने के बाद पाठ के चयन की अपनी समझ को ताजा करें।

7.5 विस्तृत पढ़ना और नोट बनाना (Detailed Reading and Note Taking)

एक बार उपयोगी जानकारी चुनने के बाद, आप विस्तार से पढ़ना शुरू कर सकते हैं। नोट लेने के लिए तकनीकों को पढ़ने के लिए निम्नलिखित एक उपयोगी सहायता प्रदान करते हैं।

- आपको सबसे केंद्रीय या महत्वपूर्ण शब्दों और वाक्यांशों को क्या लगता है, यह जानने के लिए रेखांकन और हाइलाइट करना। इसे अपने ग्रंथों या फोटोकॉपी पर कॉपी करें-कभी उधार ग्रंथों पर

नहीं।

- आपके द्वारा पढ़े जाने वाले मुख्य शीर्षकों को रिकॉर्ड करने के लिए कीवर्ड। प्रत्येक मुख्य बिंदु के लिए एक या दो कीवर्ड का उपयोग करें जब आप पाठ को चिह्नित नहीं करना चाहते हैं तो कीवर्ड का उपयोग कर सकते हैं।
- आपके पढ़ने हेतु सक्रिय दृष्टिकोण लेने के लिए प्रोत्साहित प्रश्न। अपने प्रश्नों को पढ़ते समय रिकॉर्ड करें उनका उपयोग अनुवर्ती कार्य के लिए संकेत के रूप में भी ले सकते हैं।
- जाँचने के लिए सारांश से आपको समझ में आये कि आपने क्या पढ़ा है। पाठ के एक भाग के बाद रोकें और जो आपने अपने शब्दों में पढ़ा है उसे डाल दें। किसी भी महत्वपूर्ण अंतराल को भरने, अपने सारांश की सटीकता की जाँच करने के लिए पाठ पर पटकथा करें।

ये तकनीक पाठ के साथ एक सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित करती हैं और साथ ही साथ आपको अपने पढ़ने का एक उपयोगी रिकॉर्ड प्रदान करती है। बड़ी मात्रा में पाठ को निष्क्रिय रूप से पढ़ने से बचें, यह आपके समय का प्रभावी उपयोग नहीं करता है एकाग्रता और समझ के अपने स्तर को बढ़ाने के लिए हमेशा नोट लेने के तकनीक का उपयोग करें। नोट लेना तकनीकों के बारे में अधिक विस्तृत मार्गदर्शन के लिए मार्गदर्शिका को प्रभावी नोट बनाये।

7.5.1 अपनी पठन गति बढ़ाना (Increasing Your Reading Speed)

अपनी पठन गति से आपके पढ़ने के कौशल को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है आपकी पढ़ने की आदतों में ध्यान केंद्रित और चयनात्मक होने से आप पढ़ने के वक्त को कम कर देंगे। यदि पढ़ना कौशल की एक श्रृंखला का उपयोग करने के अलावा, आप अपनी पठन गति में वृद्धि करना चाहते हैं, तो निम्नलिखित तकनीक का उपयोग किया जाएगा।

औसत पढ़ने की गति 240-300 शब्द प्रति मिनट है औसत पाठक के लिए, आंख प्रत्येक शब्द पर व्यक्तिगत रूप से ठीक करता है। समझने की हानि के बिना एक ही निर्धारण में 4 या 5 शब्दों को पहचानना आपकी आँखों के लिए आसान है।

आपकी पठन गति बढ़ाने की कुंजी उस गति को बढ़ाने के लिए नहीं है जिस पर आपकी आँखें पृष्ठ भर में बढ़ती हैं, लेकिन एक ही निर्धारण के शब्द अवधि बढ़ाने के लिए। प्रति निर्धारण में एक से अधिक शब्द लेने की आदत को विकसित करने का एक आसान तरीका है पाठ का एक पृष्ठ लेना और पृष्ठ को नीचे खींची गई दो पंक्तियों के साथ इसे तीन भागों में विभाजित करना। सूचक के रूप में एक पेन या पेंसिल का प्रयोग करना, आपके आँख को केवल तीन हिस्सों में से प्रत्येक के बीच में गिरने के लिए पाठ की प्रत्येक पंक्ति को पढ़ें, जैसा कि आपके सूचक द्वारा दर्शाया गया है। आप कितनी जल्दी पढ़ रहे हैं इसके बारे में चिंता न करें लेकिन इसके बजाय, लाइन को पढ़ने पर ध्यान केंद्रित करें।

7.5.2 गहराई से पढ़ना (In-depth Reading)

गहराई से पढ़ने के लिए एक पाठ का गहरा अर्थ और समझ प्राप्त करें/एक असाइनमेंट के लिए विस्तृत जानकारी का शोध करें/एक पाठ के कठिन वर्गों को पढ़ें।

समझ पढ़ना पाठ पढ़ने (Reading Comprehension) उसे क्रियान्वित करने और इसका अर्थ समझने की क्षमता है। एक व्यक्ति की पाठ को समझने की क्षमता उनके गुणों और कौशल से प्रभावित होती है, जिनमें से एक में संदर्भ बनाने की क्षमता है।

पढ़ना का महत्व (The importance of Reading) सब कुछ बहुत बार, मुश्किल से पढ़ने वाले बच्चों का सामना करने की बाधाओं को पढ़ना और उनकी बिना किसी उचित मागर्द्यदर्शन के बावजूद वे कभी भी उन पर वियज नहीं पा सकते हैं पढ़ना सीखना एक अनुक्रमिक प्रक्रिया है; प्रत्येक नए कौशल पहले सीखे हुए कौशल के स्वामित्व पर बनाता है।

पढ़ना अर्थ के निर्माण या प्राप्त करने के लिए डिकोडिंग प्रतीकों का एक जटिल ''संज्ञानात्मक प्रक्रिया'' है (पढ़ने की समझ)। पढ़ना भाषा अधिग्रहण, संचार और साझा जानकारी और विचारों का एक माध्यम है। इसके अलावा, पढ़ना रचनात्मकता और महत्वपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता है।

7.6 नोट-लेना (Note-taking)

नोट-लेना (कभी-कभी नोट लेने या नोट लेने के रूप में लिखा जाता है) एक अन्य स्त्रोत से ली गई जानकारी रिकॉर्डिंग का अभ्यास है। नोट्स लेते हुए, लेखक जानकारी के सार को संग्रहित करता है, अपने दिमाग में सब कुछ याद करने से बचाता है नोट लेना आत्म-अनुशासन का एक रूप है।

7.6.1 नोट लेने की विधि विकसित करें जो आपके लिए काम करती है (Develop a note taking method that works for you)

1. एक नया पृष्ठ पर प्रत्येक नए व्याख्यान को प्रारंभ करें, और प्रत्येक पेज में तारीख और संख्या डाले।
2. कागज के केवल एक ही तरफ लिखें।
3. रिक्त स्थान छोड़ दें।
4. अपने नोट्स यथासंभव संक्षिप्त करें।
5. संक्षेप और प्रतीकों की एक प्रणाली विकसित करें, जहाँ संभव हो सके।

7.6.2 नोट्स लेने की आवश्यकता (Need to Take Notes)

नोट लेना हर छात्र के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है नोट के दो महत्वपूर्ण कारण हैं :

1. जब आप पढ़ रहे हैं या सुन रहे हैं, नोट्स लेने से आप ध्यान केंद्रित कर सकते हैं तथा
2. कुछ सार तथ्य लिखने के लिए नोट लेने के लिए-आपको पाठ को समझना होगा।

7.6.3 प्रभावी नोट लेने के महत्वपूर्ण लाभ (Key Benefits of Effective Notes-taking)

1. विस्तार पर ध्यान और ध्यान में सुधार।
2. सक्रिय शिक्षण को बढ़ावा देता है।
3. समझ और प्रतिधारण को बढ़ा देता है।
4. कौशल को प्राथमिकता देता है।
5. ध्यान अवधि बढ़ाता है।
6. संगठन कौशल में सुधार।
7. रचनात्मकता बढ़ जाती है।

7.6.4 नोट लेने और नोट बनाने में क्या अंतर है? (What is the difference between note taking and note making?)

नोट लेना एक निष्क्रिय प्रक्रिया है जो व्याख्यान में किया जाता है, जबकि नोट-प्रसंस्करण अधिक सक्रिय और केंद्रित गतिविधि है जहाँ आप सभी जानकारी को समझते हैं और अपने लिए इसे समझते हैं। नोट-लेने के बारे में सोचते समय विभिन्न व्याख्याताओं द्वारा अपनाया गया व्याख्यान शैली पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

7.7 सारांश (Summary)

जानकारी के लिए पढ़ना एक जीवन भर कौशल है। बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा का उपयोग करें ताकि आपके बच्चे को पुस्तकों के अंदर ज्ञान की दुनिया में पेश कर सकें। गैर-कल्पना सहित आपके बच्चे की पढ़ाई में एक संतुलन और शैली की विविधता प्रदान करने में मदद मिलेगी। बच्चे उत्सुक है। सीखने के लिए प्रेरित हैं और नए विचारों का पता लगाने में आनंद लेते हैं। अपने बच्चे को गैर-कल्पना के साथ उजागर करना इस प्रकार की पुस्तक की संरचना से परिचित होगा और उसे पाठ से जानकारी प्राप्त करने का तरीका जानने में मदद करेगा। यह शीघ्र एक्सपोजर सकारात्मक रूप से स्कूल में दिखाएगा।

7.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. पढ़ना और पढ़ना की प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What do you think of the process of reading and reading? Explain your thoughts through proper examples.

2. प्रभावी पढ़ने के कौन-कौन से निर्देशन है ? अपने विचारों को उदाहरण के द्वारा समझेंगे।

   Which directive of effective reading ? Your thoughts will be understood by the examples.

3. पढ़ने और सीखने की किन-किन नीतियों को आप जानते हैं उदाहरण सहित समझाए।

   Explain with some examples of reading and learning policies, including examples.

4. स्कैनिंग और स्किमिंग क्या है उदाहरण सहित समझाए।

   Explain what is scanning and skimming with examples.

5. नोट लेने की विधि कैसे विकसित होगी? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   How will the method of taking notes develop ? Make clear your thoughts through a proper example.

6. नोट लेने और नोट बनाने के क्या अंतर है उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What is the difference between taking notes and making notes ? Make clear your thoughts through a proper example.

7.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- The medium of education (The selected works of Gandh-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publ.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.

- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and world peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.O Krishnamurthi, Foundation.
- National curriculum frameword – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- RTE Act, 2009.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●

इकाई 8: विभिन्न विषयों में पठन लेखन संबंध

Unit 8: Reading Writing Connection in different content area

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

8.0 उद्देश्य (Objective)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

8.2 नोट्स लेने के तरीके (Ways to take Notes)

8.3 नोट बनाने की शैलियाँ (Note-making Styles)

8.4 नोट्स लेना और सूचना का सारांश, आयोजन और संश्लेषण करने के उपकरण (Tools for Taking Notes and Summarizing, Organizing and Synthesizing the Information)

8.5 समीक्षात्मक सोच (Critical Thinking)

8.6 सारांश (Summary)

8.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

8.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

8.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित तथ्यों को जानेंगे :

1. नोट्स लेने के तरीके को जानेंगे।
2. सामग्री के प्रपत्र पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम होंगे।
3. नोट बनाने की शैली को जानेंगे।
4. डाटा इकट्ठा करने और सारांश की प्रक्रिया को समझेंगे।
5. समीक्षात्मक विचार को समझेंगे।

उपर्युक्त तथ्यों को समझना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

8.1 परिचय (Introduction)

भिन्न विषयों में पठन के दौरान हमें नोट्स लेने की आवश्यकता होती है, जिससे विषय के प्रति हमारी समझ परिपक्व हो सकें। नोट्स लेने के तरीके, उसे बनाने की शैलियाँ एवं नोट्स के संश्लेषण विश्लेषण का इस पाठ में विस्तार से जानकारी दी जा रही है।

8.2 नोट्स लेने के तरीके (Ways to take Notes)

जितना अधिक नोट्स आप बनायेंगे, उतनी ही बेहतर आपके पास सामग्री होगी, जिसके उपयोग से आप अधिक काम करने में सफल रहेंगे। अपने विषय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों का चयन करें ''कौन, क्या, कब, कहाँ, कैसे और कितने'' हर समय ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजें और उनके उत्तर देते रहें। संक्षिप्त वाक्यांशों या लघुरूपों का उपयोग करके मुख्य विचारों को रिकॉर्ड करके फिर से सभी शब्द को अपने नोट्स में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है। आप आवश्यक जानकारी प्राप्त करें और उन्हीं का समर्थन करें जो आपको रिकॉर्ड करने और उसके निर्धारण में सहायक हो। संक्षेप में हम ऐसा भी कह सकते हैं कि हमको जो जानकारी मिले उसकी उसे हम अपने शब्दों में मिलाकर उसे इस प्रकार प्रस्तुत करें कि हमारा पूरा साहित्यिक चोरी न लगे और उसपर अभियोग भी न लगाया जा सके। यही हमेशा आपको प्राप्त जानकारी को आसानी से बनाने और समझने में मदद करेगा। हालाँकि, अगर आप कुछ ऐसी चीज पाते हैं जिसे आप सीधे उद्धृत करना चाहते हैं, तो सटीक शब्दों की प्रतिलिपि बनाएँ और रिकॉर्ड करें। स्रोत का उद्धरण दें शीर्षक, लेखक (लेखक), प्रकाशक (एस), वेबसाइट का पता (यदि ऑनलाइन), तिथि, पृष्ठ शामिल करें। जब आप वेब पर स्रोतों का उपयोग कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि जानकारी स्वयं को गंभीर रूप से मूल्यांकन करें क्या यह उचित गुणवत्ता का है? स्रोत उपयोगी, सटीक और विश्वसनीय है? क्या आप सामान जानकारी कहीं और पा सकते हैं?

अपने नोट्स को व्यवस्थित और विश्लेषित करें। क्या कोई महत्वहीन जानकारी है जिसे आप हटा सकते हैं? महत्वपूर्ण जानकारी रखना सुनिश्चित करें। आपको प्रतिलिपि सामग्री की आवश्यकता नहीं है। विषय से संबंधित समूह, कालानुक्रमिक क्रम में, श्रेणी के अनुसार, आदि से अपने शोध के परिणामों की तुलना करें जो आपने एकाधिक स्त्रोतों से एकत्रित किया है। क्या ऐसी जानकारी है जो आपको अलग-अलग स्त्रोतों से मिली या अलग है? संश्लेषण करें जो आपने एकत्र किया है। आप किस जानकारी को जोड़ सकते हैं? आप क्या इकट्ठा से निष्कर्ष निकाल सकते हैं? आपके द्वारा एकत्र की गई जानकारी को व्यवस्थित और संश्लेषित करने में आपकी सहायता करने के लिए रणनीतियाँ शामिल हैं : मुख्य विचारों और समर्थन विवरण को पहचानें के लिए सबसे अच्छी-प्रासंगिक, सटीक और विश्वसनीय जानकारी क्या है? यह सब कैसे एक साथ फिट है? समान विषय समूहों में जानकारी को साझा करें और फिर प्रत्येक समूह के भीतर एक तार्किक

अनुक्रम में जानकारी की व्यवस्था करें। प्रस्तुत किये जाने की एक रूपरेखा तैयार करें, फिर रूपरेखा के प्रत्येक अनुभाग में अपने नोट से मिलान करें और रूपरेखा पर विषय से मिलान करने के लिए जानकारी का उपयोग करें। अपने नोट्स में जानकारी को दिखाने वाला एक अवधारणा मानचित्र बनाएँ।

8.2.1 नोट्स के फायदे (Advantages of Notes)

जब भी आपको नोट्स लेने और महत्त्वपूर्ण विचार या जानकारी लिखने की आवश्यकता हो, तो आपको नोट्स ऐप्स सहायक मिलेगा जिसे आप एक नोट लेने, संगठनात्मक और बुद्धिशीलता उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं। नोट्स ऐप विंडो परिचित पीले नोटपैड का प्रतीक है। ऐप एक मूल पाठ संपादक है। उदाहरण के लिए, आप पाठ-आधारित सूचना दर्ज करने के लिए कंप्यूटर कीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। हालांकि, आप सूचीबद्ध और क्रमांकित सूचियाँ भी बना सकते हैं।

पाठ दर्ज करते वक्त आप इसे प्रारूपित कर सकते हैं; ऐप आपको फ़ॉन्ट, प्रकार शैली और फ्रॉन्ट आकार चुनने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, आप टाइप कर रहे हैं, जैसा कि आप टाइप कर रहे हैं, पृष्ठ पर टेक्स्ट को सही-सही, या केंद्र-सही ठहर सकते हैं। यदि आपको पूर्ण-फील्ड वर्ड प्रोसेसर की जरूरत नहीं है, तो नोट्स टेक्स्ट-आधारित सूचना को प्रबंधित करने का एक आसान तरीका प्रदान करता है।

8.2.2 लचीलापन (Flexibility)

विभिन्न नोट लेने वाली संरचनाएँ आपको किसी विशेष स्थिति के अनुरूप विभिन्न विकल्पों के साथ प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, कॉर्नेल पद्धति आपको संक्षिप्त रूप में नोट लेने और संकेतों या खोजशब्दों के लिए बाईं ओर आरक्षित करने की अनुमति देता है, जबकि ''मानचित्रण'' विधि आपको विचारों के बीच एक दृश्य संबंध बनाने की अनुमति देता है वैकल्पिक रूप से, आप वाक्य पद्धति का उपयोग कर सकते हैं, प्रत्येक महत्त्वपूर्ण बिंदु को एक नया वाक्य के रूप में लिखकर और आपके कार्य की प्रगति के रूप में काम कर सकते हैं। अलग-अलग तरीकों से सीखना आपको एक का उपयोग करने की अनुमति देता है जो उस समय सबसे अच्छा काम करता है और एक विधि पर भरोसा करने की एकता को तोड़ता है।

8.2.3 व्यवस्थित तरीका (Orderly Manner)

संरचित नोट लेने से आप अपने नोट्स को व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित कर सकते हैं। प्रत्येक संरचना बिंदु नियुक्ति निर्दिष्ट करती है, और कुछ आपके लिए व्यक्तिगत नोट्स को बनाने की अनुमति देते हैं। अभ्यास के साथ, आप मुख्य काम को केंद्रीय स्थान में रखकर अपने विचारों को व्यवस्थित करना

सीखते हैं और विचारों का समर्थन करते हैं, अगर अतिरिक्त सहायता के लिए एक संरचना बनाकर बाद में नोट का अध्ययन करते समय इसको सुविधाजनक बनाती है और आपको अपने नोट्स को दूसरों के साथ साझा करने की सहजता प्रदान करता है जो आपकी नोट लिखने की संरचना को समझते हैं।

8.2.4 व्यक्तिगत पंसद (Personal Preference)

संरचित नोट लेना हर किसी के लिए काम नहीं करता है एक स्पीकर या लेक्चरर, जो संरचित नोट लेते हुए जोर देकर कहते हैं कि ध्यान से सुनना पसंद करते हैं और बाद में लिखित पाठ का जिक्र करते हैं। कुछ छात्रों को एक कठोर संरचना का पालन करने की बजाए एक धारा-चेतना के रास्ते में बिच्छू अंक पसंद करते हैं। अगर एक शिक्षक छात्रों को उनके संरचित नोट लेने पर मूल्यांकन करता है, तो एक छात्र को अपने सहज क्षेत्र से मजबूती के लिए मजबूर कर दिया जाता है ताकि वह आंतरिक जानकारी के अप्राकृतिक तरीके से हो। यह इस विषय की ओर उसके दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है और उसके प्रदर्शन को नुकसान पहुँचा सकता है।

8.2.5 सामग्री के प्रपत्र पर ध्यान केंद्रित करना (Focusing on Form over Content)

संरचित नोटों को लेते समय आपको जितनी बार अंक प्राप्त करना चाहिए उतना अधिक समय लगता है। यह एक स्पीकर के साथ बने रहना कठिन बना सकता है और आप प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण जानकारी को भूल सकते हैं और अपनी एकाग्रता को खो देते हैं क्योंकि आप सामग्री के बजाय फॉर्म पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि आप अपने व्यक्तिगत लघुकथा में नोट्स लेते हैं, तो भविष्य में नोट्स को समझना मुश्किल हो सकता है।

जैसा कि आप पाठ दर्ज कर रहे हैं, आप इसे प्रारूपित कर सकते हैं; ऐप आपको फ्रॉन्ट, प्रकार शैली और फ्रॉन्ट आकार चुनने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, आप टाइप कर रहे हैं जैसा कि आप टाइप कर रहे हैं, पृष्ठ पर टेक्स्ट को सही-सही, या केंद्र-सही ठहर सकते हैं। यदि आपको पूर्ण-फील्ड वर्ड प्रोसेसर की जरूरत नहीं है, तो नोट्स टेक्स्ट-आधारित सूचना को प्रबंधित करने का एक आसान तरीका प्रदान करता है।

8.3 नोट बनाने की शैली (Note-making Styles)

नोट्स बनाते समय आपको एक विधि चुननी होगी, जिसके साथ आप सहज महसूस करते हैं और जो आपके उद्देश्य से मेल खाते हैं, नोट्स आपके लिए हैं, औरों के लिए नहीं। आप नीचे तीन अलग-अलग नोट बनाने वाली शैलियों के उदाहरण देखेंगे : मानक प्रारूप नोट्स, पैटर्न नोट्स और विभाजन पृष्ठ प्रारूप।

8.3.1 मानक नोट (Standard Notes)

मानक नोट पृष्ठ के नीचे एक रैखिक प्रारूप में लिखा जाता है। अच्छी प्रस्तुति महत्वपूर्ण होती है जिसके लिए आइटम के बीच संबंध दिखाने के लिए संख्याओं और अक्षरों के अनुक्रमों का उपयोग करना होता है जो विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग अनुक्रमों का उपयोग करना ताकि :–

(i) मामूली वस्तुओं को प्रमुख लोगों के साथ भ्रमित नहीं किया जा सके।

(ii) एक ही स्तर पर वस्तुओं के प्रदर्शन से उसको बहुत स्पष्ट किया जा सकता है और नोट्स को अच्छी तरह से विभाजित, उन्हें आसानी से जोड़कर उसको प्रस्तुति की जा सकता है। यह नोट्स को स्पष्ट रखने के लिए अंक पर जोर देने में मदद कर सकते हैं।

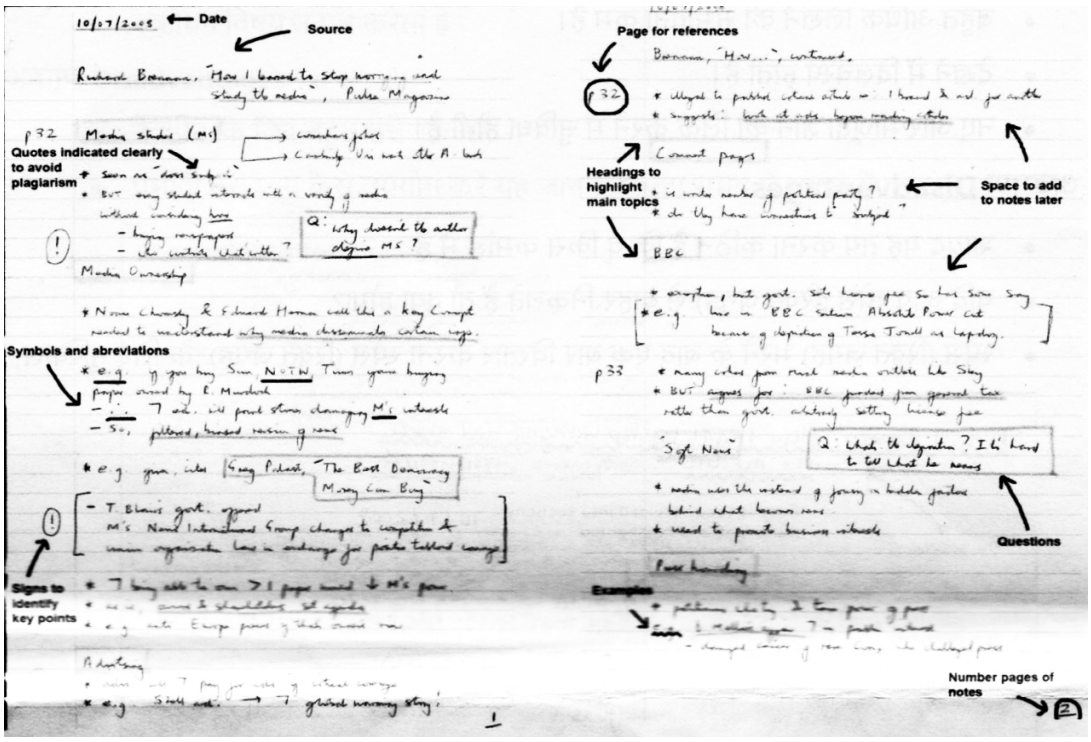

8.3.2 पैटर्न नोट्स (Pattern Notes)

पैटर्न नोट्स अधिक दृश्य हैं। आप केंद्र में मुख्य विषय लिखकर शुरू करते हैं और फिर संबंधित विचार जोड़ते हैं। सुनिश्चित करें कि आप विचारों के बीच लिंक करे जहाँ उचित हो। अपने पैटर्न नोट बनाने के लिए आप मन मैपिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, मस्तिष्क की सोच जो आपको नए जुड़ाव और विचारों के रूप में और जब आपके नोट्स को अनुकूलित और विकसित करने की अनुमति देते हैं। मस्तिष्क की सोच आपको एक वर्ड दस्तावेज के रूप में अपने नोट्स को निर्यात करने की अनुमति देता है और स्वचालित रूप से आपके मन के मानचित्र की संरचना को आपके नए दस्तावेज में स्थानान्तरित करता है।

गुण (Advantages)

- आसान बनाने और जोड़ने के लिए त्वरित।
- विजुअल इंप्रेशन को समझना और याद रखना बहुत आसान हो सकता है।
- किसी भी क्रम में तय नहीं है।
- लिंक स्पष्ट किया जाता है।
- बहुत अधिक लिखने की संभावना कम है।
- देखने में दिलचस्प होती है।
- नए और मौजूदा ज्ञान को लिंक करने में सुविधा होती है।

अवगुण (Disdvantages)

- शायद यह तय करना कठिन है कि वे किस कमांड में है।
- यदि आप स्पेस (रिक्त जगह) से बाहर निकलते हैं तो क्या होगा?
- स्पेस (रिक्त जगह) भरने के बाद एक बार विस्तार करना स्पेस (रिक्त जगह) के लिए मुश्किल

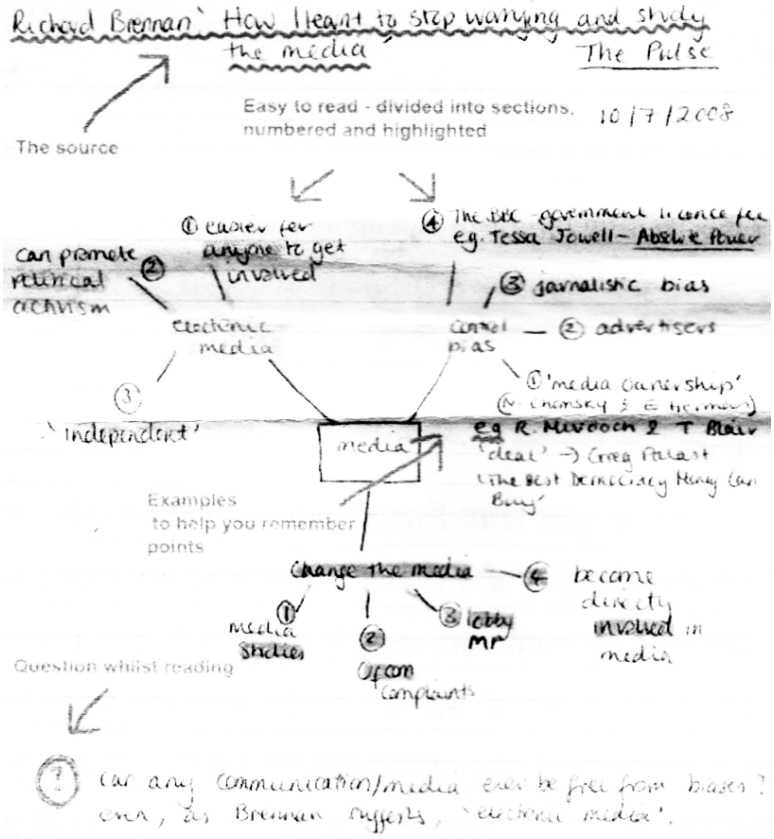

8.3.3 स्लिप्ट पेज (Split Page Format)

स्प्लिट पेज/कॉर्नेल सिस्टम में पृष्ठ को 3 अनुभागों में विभाजित करके अपनी खुद की टिप्पणियों/प्रश्नों के बाईं ओर, सही पर मानक नोट्स और अंत में एक सारांश शामिल रहता है।

गुण (Advantages)

- विशेष रूप से व्याख्यान में नोट लेने के लिए डिजाइन किया जाता है
- नोट्स को व्यवस्थित करने का एक तरीका प्रदान करता है
- संशोधन विषय उत्पन्न करता है

अवगुण (Advantages)

- नेत्रहीन के लिए बहुत उत्तेजक नहीं
- प्रभावी तरीके से कैसे उपयोग करें यह जानने के लिए समय ले सकते हैं

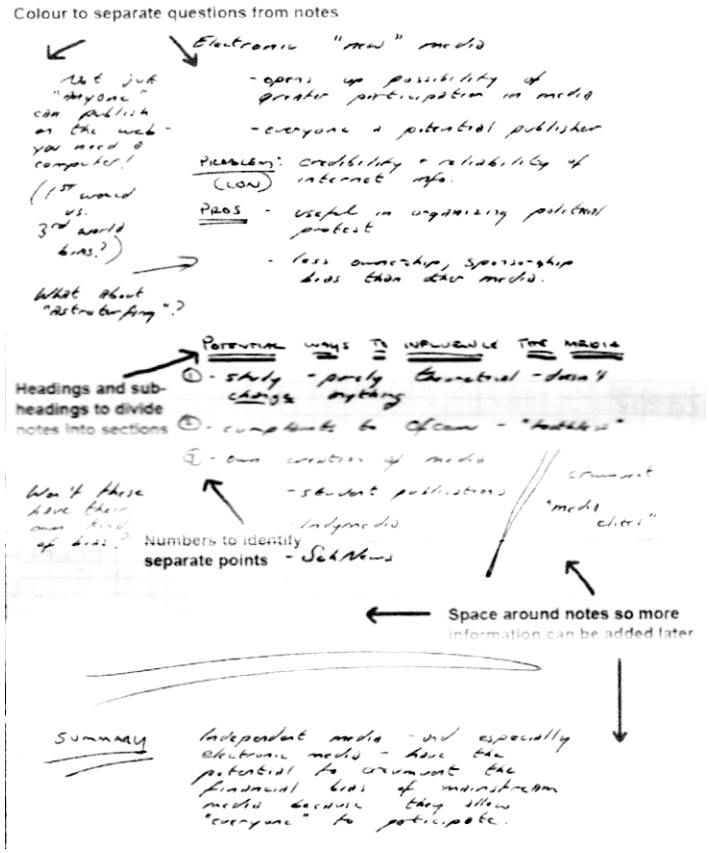

8.4 नोट्स लेना और सूचना का सारांश, आयोजन और संश्लेषण करने के उपकरण (Tools for Taking Notes and Summarizing, Organizing and Synthesizing the Information)

- आपकी जानकारी एकत्रित करना–जानकारी दर्ज करने के लिए उपयोग की जाने वाली तीन श्रेणियों की जानकारी और सुझावों का अवलोकन
- उद्धरण, परावर्तन, संक्षेप–रिकॉर्ड उद्धरण, संक्षिप्त विवरण, और एक विशेष स्त्रोत में मिली जानकारी का सारांश
- नोट कार्ड्स
- पॉवर पॉइंट से इलेक्ट्रॉनिक नोट–लेइंग कार्ड–आप अपनी सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए स्लाइडस को स्थानांतरित कर सकते हैं
- अनौपचारिक रूपरेखा–बुलेट और खरोज के साथ एक आउटलाइन प्रारूप में नोट लेने के लिए एक वर्ड प्रोसेसर का उपयोग करें
- एक चार्ट बनाएँ और पूरा करें–किसी वर्ड प्रोसेसर में एक टेबल डालें; यह विशेष रूप से कई स्त्रोतों से एकत्र की गई जानकारी की तुलना के साथ–साथ विशिष्ट उप–विषयों से संबंधित जानकारी रिकॉर्ड करने के लिए उपयोगी है।

8.4.1 डाटा इकट्ठा करने और सारांश की प्रक्रिया (Process for Data Gathering and Summary)

(1) लेखा परीक्षा का उद्देश्य निर्धारित करें

(2) अपने संपर्कों को जानें–वे कौन हैं, संगठनात्मक संरचना, वे क्या करते हैं

(3) डेटा संग्रह योजना की समीक्षा करें या बनाएँ
(लक्ष्य, डेटा स्रोत, संग्रह की विधि, डेटा संग्रह, प्रारूप, जिम्मेदारियाँ)

(4) साक्षात्कार के लिए प्रश्न तैयार करें

(5) ग्राहक का साक्षात्कार करें

(6) काम के कागजात में डेटा सारांश

8.4.2 तथ्य खोज के प्राथमिक उद्देश्य (Primary Objectives of Face Finding)

1. सूचना/डेटा के स्रोतों को पहचानें

2. डेटा एकत्रित करें
3. लापता निर्धारित करें
4. जानकारी सारांश डेटा

8.4.3 डेटा एकत्र करना (Gathering Data)

1. व्यापार प्रक्रिया और नियंत्रण में शक्ति और कमजोरी की पहचान करें।
2. प्रक्रिया और नियंत्रण की प्रभावशीलता का आकलन करें।
3. हमारे निष्कर्षों का समर्थन करें।
4. तथ्यों और नोट्स, आरेखण और चित्र दिखाएँ, और विषय के मुख्य बिंदुओं को सारांशित करने के लिए नीचे नमूने की तरह एक संयोजन नोट्स प्रारूप का उपयोग करें।
5. ग्राफिक आयोजकों-इस वेब पेज पर जानकारी प्राप्त करें।
6. इलैक्ट्रॉनिक ग्राफिक आयोजक सॉफ्टवेयर जैसे प्रेरणा का उपयोग ग्राफिक विजुअल प्रस्तुतीकरण के लिए किया जा सकता है-कुछ सॉफ्टवेयर ग्राफिक फॉर्म को रूपरेखा रूप में परिवर्तित भी कर सकते हैं।
7. जानकारी कैसे संबंधित है, यह दिखाने के लिए एक वेब या एक अवधारणा-नक्शा बनाएँ।
8. नोट्स लेने, विषय के आधार पर जानकारी व्यवस्थित करने, या सारांश फ्रेम बनाने के लिए एक तैयार किए फॉर्म का उपयोग करें जिसमें आप प्रश्नों का उत्तर देते हैं और मुख्य बिंदुओं को हाइलाइट करते हैं जो जानकारी का सार हो।
9. नोट-स्टार-नोट ले, उन्हें व्यवस्थित करें, और इस वेब संसाधन के उद्धरण बनाएँ।

8.5 विचार कौशल (Critical Thinking)

गंभीर सोच-विचारों के बीच तार्किक संबंध को स्पष्ट रूप से समझने और तर्कसंगत रूप से सोचने की क्षमता ही विचार कौशल है। आलोचनात्मक सोच बहुत बहस का विषय रही है और सोच की शुरुआती ग्रीक दार्शनिकों जैसे कि प्लेटो और सॉक्रेट्स के समय से आधुनिक युग में चर्चा का विषय बना रहा है। महत्त्वपूर्ण सोच को परावर्तक और स्वतंत्र सोच में संलग्न करने की क्षमता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण सोच का मतलब तर्कसंगत निर्णय करना है जो तर्कसंगत और अच्छी तरह से सोचना है। यह सोचने का एक तरीका है जिसमें आप सभी तर्कों और निष्कर्षों को स्वीकार नहीं करते हैं, बल्कि इनके तर्कों और निष्कर्षों पर सवाल उठाते हुए रवैया को अपनाते हैं। यह देखने की आवश्यकता है कि कोई विशिष्ट

तर्क या निष्कर्ष का समर्थन करने के लिए क्या साक्ष्य शामिल है। जो लोग गंभीर सोच का इस्तेमाल करते हैं, वे कहते हैं, 'आप यह कैसे जानते हैं? क्या यह निष्कर्ष सबूतों या साक्ष्यों पर आधारित है?' और 'क्या जानकारी के नए हिस्से दिए जाने पर वैकल्पिक संभावनाएँ हैं?' क्रांतिक सोच को स्पष्ट करना और तर्कसंगत रूप से सोचने की क्षमता है कि क्या करना है या क्या विश्वास करना है। इसमें चिंतनशील और स्वतंत्र सोच में संलग्न होने की क्षमता शामिल है। महत्वपूर्ण सोच कौशल वाले किसी को निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होना है :

1. विचारों के बीच तार्किक संबंधों को समझने।
2. तर्कों की पहचान, निर्माण और मूल्यांकन करने।
3. विसंगतियों और तर्कों में आम गलतियों का पता लगाने।
4. व्यवस्थित समस्याओं को हल करने।
5. विचारों की प्रासंगिकता और महत्व की पहचान।
6. अपने स्वयं के विश्वासों और मूल्यों के औचित्य पर विचार करने।

मुख्य विचार सूचना को जमा करने की बात नहीं है एक अच्छी याददाश्त के साथ एक व्यक्ति जो बहुत सारे तथ्यों को जानता है, असल में महत्त्वपूर्ण नहीं है। एक महत्त्वपूर्ण विचारक, जो जानता है, तथा परिणाम निकालने में सक्षम है, और वह जानता है कि समस्याओं का समाधान करने के लिए जानकारी का उपयोग कैसे करना है और खुद को सूचित करने के लिए प्रासंगिक स्रोतों की जानकारी प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण सोच को तर्कसंगत या अन्य लोगों के आलोचक होने के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। हालांकि भ्रामकताओं और बुरी कारणों को उजागर करने में मुख्य विचार कौशल का इस्तेमाल किया जा सकता है, महत्त्वपूर्ण विचार सहकारी तर्कों और रचनात्मक कार्यों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मुख्य विचार हमें ज्ञान प्राप्त करने, हमारे सिद्धांतों को बेहतर बनाने और तर्कों को मजबूत करने में सहायता कर सकती है। हम कार्यशील प्रक्रियाओं को बढ़ाने और सामाजिक संस्थानों में सुधार के लिए महत्वपूर्ण विचार का उपयोग कर सकते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि महत्त्वपूर्ण सोच रचनात्मकता को बाधित करती है क्योंकि तर्क और तर्कसंगतता के नियमों का पालन करने की आवश्यकता होती है, लेकिन रचनात्मकता के नियमों को तोड़ने की आवश्यकता हो सकती है, यह एक गलत धारणा है। गंभीर सोच ''आउट-द-द-बॉक्स'' सोचने के साथ काफी अनुकूल है, जो आम सहमति को चुनौती देने और कम लोकप्रिय दृष्टिकोणों का पीछा करते है। यदि कुछ भी, महत्त्वपूर्ण सोच रचनात्मकता का एक अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि हमें अपने रचनात्मक विचारों का मूल्यांकन और सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण सोच की आवश्यकता है।

8.5.1 विचार कौशल का महत्त्व (The importance of Critical

Thinking)

महत्त्वपूर्ण सोच एक डोमेन-सामान्य सोच कौशल है। स्पष्ट रूप से और तर्कसंगत रूप से सोचने की क्षमता महत्त्वपूर्ण है जो हम करना चाहते हैं। यदि आप शिक्षा, अनुसंधान, वित्त, प्रबंधन या कानूनी व्यवसाय में काम करते हैं, तो महत्त्वपूर्ण सोच जाहिर ही महत्त्वपूर्ण है। लेकिन महत्त्वपूर्ण सोच कौशल किसी विशेष विषय क्षेत्र तक सीमित नहीं है। अच्छी तरह से सोचने और समस्याओं को हल करने में सक्षम होने के लिए व्यवसिथत रूप से किसी भी काम में दक्ष होना होगा।

नए ज्ञान अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण सोच महत्त्वपूर्ण है वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था सूचना और प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित है किसी को जल्दी से और प्रभावी ढंग से परिवर्तन से निपटने में सक्षम होना चाहिए। नई अर्थव्यवस्था, लचीली बौद्धिक कौशल पर बढ़ती मांग और समस्याओं को सुलझाने में जानकारी का विश्लेषण करने और ज्ञान के विभिन्न स्त्रोतों को एकीकृत करने की क्षमता में वृद्धि करती है। अच्छी आलोचनात्मक सोच ऐसे सोच कौशल को बढ़ावा देती है, और तेजी से बदलते कार्यस्थल में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

महत्त्वपूर्ण सोच भाषा और प्रस्तुति कौशल को बढ़ाती है स्पष्ट रूप से और व्यवस्थित तरीके से सोचकर हम अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में सुधार कर सकते हैं। ग्रंथों की तार्किक संरचना का विश्लेषण करने के लिए, महत्त्वपूर्ण सोच ने समझ क्षमताओं में भी सुधार किया है। महत्त्वपूर्ण सोच रचनात्मकता को बढ़ावा देती है किसी समस्या के रचनात्मक समाधान के साथ प्रस्तुति के लिए न केवल नए विचारों को शामिल करना है। नए विचारों को उत्पन्न करना उपयोगी और काम के लिए प्रासंगिक हैं महत्त्वपूर्ण विचारों को नए विचारों के मूल्यांकन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाना होता है, सर्वश्रेष्ठ लोगों को चुनना और यदि आवश्यक हो तो उन्हें संशोधित करना आत्म-प्रतिबिंब के लिए महत्त्वपूर्ण सोच है। एक सार्थक जीवन जीने के लिए और हमारे जीवन को तदनुसार ढालने के लिए, हमें अपने मूल्यों और निर्णयों को सही ठहराने और प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है।

क्रांतिक सोच स्वयं-मूल्यांकन की इस प्रक्रिया के लिए उपकरण प्रस्तुत करती है। अच्छी आलोचनात्मक सोच विज्ञान और लोकतंत्र की नींव है। वैज्ञानिक प्रयोग और सिद्धांतिक पुष्टि में कारण बहुत सारी महत्त्वपूर्ण उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। एक उदार लोकतंत्र की उचित कार्यवाही के लिए नागरिकों की आवश्यकता होती है जो सामाजिक मुद्दों के बारे में समीक्षकों को उचित शासन के बारे में अपने फैसलों को सुरक्षित करने और पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिए सोच सकते हैं।

8.5.2 पाँच महत्त्वपूर्ण विचार कौशल (Five Critical Thinking Skills)

8.5.2.1 विश्लेषणात्मक (Analitical)

महत्त्वपूर्ण सोच का एक हिस्सा सावधानीपूर्वक कुछ जांच करने की क्षमता है, चाहे वह एक समस्या है, डेटा का एक सेट या पाठ है विश्लेषणात्मक कौशल वाले लोग जानकारी की जांच कर सकते हैं, और फिर समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब है, और यह क्या दर्शाता है।

8.5.2.2 संचार (Communication)

अक्सर, आपको अपने निष्कर्षों को अपने नियोक्ता या सहयोगियों के एक समूह के साथ साझा करना होगा। आपको अपने विचारों को साझा करने के लिए दूसरों के साथ स्पष्ट रूप से संवाद करने में सक्षम होना चाहिए। आपको समूह के महत्त्वपूर्ण विचारों में शामिल होना भी पड़ सकता है इस मामले में, आपको जटिल समस्याओं के समाधान के बारे में पता लगाने के लिए दूसरों के साथ काम करना और प्रभावी ढंग से संवाद करना होगा।

8.5.2.3 रचनात्मकता (Creativity)

गंभीर सोच में अक्सर कुछ रचनात्मकता शामिल होती है। आप जिस सूचना को देख रहे हैं या समाधान के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश कर है, जिसे किसी ने पहले सोचा नहीं है यह सब एक रचनात्मक सोच है।

8.5.2.4 खुले विचारों वाला (Open-Minded)

गंभीर रूप से सोचने के लिए आपको किसी भी धारणा या फैसले को अलग करने और केवल आपके द्वारा दी जाने वाली जानकारी का विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए। आपका पूर्वाग्रह के बिना विचारों का मूल्यांकन करना, उद्देश्य होना चाहिए।

8.5.2.5 समस्या को सुलझाना (Problem Solving)

समस्या हल करने का एक अन्य महत्त्वपूर्ण साधन कौशल है जिसमें एक समस्या का विश्लेषण करना, समाधान निकालना, योजना का आकलन करना और उसके बाद मूल्यांकन करना शामिल है। आखिरकार, नियोक्ता केवल ऐसे कर्मचारी नहीं चाहते हैं जो सूचना के बारे में गंभीर रूप से सोच सकते हैं। बल्कि प्रभावी समाधान के साथ प्रस्तुत होने में उन्हें सक्षम होना चाहिए।

8.6 सारांश (Summary)

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि किसी भी विद्यार्थी के लिए नोट्स बनाना कितना जरूरी है और

नोट्स बनाने के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना जरूरी है। नोट्स लेने के अपने विभिन्न तरीके होते हैं और हर छात्र के लिए एक ही तरीका सही हो ये जरूरी नहीं है। नोट्स लेने के लिए हर छात्र अपनी योग्यता और समझ के अनुसार अपना एक विधि विकसित कर सकता है और वो उस विधि को अपनी विधि का नाम दे सकता है।

8.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. नोट्स लेने के विभिन्न तरीके से आप क्या समझते हैं? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What do you understand by the process of notes taking? Explain your thoughts with proper examples.

2. नोट लेने की विधि कैसे विकसित होगी? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   How will the method of taking notes develop ? Make clear your thoughts with a proper example.

3. नोट लेने और नोट बनाने के बीच क्या अंतर है उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What is the difference between taking notes and making notes ? Make clear your thoughts with a proper example.

4. नोट्स लेने के क्या गुण हैं? उपयुक्त उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें।

   What are the advantages of notes taking. Justify your answer with suitable examples.

5. नोट्स पैटर्न से आप क्या समझते हैं? नोट्स पैटर्न के गुण और अवगुण की व्याख्या करें।

   What do you understand by “Pattern Notes”? Explain its advantages and disadvantages.

6. विचार कौशल क्या है? इसके महत्व को उदाहरण सहित समझाए।

   What is Critical Thinking ? Explain its importance with proper examples.

8.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- Medium of education (The selected works of Gandh-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publ.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.
- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and world peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.) Krishnamurti.
- Foundation.
- National curriculum frameword – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- RTE Act, 2009.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●

इकाई 9: लेखन के विभिन्न प्रयोजन
Unit 9: Writing for various purpose

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

9.0 उद्देश्य (Objective)

9.1 प्रस्तावना (Introduction)

9.2 रिपोर्ट लेखन क्या है? (What is report writing ?)

9.3 रिपोर्ट लिखने का नमूना (Sample Reports)

9.4 अनुच्छेद लेखन क्या है? (What is Paragraph Writing ?)

9.5 सारांश (Summary)

9.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

9.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

9.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया से अवगत होंगे।
- प्रभावी पढ़ने का निर्देशन को समझेंगे।
- पढ़ने सीखने की नीतियाँ जानेंगे।
- स्कैनिंग और स्किमिंग की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- नोट लेने की विधि विकसित करेंगे।
- प्रभावी नोट लेने के महत्त्वपूर्ण लाभ को जानेंगे।
- नोट लेने और नोट बनाने के अंतर से अवगत होंगे।

उपर्युक्त का अध्ययन ही इस पाठ का उद्देश्य है।

9.1 परिचय (Introduction)

लेखन अपनी विभिन्न प्रस्तुति के लिए अलग-अलग प्रकार से लेख का इस्तेमाल करते हैं और उन्हीं से उनकी पहचान निर्भर करती है। जब कोई अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करता है, तो वे आमतौर से स्वयं के विचारों को व्यक्त करने के लिए ऐसा करते हैं, वे अपने पाठक को ध्यान में रखकर अपनी लेखनी प्रस्तुत करते हैं। यह पाठक को प्रस्तुत किये गये लेख की तरफ ध्यान आकर्षण बनाये रखने के लिए भी होता है जिससे साहित्यिक काम में रूचि बनाये रखी जाये।

9.2 रिपोर्ट लेखन क्या है? (What is report writing ?)

रिपोर्ट या खाता किसी सूचनात्मक काम (आमतौर पर लिखने, भाषण, टेलीविजन या फिल्म) के बारे में जानकारी देने या किसी व्यापक रूप से उसकी प्रस्तुति के रूप में प्रस्तुत कुछ घटनाओं को बताने के विशिष्ट उद्देश्य रिपोर्ट लेखन किया जाता है।

9.2.1 एक रिपोर्ट को कैसे लिखा जाना चाहिए ? (A report should be written ?)

कोई भी लेखक अपनी रिपोर्ट उसके द्वारा उपयोग किए जाने वाले अनुसंधान विधियों पर आधारित करते हुए तैयार करता है। वह लेखक अपने बनाये गये रिकॉर्ड को निबंधों के रूप में प्रस्तुत करते हैं, रिपोर्ट शीर्षकों और उप-शीर्षकों वाले क्रम में लिखते हैं और फिर उसी रिपोर्ट की प्रस्तुति को अलग तरह से बनाते हैं। यही प्रस्तुती ही उस लेखक को दुसरे लेखक से आमतौर पर अलग बना देता है। किसी भी रिपोर्ट को उसके संभावित घटकों के क्रम में प्रस्तुत किया जाता है और फिर वो उसी रूप में दिखाई देता है। सभी लेखक हर खण्ड की जांच बारीकी से कर लेते हैं, इनमें किसी भी प्रकार की त्रुटि से अपने लेख को बचाते हैं।

9.2.2 आप एक रिपोर्ट कैसे लिख सकते हैं? (How can you write a report ?)

किसी भी रिपोर्ट को लिखने के समय अपना परिचय अवश्य लिखें क्योंकि वही आपकी पहचान बन जाता है और निम्न बातों को रिपोर्ट प्रस्तुति में ध्यान रखना जरूरी है-

- अपने रिपोर्ट के मूल ढाचे को पैराग्राफ के रूप में लिखें, और उसमें अपनी मूल बात और विचार को प्रस्तुत करे जो आपकी रिपोर्ट को मजबूती दे और उसका समर्थन करे।

- अपने विषय पर पूरी तरह से सही जानकारी और उसका सही प्रस्तुतीकरण करना।
- अपने लेख का सही निष्कर्ष अवश्य लिखें
- अपने प्रस्तुतीकरण को हमेशा सही सूत्रों का हवाला दे और उसको सही रूप में प्रस्तुत करे।
- अपनी रिपोर्ट को प्रारूपित करें।

9.2.3 लेखन के कारण (Reason for Report Writing)

1. मानव इतिहास की संगृहित करना, उसकी व्याख्या और ''आधिकारिक'' सिद्धांतों के प्रभाव के साथ संबंध स्थापित करना और उनकी उपलब्धियों को प्रस्तुत करना। इसे आमतौर पर ''क्रोनिकलिंग (तारीखवार)'' कहा जाता है।
2. मानव अनुभव के साहित्य और संस्मरणों को लिखना, जो व्यक्ति या व्यापक मानव अनुभव के एक रूपक परिप्रेक्ष्य को बनाने में भावनाओं, कथा और दुनिया को समझने के लिए कार्य करता है।
3. शिक्षण, प्रश्नों का उत्तर देना या किसी को मानव समाज में मामलों का संचालन करने के ''सही'' तरीके में शामिल करना।
4. एक विशिष्ट व्यक्ति के कृत्यों, कारनामों और चरित्र का लेखा जोखा करना। इसे ''जीवनी'' कहा जाता है।
5. वर्तमान घटनाओं के खाते और व्याख्या प्रदान करना। इसे ''समाचार'' या ''पत्रकारिता'' कहा जाता है।
6. एक दर्शकों को समझाते हुए या समाज में कथित गलत तरीके से सुधार को प्रभावित करना। इसे कभी-कभी ''विवादास्पद'' कहा जाता है।
7. किसी दिए गए अकादमिक क्षेत्र में नए निष्कर्षों की रिपोर्ट करना। ऐसी रिपोर्ट अक्सर ''अकादमिक'' या ''वैज्ञानिक'' पत्रिकाओं नामक रिपॉजिटरी में संपादित और संहिताबद्ध होती है।
8. रहने के लिए एक विशेष दृष्टिकोण या प्रतिमान बढ़ रहा है मैं इसे ''वैचारिक लेखन'' कह रहा हूँ या, क्रूर रूप से ''दार्शनिक'' या ''सोकॉक्टिक'' लेखन।
9. ज्ञान को बनाए रखना मौखिक रूप से या लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसे ''नोट लेने'' कहा जाता है।
10. हानिकर लेखन में इसे ''साहित्यिक प्रशंसा वर्ग में उदासीन गणित के छात्र के लिए अंतिम मिनट का होमवर्क'' कहता हूँ।

9.3 रिपोर्ट लिखने का नमूना (Sample Reports)

रिपोर्ट लिखने के नमूने निम्नलिखित रूप से होगा।

9.3.1 विषय का चयन करना (Selecting Topic)

a. **असाइनमेंट को समझें। यदि आपका शिक्षक, प्रोफेसर, या बॉस ने आपकी रिपोर्ट के लिए दिशानिर्देश दिए हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपने उन्हें ध्यान से पढ़ा।** (Understand the Assignment. If your teacher, professor or boss give your guidelines for your report, make sure you read them)

आप से यदि कोई पूछे कि काम क्या है? क्या आप अपने पाठक को किसी भी एक विषय के बारे में सूचित करना चाहते हैं? आम तौर पर, यदि आप प्राथमिक, मध्य या हाईस्कूल वर्ग के लिए एक रिपोर्ट लिख रहे हैं, तो आपको अपनी राय रखने के बिना एक विषय पेश करने को कहा जाएगा। अन्य कार्य आपसे अपने पाठक को अपने विषय को समझने या विषय का विश्लेषण करने के एक निश्चित तरीके से मनाने के लिए कह सकते हैं। अपने शिक्षक से जितनी जल्दी हो सके किसी भी प्रश्न के बारे में पूछें, ध्यान रखें कि यदि आपका उद्देश्य केवल आपके दर्शकों को सूचित करने के लिए है, तो आपको अपनी राय अपनी रिपोर्ट में नहीं डालनी चाहिए या कोई प्रेरक तत्व जोड़ना चाहिए।

b. **एक अच्छा विषय चुनें जिसे आप पसंद करते हैं** (Choose a Good Topic that you Love)

किसी विषय के बारे में भावुक होना, आपको अपना सर्वोत्तम काम संभव करने के लिए प्रेरित करेगा बेशक कभी-कभी आपके पास अपना विषय चुनने का विकल्प नहीं होगा। यदि यह मामला है, तो सौंपे गए विषय के बारे में कुछ ढूंढने की कोशिश करें जो आपके बारे में भावुक हो सकते हैं। अपने शिक्षक द्वारा हमेशा अपने विचारों को सुनिश्चित करने के लिए सुनिश्चित करें कि यह ठीक है कि आप इस तरह से इस रिपोर्ट से संपर्क करें। यदि आपका काम अमेरिका में 1960 के दशक की किसी खास घटना की रिपोर्ट देना है, और आपको इतिहास पसंद नहीं है, लेकिन आप संगीत की तरह करते हैं, तो अपनी रिपोर्ट जिस तरह से 1960 के दशक में संगीत के दौरान हुई थी, उस पर बनी हुई है। पर लेकिन विषय के आधार पर अन्य बातों के बारे में बहुत सारे विवरण शामिल करना सुनिश्चित करें।

c. **मूल विषय चुनें** (Pick an Original Topic)

यदि आप अपने सहपाठियों को एक रिपोर्ट दे रहे हैं, तो मूल और आकर्षक विषय चुनने की

कोशिश करें। यदि आप उस दिन डिजनीलैंड पर एक रिपोर्ट देने वाले तीसरे व्यक्ति हैं, तो संभावना है कि आप शायद आपके सहपाठियों का ध्यान नहीं देंगे। पुनरावृत्ति से बचने के लिए, अपने शिक्षक से पूछें कि कौन से विषय पहले से ही चुने गए हैं। यदि आप चाहते हैं कि विषय चुना गया है, तो इसे प्रस्तुत करने के लिए एक अलग कोण ढूंढने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए, यदि आप डिजनीलैंड पर अपनी रिपोर्ट देना चाहते हैं, लेकिन किसी ने पहले ही उस विषय को चुना है, तो आप अपनी रिपोर्ट के एक विशिष्ट अनुभाग पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। ''एडवेंचरलैंड की तरह डिजनीलैंड'' आप इस बात पर चर्चा कर सकते हैं कि इसके सृजन को क्या प्रेरित किया गया है? उस अनुभाग में आप पाए गए विभिन्न सवारी और हाल ही में एडवेंचरलैंड के साथ हुए किसी भी बड़े बदलाव के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

d. ध्यान रखें कि आप अपना विषय बदल सकते हैं (Keep in Mind that you can change your Topic)

यदि आप किसी विषय पर शोध करना शुरू करते हैं जिसे आपने चुना है और पता है कि आपको विषय पर कोई जानकारी नहीं मिल रही है या आपका विषय बहुत व्यापक है, तो आप हमेशा अपना विषय बदल सकते हैं, जब तक कि आप अपना प्रोजेक्ट दिन शुरू नहीं कर रहे हैं इसकी वजह से पहले यदि आपको लगता है कि आपका विषय बहुत व्यापक है, तो उस पर ध्यान केंद्रित करने लिए विषय का एक विशिष्ट भाग लेने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए, अगर आप विश्व मेलों पर अपनी रिपोर्ट करना चाहते हैं, लेकिन एहसास हुआ कि उनके बारे में बात करने के लिए बहुत सारे लोग हैं और वे सभी पूरी तरह से चर्चा करने के लिए अलग-अलग हैं, एक विशिष्ट विश्व मेले का चयन करें, जैसे पनामा-प्रशांत अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।

9.4 अनुच्छेद लेखन क्या है? (What is paragraph writing ?)

एक पैराग्राफ लेखन का एक संक्षिप्त टुकड़ा है जो लगभग सात से दस वाक्य लंबा है इसमें एक विषय वाक्य और सहायक वाक्य हैं जो सभी विषय वाक्य के निकट से संबंधित हैं। पैराग्राफ फॉर्म में इसकी समग्र संरचना को संदर्भित किया जाता है, जो कि एक ही विषय पर ध्यान देने वाले वाक्यों का एक समूह है।

9.4.1 पैराग्राफ लेखन (Writing Paragraphs)

लिखित रूप में, छात्र अक्षर सीखने से शुरू करते हैं, फिर शब्द, और अंत में वाक्य। समय के साथ, छात्रों को ये वाक्यों को लेकर और एक सामान्य विषय के आसपास उन्हें व्यवस्थित करके पैराग्राफ लिखना

सीखना चाहिए। अनुच्छेद कैसे लिखना सीखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि इसके लिए आवश्यक जानकारी और संक्रमणकालीन शब्दों का उपयोग करने के साथ-साथ एक मजबूत समापन वाक्य को खोजने के साथ-साथ एक महान विषय वाक्य को कैसे लिखना आवश्यक है। कल्पना में, पैराग्राफ लिखना समझने का अर्थ है कि कौन से विचार एक साथ होते हैं और जहाँ नया पैराग्राफ शुरू होनी चाहिए।

विद्यार्थियों को अनुच्छेद लिखने और विषय अनुच्छेदों पर मुफ्त लेखन संसाधनों और वर्णनात्मक, अनावरण जैसे विभिन्न प्रकार के अनुच्छेद लिखने के कौशल को सुधारने में सीखने में सहायता करने के लिए बहुत सारे संसाधन मिलेंगे और कथा लेख आपके छात्रों के मार्गदर्शन में आपकी मदद करेंगे और गतिविधियों को प्रिंट करने योग्य कार्यपत्रकों और क्विज, वीडियो सबक और इंटरैक्टिव गेम का उपयोग करके उन्हें अपने कौशल का अभ्यास करने की अनुमति प्रदान करता है। पैराग्राफ लिखने के तरीके के बारे में और निर्देश के लिए, आठ स्तर के लेखन पाठ्यक्रम सभी स्तरों के लिए उपलब्ध हैं।

9.4.2 पैराग्राफ लिखने का स्वरूप (Writing formate of Paragraphs)

निबंध के मूल प्रस्तुति में, इस बिंदु तक सही तैयारी के फलस्वरूप आती है। आपके द्वारा चुने गए विषय को अब समझाया जाय, वर्णित किया जाए या तर्क दिया जाए। प्रत्येक सोच जो आपने अपने आरेख या रूपरेखा में लिखी थी, वह मूल प्रस्तुति पैराग्राफ का ही एक अंग होगा। यदि आपके पास तीन या चार मुख्य विचार थे, तो आपके पास तीन या चार मूल प्रस्तुति पैराग्राफ होंगे।

9.4.3 प्रत्येक मूल प्रस्तुति के पैराग्राफ में एक समान मूल संरचना होगी ()

1. लेखक अपने मुख्य विचारों में से एक वाक्य लिखने से शुरू करें। यदि आपका मुख्य विचार मूल बिंदु पर केंद्रित करता है तो वो पाठक के समझ को मिलाता है और उसकी जिज्ञासा को कम करता है। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि प्रथम प्रस्तुति का सहज और सरल होना बहुत जरूरी है।
2. आगे, उस मुख्य विचार के लिए अपने प्रत्येक सहायक बिंदुओं को लिखें, लेकिन प्रत्येक बिंदु के बीच चार या पाँच लाइनें छोड़ें।
3. प्रत्येक बिंदु के नीचे अंतरिक्ष में, उस बिंदु के लिए कुछ विस्तार लिखें। विस्तार अधिक विवरण या स्पष्टीकरण या चर्चा हो सकता है सहायक बिंदु यात्रियों को ड्राइविंग के बजाय सार्वजनिक परिवहन लेने की लागत बचत की सराहना करते हैं। विस्तार ड्राइविंग कम समय का मतलब कम रखरखाव खर्च है, जैसे तेल परिवर्तन। बेशक, कम ड्राइविंग समय का मतलब गैसोलीन पर बचत भी है। कई मामलों में, यह बचत राशि सार्वजनिक परिवहन की सवारी करने के लिए अधिक है।
4. यदि आप चाहें, तो प्रत्येक पैराग्राफ के लिए एक सारांश वाक्य शामिल करें। यह आम तौर पर जरूरी नहीं है, हालांकि, इस तरह के वाक्यों में धूमिल होने की प्रवृत्ति होती है, इसलिए उनका

उपयोग करने के बारे में सावधान रहें। एक बार जब आप अपने प्रत्येक मूल प्रस्तुति को पैराग्राफ में लिखते हैं।

9.4.4 पैराग्राफ कैसे लिखें? (How to Write a Paragraph)

पैराग्राफ लिखने का अभ्यास अच्छा लेखन की प्रस्तुति के लिए आवश्यक है। पैराग्राफ पाठ की बड़ी मात्रा को तोड़ने में मदद करते हैं और पाठकों को पचाने के लिए सामग्री को आसान बनाता है। वे एक मुख्य विचार या लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करके अपने तर्क के माध्यम से पाठक को निर्देशित करते हैं हालांकि, एक अच्छी तरह से संरचित पैराग्राफ लिखना सीखना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। नीचे दिए गए दिशानिर्देशों को पढ़ें और अपने पैराग्राफ को कौशल से अच्छे से लिखना सीखें।

9.4.5 अपने पैराग्राफ की योजना बनाए तय करें कि पैराग्राफ का मुख्य विषय क्या होगा (Decide what the main topic of the paragraph is going to be)

अपने पैराग्राफ लिखना शुरू करने से पहले, आपको इस बारे में एक स्पष्ट अनुमान होना चाहिए कि पैराग्राफ में क्या होगा। इसका विशेष कारण यह है कि पैराग्राफ कई वाक्यों का एक संग्रह है जो एक केंद्रीय विषय से संबंधित हैं। मुख्य विषय पर आधारित इसका जब तक एक निश्चित विचार न हो तब तक पैराग्राफ को लिखना या प्रस्तुत करना उसके प्रस्तुतीकरण में कमी को दर्शायेगा।

9.4.6 मुझे क्या संकेत दिया गया है? (What is the prompt I have been given?)

यदि आप कोई पैराग्राफ लिख रहे हैं और उसमें एक खास प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुती दे रहे हैं या किसी विशेष संकेत के उत्तर में कुछ प्रस्तुत कर रहे है तो उसको स्पष्ट करना अनिवार्य होगा। जैसे ''आपने दान करने का फैसला किया और आप दान देने जा रहे हैं, ''आप कौन-सी वस्तु दान के लिए चुनते हैं और क्यों ये निर्णय आपका अपना होगा''। दूसरा उदाहरण इस प्रकार होगा कि ''सप्ताह के अपने पसंदीदा दिन का वर्णन करें,'' आपको उस शीघ्रता से ध्यान से सोचने की आवश्यकता होगी और सुनिश्चित करें कि आप सीधे विषय को छोड़ने के बजाय इसे सीधे संबोधित कर रहे हैं।

9.4.7 मुख्य विचार या मुद्दों जो मुझे पता करने की आवश्यकता है? (What are the main ideas or issues that I need to address?)

उस विषय के बारे में सोचें जिसे आपसे पूछा जा रहा है या आपने इसके बारे में लिखने का फैसला

किया है और इस पर विचार करें उस विषय से संबंधित सबसे प्रासंगिक विचार या समस्याएँ क्या हैं पैराग्राफ आमतौर पर अपेक्षाकृत कम होने के नाते, यह महत्वपूर्ण है कि आप विषय को छोड़ने के बिना, सभी मुख्य विचारों पर केन्द्रित रहने का प्रयास करें।

9.4.8 मैं किसके लिए लिख रहा हूँ (Who am I writing for ?)

इस पैराग्राफ या पेपर की इच्छित पाठक के बारे में सोचें। उनका इस विषय में पूर्व ज्ञान क्या है? क्या वे दिए जा रहे विषय वस्तु, विषय से परिचित हैं, या इसके लिए कई व्याख्यात्मक वाक्यों की आवश्यकता होगी? यदि आपका पैराग्राफ एक बड़े निबंध का हिस्सा हैं, तो एक निबंध रूपरेखा लिखने से आपको प्रत्येक पैराग्राफ के प्रमुख विचारों या लक्ष्यों को परिभाषित करने में मदद मिल सकती है।

9.4.9 विषय से संबंधित जानकारी और विचार नीचे लिखें (Write down information and ideas relating to that topic)

एक बार जब आप अपने अनुच्छेद में क्या पता करना चाहते हैं तो आप अपने विचारों को नोटपैड या शब्द दस्तावेज पर लिखकर अपने विचारों को व्यवस्थित करना शुरू कर सकते हैं। अभी तक पूर्ण वाक्यों को लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, बस कुछ कीवर्ड और वाक्यांशों को संक्षेप में देखें। एक बार जब आप पेपर पर सब कुछ देख लेते हैं, तो आपको एक स्पष्ट विचार मिल सकता है कि आपके पैराग्राफ में कौन-से बिंदु आवश्यक हैं, और कौन-से बिंदु अति आवश्यक हैं।

1. इस बिंदु पर, आप महसूस कर सकते हैं कि आपके ज्ञान में अंतर है और आपके तर्क को समर्थन देने के लिए कुछ तथ्यों और आंकड़े देखना आवश्यक होगा।
2. इस शोध को अब करना एक अच्छा विचार है, इसलिए जब आपके लेखन के चरण की बात आती है, तो आपके पास सभी प्रासंगिक जानकारी आसानी से होनी चाहिए।

9.5 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के बाद हम ये जान पाए हैं कि पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया क्या है? ये कैसी होनी चाहिए और इसका हमारी लेखन को कैसे प्रभावित करता है। प्रभावी पढ़ने का एक प्रारूप होता है जिसके निर्देशन को हमने इस इकाई में समझकर उसको अपनी लेखनी में प्रयोग करने को सिखा है। हमने इस इकाई में पढ़ने सीखने की अलग-अलग नीतियाँ जानी अब उसी ज्ञान से अपनी पढ़ाई को सुनियोजित और सुसज्जित करने का दायित्व हमारे ऊपर है। हमने स्कैनिंग और स्किमिंग की जानकारी प्राप्त करके इसको नोट्स में कैसे विकसित करेंगे इस बात को भी जाना। अत: हम अंत में ये कह सकते हैं कि लेखन और अच्छे प्रभावी लेखन के सारे स्वरूप को हमने जाना और सीखा।

9.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What do you think of the process of reading and reading? Explain your thoughts with proper examples.

2. प्रभावी पढ़ने के कौन–कौन से निर्देशन है? अपने विचारों को उदाहरण के द्वारा समझेंगे।

   Which are the directives of effective reading ? Explain your thoughts with examples.

3. पढ़ने और सीखने की नीतियों को उदाहरण सहित समझाए।

   Explain the policies of reading and learning with examples.

4. स्कैनिंग और स्किमिंग क्या है? उदाहरण सहित समझाए।

   What is scanning and skimming ? Explain with examples.

5. नोट लेने की विधि कैसे विकसित होगी? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   (How will be developed the method of taking notes ? Make clear your thoughts with a proper example.)

6. नोट लेने और नोट बनाने के क्या अंतर है? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   (What is the difference between taking notes and making notes ? Make clear your thoughts with a proper example.

9.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- The medium of education (The selected works of Gandh-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publ.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.

- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and world peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.0 Krishnamurthi, Foundation.
- National curriculum frameword – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- Right to Education Act, 2009.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●

इकाई 10: लेखन की प्रक्रिया
Unit 10: Process of Writing

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

10.0 उद्देश्य (Objective)

10.1 प्रस्तावना (Introduction)

10.2 विचार क्या है? (What is Idea ?)

10.3 ड्राफ्ट क्या है? (What is Idea ?)

10.4 आवश्यकता दस्तावेज को अंतिम रूप देने के लिए चार कदम (Four steps to finalize a requirements document)

10.5 सारांश (Summary)

10.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

10.7 प्रस्तावित पाठ Suggested Readings)

10.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- विचार क्या है, इससे अवगत होंगे।
- प्रभावी पढ़ने का निर्देशन को समझेंगे।
- पढ़ने सीखने की नीतियाँ जानेंगे।
- स्कैनिंग और स्किमिंग की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- नोट लेने की विधि विकसित करेंगे।
- प्रभावी नोट लेने के महत्त्वपूर्ण लाभ को जानेंगे।

- नोट लेने और नोट बनाने के अंतर से अवगत होंगे ।

उपर्युक्त तथ्यों से अवगत कराना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

10.1 परिचय (Introduction)

विचारों को रखने के लिए व्यक्ति लेखन को आधार बनाता है। लेखक अपनी विभिन्न प्रस्तुति के लिए अलग-अलग प्रकार से लेखन करते हैं और उन्हीं से उनकी पहचान होती है। जब कोई अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करता है, तो वे आमतौर से स्वयं को व्यक्त करने के लिए ऐसा करते हैं, वे अपने पाठक को ध्यान में रखकर अपनी लेख प्रस्तुत करते हैं। यह पाठक को प्रस्तुत किये गये लेख की तरफ ध्यान आकर्षण बनाये रखने के लिए भी होता है जिससे साहित्यिक काम में रूचि बनाये रखी जाये।

10.2 विचार क्या है? (What is Idea ?)

अमूर्त, ठोस या दृश्य वाले विचारों को विकसित करने, विकसित करने और संचार करने की प्रक्रिया को ही आईडिया या विचार कहते हैं। इस प्रक्रिया में विचार के माध्यम से वाक्य निर्माण, अवधारणा को नवाचार करने, और सहज प्रक्रिया को विकसित करने में सोच का महत्त्व है। यह सोच यदि सकारात्मक होती है तब वो समाज निर्माण में मददगार साबित होता है। यही अवधारणा को वास्तविकता में लाने की प्रक्रिया को ही हम अपने विचारों को सही तरह से सामाजिक उन्नति में शामिल करते हैं।

हम अपने विचारों को सही रूप में प्रोत्साहित करके निम्न रूप से उनको सही मार्ग दर्शन दे सकते हैं।

1. निरीक्षण में संलग्न हों जो आपको विचारों को बढ़ने में मदद करता है।
2. शून्यता या खालीपन में महान विचार नहीं आते।
3. अपने सामान्य चक्र से बाहर निकलकर समाज में विचारों को खोजे।
4. यादृच्छिक रूप से वेब के माध्यम से लेख पढ़े और विचारों को प्राप्त करे।
5. सोचने का कुछ समय निकाले।
6. नियमित रूप से अभ्यास करें।

10.2.1 उत्तम विचारों को उत्पन्न करने के सात तरीके (Seven Ways

to Generate Great ideas)

एक अच्छा विचार और एक उत्तम विचार के बीच क्या अंतर पाया जाता है? हर व्यक्ति को अच्छे विचार हर समय आते हैं और लोगों को काम और दैनिक जीवन में मामूली समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं। उत्तम विचार थोड़ा कम दिखाई देते हैं और जिससे किसी भी समस्या को निष्पादित करने के लिए कम ही मदद हो पाती है। किसी भी व्यक्ति में उच्च विचार का होना जरूरी है। ऐसा न होने पर हमारी सोच पर प्रभाव पड़ता है। महान विचार पैदा करने की एक बड़ी चुनौती खुद को पारंपरिक, सांसारिक विचारों से मुक्त कर रही है जो आपके अधिकांश मस्तिष्क पर कब्जा कर लेती हैं। अपने दिमाग को खोलने और अपने महान विचार उत्पन्न करने को प्रोत्साहित करता है।

प्रथम : निरीक्षण सत्र में संलग्न हों (Engage in Observation Sessions)

खालीपन में महान विचार उत्पन्न नहीं होंगे। आपको नए और रचनात्मक विचारों को सोचने के लिए अपने दिमाग को हमेशा सक्रिय रखना चाहिए। विशिष्ट समय में प्रतिबद्ध रहने पर हम अलग-अलग तरीकों से सोचने में उत्तेजित रहते हैं। कई लोगों को चीजों का निरीक्षण करके समझने और सोचने में मदद मिलती है। सोच के लिए रोमांचक गतिविधि और व्यवहार के साथ पेश कर सकता है। कोई भीड़ शहरी क्षेत्र, मॉल या चिड़ियाघर जाकर भी चीजों को देखकर समझ कर अपनी सोच का विकास कर सकते हैं।

द्वितीय : अपने सामान्य मंडलियों के बाहर सामाजिकीकरण करें (Socialize outside Your Normal Circles)

एक ही दोस्त और सहकर्मियों के साथ घूमना आपके सोच को रटने जैसा बना सकता है। उन सभी को अलग-अलग सोशल वेबसाइट से जोड़कर लाभ उठाएं और कुछ रोमांचक बातचीत शुरू करें। नए लोग आपके सभी विचार सोच को और पुरानी कहानियों को नहीं जानते हैं, इसलिए आपको अपने मौजूदा आंतरिक एक ही सोच पर वापस जाने से बचना होगा। ताजा दृष्टिकोण नए सोच और संभवतः एक बिजली बोल्ट या दो सतह की सतह में मदद मिलेगी।

तृतीय : खूब किताब पढें (Read More Books)

विचार लाना आसान काम नहीं है। नए विचारों बनाने और महान विचारों को उत्तेजित करने के लिए हमको अन्य पुस्तकें पढ़नी होगी। लंबे समय तक कुछ नहीं पढ़ने से विचारों का आकाल आ जाता है। जब हम अपने दिनचर्या में व्यावसायिक किताबें जोड़ देते हैं और इनको पढ़ने में प्राथमिकता देते हैं, तो हमको

और जानने और सोचने का मौका मिलता है, को हमारे सोच को विस्तार करने में मदद करता है। कई बार इतिहास की किताबें भी पढ़ना जरूरी है जो हमारी जिज्ञासा को बढ़ाने में मदद करती हैं। इतिहास की कहानियों से हम वास्तव में अपने दैनिक दिनचर्या से बाहर निकलकर नए ज्ञान का और नए विचार को बढ़ावा देते हैं। यहाँ तक कि यदि आप उपन्यास भी पढ़े तो उससे भी आपकी सोच का विकास होगा। इसके माध्यम से हम अपने बहुत सारे विचारों को सोचने का समय भी मिलता है और उत्तेजना मिल जाती हैं।

चतुर्थ : यादृच्छिक रूप से वेब पर खोजें (Randomly Surf the Web)

हम सब इस बात से परिचित हैं कि हम क्या खोज रहे हैं, और हमको कहाँ क्या मिलेगा ? गूगल बहुत अच्छा माध्यम है, लेकिन नए विचारों को उत्पन्न करने का सबसे अच्छा तरीका अप्रत्याशित शिक्षा भी एक अच्छा माध्यम है। प्रत्येक सप्ताह एक घंटा लें और किसी भी वेबसाईट पर जाकर कुछ विषय-वस्तु खोजें। आपको जो चाहिए वो जरूर मिलेगा। जब विचारों का अनुभव बढ़ेगा तब आप अपने आपको भाग्यशाली महसूस करेंगे। जब आप किसी भी चीज को खोजेंगे तब आप अपने मस्तिष्क को थोड़ा-सा क्रियाशील बनाते हैं और यही एक प्रकार का अस्पष्ट संदर्भों को चुनने का प्रयास होता है।

पंचम : एक नियमित जर्नल रखें (Keep a Regular Journal)

विचारों, भावनाओं और आपके जीवन के इतिहास को रिकॉर्ड करने के लिए एक पत्रिका का होना आवश्यक है। यह विचारधारा आदतों की संरचना और विकास का एक शानदार तरीका भी है। यदि कोई व्यक्ति अपने विचारों को संजोकर रखना चाहता है तो उसको अपने विचारों को एक जर्नल में रखना चाहिए, यही उस व्यक्ति का अपना संग्रह होता है। यदि आप पहले से ही ऐसी आदत बनाकर रखते हैं, तो उसको एक नियमित प्रारूप देकर एक सुनियोजित तरीके से अपने संग्रह को रखें और निरंतर नए आयामों को अभ्यास के रूप में जोड़ें।

षष्ठ : ध्यान करें (Meditate)

जब आपका दिमाग हर रोज विचारों और चिंताओं के साथ भीड़ जाता है तब उसमें नए विचार उत्पन्न होते हैं और यही विचार विषय-वस्तु का रूप लेते हैं। विचारों को मन में आने के लिए एकाग्र मन और जगह चाहिए जहाँ आपको शांत माहौल मिलना चाहिए। ध्यान आपको दैनिक जीवन और तनाव से भरे दिमाग को दूर करने में मदद करेगा। फिर आप चुपचाप अपने भविष्य पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं-या विश्व के मुद्दों को हल कर सकते हैं। हर हफ्ते दो घंटे लंबे सत्रों के लिए प्रतिबद्ध रहें और जल्द ही आपको नए विचार आएंगे जिसके लिए आपको नियमित समय देना होगा।

सप्तम : संरचित व्यायाम का प्रयोग करें (Use Structured Exercise)

संरचना रचनात्मकता पैदा करता है। सरल अभ्यास आपके मस्तिष्क को महान विचारों को उत्पनन करने के लिए एक केंद्रित तरीके से काम कर सकते हैं। मेरा पसंदीदा लेखक और बैलोर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. ब्लेन मैककॉमिक से आता है। एक साथी के साथ, किसी विशिष्ट विषय या समस्या पर 42 विचारों के साथ आने के लिए दस मिनट (समय) लें। आप केवल 30 या 35 के बारे में सोच सकते हैं लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता। आप पाएंगे कि सूची में कम से कम दो या तीन रत्न हैं।

इन सभी विधियों के लिए समय और ऊर्जा की प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, लेकिन यह महान विचारों की कुंजी है। आपको अपने दिमाग को आपके लिए काम करने के लिए समय और स्थान देना होगा। यदि आप इन तरीकों में से प्रत्येक को आजमाते हैं, तो आप एक महान विचार या दो के साथ आने के लिए बाध्य हैं। सुनिश्चित करें कि आप उन्हें रिकॉर्ड करते हैं और जवाबदेही की योजना निर्धारित करते हैं। निष्पादन आप पर निर्भर है।

10.3 ड्राफ्ट क्या है? (What is Draft)

कोई भी लेखक अपनी लेखनी से पहली बार लेख का जो मसौदा तैयार करता है, उसको उसका पहला ड्राफ्ट या लेख कहाँ जाता है। पहला मसौदा एक कंकाल या फिर एक नींव की तरह होता है जो शुरुआती कदम माना जाता है। यह कोई पूरी तरह से तैयार या निर्णायक मसौदा नहीं है।

लेखन प्रक्रिया-प्रारूपण और संपादन। लेखन एक प्रक्रिया है जिसमें कई अलग-अलग कदम शामिल होते हैं :

प्रीराइटिंग, ड्राफ्टिंग, संशोधन, संपादन और प्रकाशन। आपके दस्तावेज के मसौदे को लिखने से पहले प्रीराइटिंग कुछ भी है जो आप करते हैं।

10.3.1 एक ड्राफ्ट लिखने के तीन चरणों (Three Stages of Writing a Draft)

व्यापक रूप से, लेखन प्रक्रिया में तीन मुख्य भाग होते हैं : **पूर्व-लेखन, रचना** और **निर्णायक (पोस्ट)-लेखन**। इन तीन भागों को आगे पाँच चरणों में विभाजित किया जा सकता है :

(1) योजना;

(2) इकट्ठा करना/व्यवस्थित करना;

(3) रचना/ड्राफ्टिंग;

(4) संशोधन/संपादन; तथा

(5) प्रूफ रीडिंग।

पहला ड्राफ्ट लिखें (Write the First Draft)

1. प्रत्येक निबंध या कागज तीन भागों से बना होता है :
   - परिचय
   - विषय वस्तु का स्वरूप
   - निष्कर्ष
2. परिचय लेख का पहला अनुच्छेद है। यह अक्सर आपके पेपर के मुख्य विचार के एक और विशिष्ट बयान के साथ विषय के बारे में एक सामान्य बयान के साथ शुरू होता है। परिचय का उद्देश्य है :
   - पाठ को यह बताएँ कि विषय क्या है ?
   - पाठक को अपने दृष्टिकोण के बारे में सूचित करें।
   - पाठक की जिज्ञासा को जागृत करें ताकि वह आपके विषय के बारे में पढ़ना चाहें।
3. पूरे कार्य का एक परिचय का पालन करता है। इसमें कई पैराग्राफ होते हैं जिनमें आप अपने विचारों को विस्तार से विकसित करते हैं।
   - प्रत्येक पैराग्राफ को एक मुख्य विचार पर सीमित करें। (प्रति अनुच्छेद एक से अधिक विचारों के बारे में बात करने की कोशिश न करें।)
   - अपने नोट कार्ड से विशिष्ठ उदाहरणों और उद्धरणों का उपयोग करके लगातार अपने अंक साबित करें।
   - पैराग्राफ से अनुच्छेद के विचारों का एक आसान प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए संक्रमण शब्दों का उपयोग करें।
4. निष्कर्ष कागज का अंतिम अनुच्छेद है।

   इसका उद्देश्य है

- विशिष्ट उदाहरणों को छोड़कर, अपने अंक सारांशित करें
- कागज के मुख्य विचार को पुनः स्थापित करें

10.4 आवश्यकता दस्तावेज को अंतिम रूप देने के लिए चार कदम (Four steps to finalize a requirements document)

जब कोई व्यवसाय विश्लेषक के रूप में अपनी लेखनी को शुरू करता है, तो हम जानते हैं कि अपनी इच्छाओं के अनुसार वह अपनी बात को रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि जानबूझकर कदम उठाने की उसको आवश्यकता होगी कि उसके हितधारकों को वास्तव में क्या चाहिए और वे उनको वही देना चाहता है और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार खरा उतरना चाहता है। आवश्यकतानुसार लेखकों और विश्लेषकों के रूप में, इस प्रक्रिया में अपनी बात को कितना प्रस्तुत करता है, वास्तव में वह आसान नहीं होता है और यही उस लेखक की समझदारी से अधिक स्वामित्व की परीक्षा होती है। हालॉकि, जब हितधारकों की आवश्यकताओं में खरीद नहीं होता है, तो कोई भी विकास चक्र में देर से परिवर्तन अनुरोधों और समाधान को उपयोग करने के लिए एक लंबी प्रक्रिया की उम्मीद कर सकते हैं।

प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में प्रतिक्रियात्मक रूप से प्रतिक्रिया प्राप्त करने और इस प्रक्रिया के हिस्से के रूप में सोशल मीडिया के अलग-अलग माध्यमों का सही ढंग से उपयोग करके, आपको अपने दस्तावेजों पर महत्त्वपूर्ण परिणाम देखने को मिलेगा और यह सुनिश्चित होगा कि आपके हितधारक अपनी प्रक्रियाओं में आगामी परिवर्तनों को गले लगाएँगे।

यहाँ एक त्वरित दृश्य मानचित्र है जिसका उपयोग आप किसी दस्तावेज़ पर भेजने पर विचार करने के लिए संचार के टुकड़ों को याद रखने के लिए कर सकते हैं जब आवश्यकता दस्तावेज को अंतिम रूप देने के लिए चार चरणों की बात आती है।

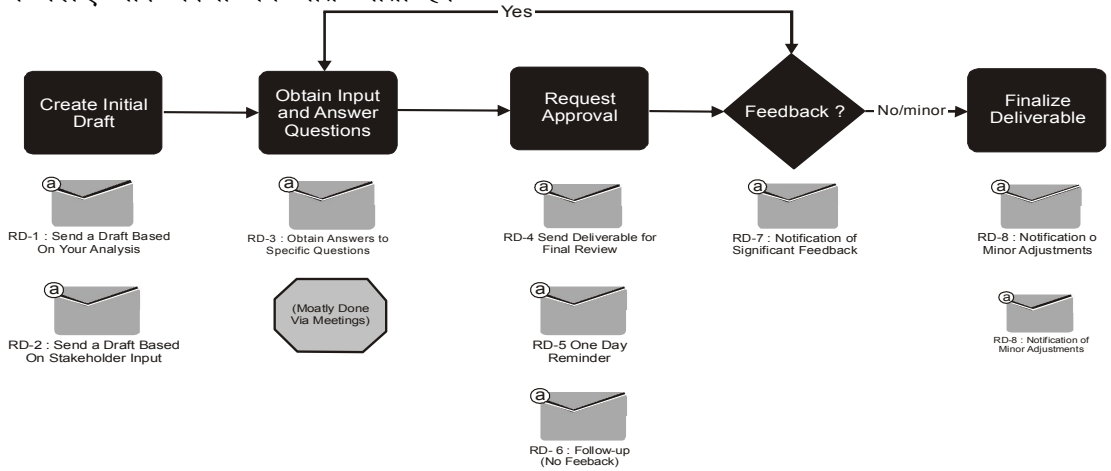

अब, आइए देखें कि हम आवश्यक दस्तावेज पर हमें आवश्यक प्राप्त सामग्री से निष्कर्ष कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

चरण 1 - एक प्रारंभिक ड्राफ्ट बनाएं (Create an Initial Draft)

पहला मसौदा तैयार करने के लिए, व्यवसाय विश्लेषक अपने उच्च स्तरीय इनपुट की तलाश करने के लिए स्वतंत्र शोध कर सकते हैं या किसी की मदद से भी प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी तरह से, पहला मसौदा अंतिम मसौदा नहीं होता है कभी भी क्योंकि उसमें और भी खोज की जरूरत होती है। फिर भी समीक्षा के लिए प्रारंभिक मसौदा भेजने के लिए समझदारी की जरूरत होती है, क्योंकि इससे यदि कोई शंका होती है तो उन प्रश्नों के उत्तर को पाने में मदद मिल सकती है। समय पर यदि आवश्यकता होती है तो उसके अनुसार प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है। समीक्षा के लिए प्रारंभिक मसौदा भेजते समय महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वास्तव में एक कामकाजी मसौदा है और वह हितधारक समीक्षा भी आवश्यक है। आपके पास विशिष्ट प्रश्नों पर प्रकाश डाला जाता है और अगले चरणों की पहचान करना हितधारक अपेक्षाओं को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है।

चरण 2 - समीक्षा प्राप्त कर प्रश्न के उत्तर दें (Obtain Input and Answer Questions)

एक बार पहला मसौदा पूरा हो जाने के बाद, आपको अतिरिक्त समीक्षा प्राप्त करने और प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की आवश्यकता होगी। अक्सर, आप चलने के लिए एक आवश्यकता आयोजित करेंगे। अवसर पर, ईमेल के माध्यम से प्रमुख प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना अधिक कुशल हो सकता है। इस मामले में, आपके पास विशिष्ट प्रश्नों के साथ एक ईमेल भेजें और अधिक पृष्ठभूमि जानकारी के लिए अपने प्राप्तानुसार मसौदा प्रति संलग्न करें।

चरण 3 - अंतिम समीक्षा के लिए एक प्राप्तानुसार भेजें (Send a Deliverable for Final Review)

एक बार आवश्यकता दस्तावेज की समीक्षा हो जाने के बाद और महत्वपूर्ण प्रश्न हल हो जाएंगे, आपके पास एक दस्तावेज़ होगा जो अंतिम समीक्षा और अनुमोदन के लिए तैयार होगा। ईमेल इस तरह के कार्य को प्रबंधित करने का एक शानदार तरीका है।

बस दस्तावेज़ को अपने ईमेल पर संलग्न करें, समझाएँ कि आपके हितधारकों से क्या अपेक्षा की जाती है, एक समय सीमा बताएँ जिसके द्वारा आपको उनकी प्रतिक्रिया या अनुमोदन की आवश्यकता है,

और भेजें।

चूँकि हितधारकों व्यस्त हैं, समय सीमा से पहली उन्हें याद दिलाने की योजना है। इस परियोजना के आगे-आगे बढ़ने में उनकी स्वीकृति कैसे आगे बढ़ने में मदद कर सकती है, इस बारे में विवरण सहित।

चरण 4 - वितरण योग्य को अंतिम रूप दें (Finalize Deliverable)

एक बार जब आप उपरोक्त चरणों में जाते हैं, कभी-कभी कई बार, आपके पास आपको अनुमोदित दस्तावेज़ होगा। यह संवाद करने के लिए एक कदम है (और जश्न मनाएँ) !

अंतिम दस्तावेज के बारे में जानने की आवश्यकता वाले किसी भी व्यक्ति को अंतिम वितरित करेन के लिए भेजें, जिसमें विनिर्देश के खिलाफ कार्यान्वयन और परीक्षण में शामिल हैं।

10.5 सारांश (Summary)

इस इकाई के अध्ययन के बाद हम ये जान पाए हैं कि पढ़ना और पढ़ने की प्रक्रिया क्या है? ये कैसी होनी चाहिए और ये हमारी लेखन को कैसे प्रभावित करता है। प्रभावी पढ़ने का एक प्रारूप होता है जिसके निर्देशन को हमने इस इकाई में समझकर उसको अपनी लेखनी में प्रयोग करने को सीखा है। हमने इस इकाई में पढ़ने सीखने की अलग-अलग नीतियाँ जानी अब उसी ज्ञान से अपनी पढ़ाई को सुनियोजित और सुसज्जित करने का दायित्व हमारे ऊपर है। हमने स्कैनिंग और स्किमिंग की जानकारी प्राप्त करके इसको नोट्स में कैसे विकसित करेंगे इस बात को भी जाना। अत: हम अंत में ये कह सकते हैं कि लेखन और अच्छे प्रभावी लेखन के सारे स्वरूप को हमने जाना और सीखा।

10.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. विचार क्या है? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What is idea? Explain your thoughts through proper examples.

2. उत्तम विचारों को उत्पन्न करने के कौन-कौन से तरीके हैं? उदाहरण सहित समझाएँ।

   What are the ways to generate great ideas ? Explain it with example.

3. ड्राफ्ट क्या है? उदाहरण सहित समझाए।

   What is Draft ? Explain with some examples.

4. स्कैनिंग और स्किमिंग क्या है, उदाहरण सहित समझाए।

Explain what is scanning and skimming with examples.

5. नोट लेने की विधि कैसे विकसित होगी? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   How will the method of taking notes develop ? Make clear your thoughts through a proper example.

6. नोट लेने और नोट बनाने के क्या अंतर है? उचित उदाहरण के द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट करें।

   What is the difference between taking notes and making notes ? Make clear your thoughts through a proper example.

10.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

- The medium of education (The selected works of Gandhi-Vol. 6), Navajeevan Publication.
- Democracy and Education (Ch-Thinking in Education) - John Dewey, Emereo Publication.
- Pedagogy of the Oppressed (Critical Pedagogy), Paulo Freire, Bloomsbury.
- A Brief History of Time - Stephen Hawking, Random House.
- Fall of a Sparrow - Salim Ali, Oxford.
- Education and World peace. In Social responsibility, (Krishnamurthi, J.) Krishnamurthi, Foundation.
- National curriculum framework – 2005. NCERT
- Civilization and progress. In Crisis in civilization and other essays. (Tagore, R.) Rupa & Co.
- Right to Education Act, 2009.
- Autobiography of a Yogi (Paramhansa Yogananda) Ananda and Crystal Clarity Publishers.

●●●